ISSN·2229-547X·VIDEHA

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯·𑓓𑓗𑓘·𑒧·𑒁𑓀𑒏·𑓑𑓕·𑒮𑒱𑒞𑒧𑓂𑒥𑒩·𑓒𑓐𑓒𑓓·(𑒫𑒩𑓂𑒭·𑓑𑓖·𑒧𑒰𑒮·𑓑𑓘𑓙·𑒁𑓀𑒏·𑓓𑓗𑓘)·

[𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯·(since·2000)·ISSN·2229-547X·VIDEHA·(since·2004)·www.videha.co.in·]



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯·𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲·𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨·𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢𑓁·𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯·𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯-·𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧·𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲·𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏·𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑓁·𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩·𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩·



(c)૨૦૦૦-·૨૦૨૩.·વિદેહ:·પ્રથમ·મૈથિલી·પાક્ષિક·ઈ-પત્રિકા·(since·2000)·ISSN·2229-547X·VIDEHA·(since·2004).·સમ્પાદક:·ગજેન્દ્૧·ઠાકુ૧।·Editor:·Gajendra·Thakur.

Videha·eJournal·(link·www.videha.co.in)·is·a·multidisciplinary·online·journal·dedicated·to·the·promotion·and·preservation·of·the·Maithili·language,·literature·and·culture.·It·is·a·platform·for·scholars,·researchers,·writers·and·poets·to·publish·their·works·and·share·their·knowledge·about·Maithili·language,·literature,·and·culture.·The·journal·is·published·online·to·promote·and·preserve·Maithili·language·and·culture.·The·journal·publishes·articles,·research·papers,·book·reviews,·and·poetry·in·Maithili·and·English·languages.·It·also·features·translations·of·literary·works·from·other·languages·into·Maithili.·It·is·a·peer-reviewed·journal,·which·means·that·articles·and·papers·are·reviewed·by·experts·in·the·field·before·they·are·accepted·for·publication.

Font/·Keyboard·Source:·https://fonts.google.com/·,·https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts·,·https://keyman.com/·

These·are·print-on-demand·books,·send·your·queries·to·editorial.staff.videha@gmail.com.·The·eBooks·of·some·of·these·are·a

Videha e-Journal: Issue No. 378 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ ***(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा)***

मानव आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-
यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय चाहम सभ गोटे केँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनावी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (मानव समकेँ)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करैत छैक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तेँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. - Robert Louis Stevenson

----

ૐ·દ્યૌ:··શાન્તિરન્તરિક્ષ·ગ્વં·ગ·શાન્તિ:

·:···:

અનુક્રમ

ઐ·અંકમે·અછિ:-

નાાાય઼ાા·યૌયની/·સર્વ઼શ્રી·ાાસવિ઼હાાી·દાસળી:·એક·વિ઼ષય઼·કિર્ત્તન·ળ્ઞા
તા/·સ્વ઼.·હિનિંદન·કાાત·ળીક·ગાા·ંગાૌની/·સવ·કૌત·છૈક·પ્રાાાા્

૨.૪.નિર્ાઠા·કાાા--શ્રગ્નિ·ક્ષિપ્યા·(ષ્પેપ-૨૭)

૨.૫.નન્દ·વિ઼ઠાસ·ાાય઼-ઘસવ઼હિની

૨.૬.પ્રાોદ·દ્ા·'ગોકુઠ'--હાાા·કિ·શ્રોકા?·(વીહૈન·કથા)

૨.૭.ાવીન્દ્ા·નાાાય઼ાા·ાિશ્ા-વદઠિ·ાહઠ·શ્રછિ·સાાકિછુ·(૩પન્ય઼ાસ)-
·યાાાવ઼ાહિક

૨.૮.કિશન·કાાીગા-
·વુદ્દક્કી·દાવીએ·યૂા·તૈં·હાાાા·પાછુએ·ઘૂા?·(હાસ્ય઼·કટાક્ષ)

૨.૯.શ્રાવિ઼ન્દ·ડાકુા--દ્ંદ્દટિય઼ા·વહુ·(ઠઘુકથા)

૩.પદ્ય઼·ખ્ાાડ

૩.૧.પવ઼ન·ાિશ્ા·'ગોનૌઠી'-ાિથિઠાક·સંસ્કિતિ·શ્રા·પાિવ઼ર્તનક·સ્વ઼ાૂપ

૩.૨.ાાળ·કિશોા·ાિશ્ા-ાાત્રિાૂાિ

३.३.श्राक्षीष·श्रनयिन्हा1-·२·ટા·ગળ૭

३.४.1ा्मानन्દ·મા‡ડ૭-·હમ·૩દા1વ઼ાદી·ે/·નદી/·ડોમિન



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्ति र्वश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ॐ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি ৰনস্পতয: শান্তির্ৰিশ্বে দেৰা: শান্তির্ব্ৰহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্ৰহ্মণসঁ প্ৰাৰ্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, ৰনস্পতিমে, ৰিশ্বমে, সভ দেৰতাগণমে আ ব্ৰহ্মমে শাংতি

ন্শ্বয।

ওঁ-ব্রহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যুলোকক বীচ, আপ:-জল, বিশ্বেদেৱা- সভ দেৱতা, ব্রহ্ম- সর্জক।

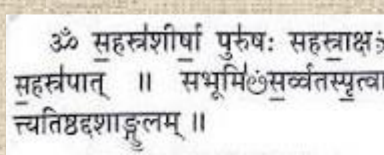
ॐ, स॒हस्रं॑शीर्षा॒ पुरुं॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रं॑पात्।

ওঁ, স↓হস্র↑শীর্ষা↓ পুৰু↑ষঃ। স↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ স↓হস্র↑পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিঁ↑ Ẇ বি↓শ্বতো↑ বৃ↓ত্বা। অত্য↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।



ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात् ॥ स भूमि॑ᳬ स॒र्व्वत॑स्पृ॒त्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गु॒लम् ॥

प॒द्भ्याग्ँ॒ शू॒द्रो अं॑जायत॥

প↓দ্ভ্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्रा॑त्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

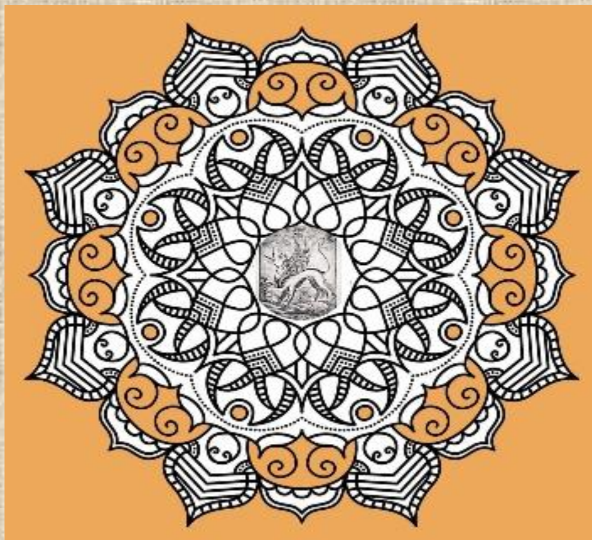
卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒧 Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



𑓑𑓑.𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒁𑓀𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨

𑓑𑓒.𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓗𑓗 𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र

गुणाढ्यक पैशाची भाषाक बृहत् कथाक क्षेमेन्द्रक कथा मंजरी वा सोमदेवक कथासरित्सागरक अनुवाद होएबाक कथा कथा कहबाक शैली सेहो भऽ सकैए मुदा ई अनुवादक कथाक प्रारम्भ नै कहैत अछि।
अनुवादक इतिहास बड्ड पुरान छै। कोनो प्राचीन भाषा जेना संस्कृत, अवेस्ता, ग्रीक आ लैटिनक कोनो कालखण्डक कृति जखन दुरूह होबऽ लागल तँ ओहिपर चाहे तँ भाष्य लिखबाक प्रयासक अनुभव भेल आ कतेक आर आगाँ ओकरा दोसर भाषामे अनुवाद कऽ बुझबाक प्रयासक अनुभव भेल। प्राचीन मौर्य साम्राज्यक सम्राट अशोकक पाथरपर कोलित शिलालेख सभ, कएकटा लिपि आ भाषामे, राज्यक आदेशकेँ विभिन्न प्रान्तमे प्रसारित केलक। भाष्य पहिने मूल भाषामे लिखल जाइत छल आ बादमे दोसर भाषामे लिखल जाए लागल।

मैथिलीसँ दोसर भाषा आ दोसर भाषासँ मैथिलीमे अनुवाद लेल सिद्धान्त: मैथिलीसँ सोझे दोसर भाषामे अनुवाद अखन धरि संस्कृत, बांग्ला, नेपाली, हिन्दी आ अंग्रेजी धरि सीमित अछि। तहिना ऐ पाँचू भाषाक सोझ अनुवाद मैथिलीमे होइत अछि। ऐ पाँच भाषाक अतिरिक्त मराठी, मलयालम आदि भाषासँ सेहो सोझ मैथिली अनुवाद भेल अछि मुदा से नगण्य अछि। मैथिलीमे अनुवाद आ मैथिलीसँ अन्य भाषामे अनुवाद ऐ पाँचू भाषाकेँ मध्यस्थ भाषाक रूपमे लऽ कऽ होइत अछि। अहू पाँच भाषामे हिन्दी, नेपाली आ अंग्रेजीक अतिरिक्त आन दू भाषाक मध्यस्थ भाषाक रूपमे प्रयोग सीमित अछि। अनुवादसँ कने भिन्न अछि रूपान्तरण, जेना कथाक नाट्य रूपान्तरण वा गद्यक पद्यमे पद्यक गद्यमे रूपान्तरण। ऐ मे मैथिलीसँ मैथिलीमे विधाक रूपान्तरण होइत अछि आ अनुवाद सिद्धान्तक ध्यान नै रहने रूपान्तरकार अर्थ आ भावक अनर्थ कऽ दैत अछि। मैथिलीमे आ मैथिलीसँ अनुवादमे तँ ई समस्या आर विकट अछि। उत्तम अनुवाद लेल किछु आवश्यक तत्व: शब्दश: अनुवाद करबा काल

ध्यान राखू जे कहबी आ सन्दर्भक मूल भाव आबि रहल अछि आकि नै। शब्द, वाक्य आ भाषाक गढ़नि अक्षुण्ण रहए से ध्यानमे राखू। मूल भाषाक शब्द सभ जँ प्राचीन अछि तँ अनूदित भाषाक शब्द सभकेँ सेहो पुरान आ खाँटी राखू। मूल आ अनूदित भाषाक व्याकरण आ शब्द भण्डारक वृहत् ज्ञान एतए आवश्यक भऽ जाइत अछि। मूल भाषामे मुँह कोचिया कऽ बाजल रामनाथ, उमेशक प्रति सम्बोधनकेँ रामनाथो, उमेशोक बदलामे रामनाथहुँ, उमेशहुँ कऽ अनुवाद कएल जाएब उचित हएत मुदा सामान्य परिस्थितिमे से उचित नै हएत। से शब्द, भाव, प्रारूपमे सेहो आ मूल कृतिक देश-कालक भाषामे सेहो समानता चाही। अनुवादककेँ मूल आ अनूदित कएल जाएबला भाषाक ज्ञान तँ हेबाके चाही संगमे दुनू भाषा क्षेत्र इतिहास, भूगोल, लोककथा, कहबी आ ग्राम्य-वन्य आ नगरक संस्कृतिक ज्ञान सेहो हेबाक चाही। ई मध्यस्थ भाषासँ अनुवाद करबा काल आर बेसी महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। ऐ परिस्थितिमे "दुनू भाषा क्षेत्रक इतिहास, भूगोल, लोककथा, कहबी आ ग्राम्य-वन्य आ नगरक संस्कृतिक ज्ञान" सँ तात्पर्य अनूदित आ मूल भाषा क्षेत्रसँ हएत मध्यस्थ भाषा क्षेत्रसँ नै। कखनो काल मूल भाषाक कोनो भाषासँ सम्बन्धित तत्व वा गएर भाषिक तत्व (सांस्कृतिक तत्व) क सही-सही उदाहरण अनूदित भाषामे नै भेटैत अछि आ तखन अनुवादक गपकेँ नमराबऽ लगैत छथि वा ओइ लेल एकटा सन्निकट शब्दावली (ओइ नै भेटल तत्वक) देबए लगैत छथि। ऐ परिस्थितिमे सन्निकट शब्दावली देबासँ नीक गपकेँ नमरा कऽ बुझाएब वा परिशिष्ट दऽ ओकरा स्पष्ट करब हएत। ऐ सँ मूल भाषासँ मध्यस्थ भाषाक माध्यमसँ कएल अनुवादमे होइबला साहित्यिक घाटाकेँ न्यून कएल जा सकत।

कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध), निबन्ध, स्कूल-कॉलेजक पुस्तक, संगणक विज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञानक पोथीक अनुवाद करबा काल किछु विशेष तकनीकक आवश्यकता पड़त। निबन्ध, स्कूल-कॉलेजक पुस्तक, संगणक विज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञानक अनुवाद ऐ अर्थेँ

સરલ અછિ જે એ સભમે વિસ્તારસઁ વિષયક ચર્ચા હેઇત અછિ આ સર્જનાત્મક સાહિત્ય {કથા, કવિતા, નાટક, ઉપન્યાસ, મહાકાવ્ય (ગીત-પ્રબન્ધ)} ક વિપરીત ભાવ આ સંસ્કૃતિક ગુણાંક નૈ રહૈત અછિ વા કમ રહૈત અછિ। સંગે એતએ પાઠક સેહો કક્ષા વિષયકક અનુસાર સજાએલ રહૈત છથિ। કેમિકલ નામ, બાયોલોજિકલ આ બોટેનિકલ બાઇનરી નામ આ આન સભ સિમ્બલ આદિ જે વિશિષ્ટ અન્તર્રાષ્ટ્રીય સંસ્થા સભ દ્વારા સ્વીકૃત અછિ તકર પરિવર્તન વા અનુવાદ અપેક્ષિત નૈ અછિ। સર્જનાત્મક સાહિત્યમે નાટક સભસઁ કઠિન અછિ, ફેર કવિતા અછિ આ તખન કથા, જઁ અનુવાદકક દૃષ્ટિકોણસઁ દેખી તખન। નાટકમે નાટકક પૃષ્ઠભૂમિ આ પરોક્ષ નિહિતાર્થકેઁ ચિન્હિત કરએ પડત સંગહિ પાત્ર સભક મનોવિજ્ઞાન બૂઝએ પડત। કવિતામે કવિતાક વિધાસઁ ઓકર ગઢનિસઁ અનુવાદકક પરિચિત ભેનાઇ આવશ્યક, જેના હાઇકૂક મૈથિલીસઁ અંગ્રેજી અનુવાદ કરૈ બેરમે મૈથિલીક વાર્ણિક રૂપ ક મેલ જઁ અંગ્રેજીક અલ્ફાબેટસઁ કરેબૈ તઁ અહાઁક અનૂદિત હાઇકૂ હાસ્યાસ્પદ ભઽ જાએત કારણ અંગ્રેજીમે રૂપ સિલેબલક હાઇકૂ હોઇ છૈ આ મૈથિલીમે જેના વર્ણ આ સિલેબલક સમાનતા હોઇ છૈ સે અંગ્રેજીમે નૈ હોઇ છૈ। એ સન્દર્ભમે જ્યોતિ સુનીત ચૌધરીક મૈથિલીસઁ અંગ્રેજી અનુવાદ એકટા પ્રતિમાન પ્રસ્તુત કરૈત અછિ। કવિતાક લય, બિમ્બપર વિચાર કરએ પડત સંગહિ કવિતા ખણ્ડક કવિતાક મુખ્ય શરીરસઁ મિલાન કરએ પડત। કથામે કથાકારક આ કથાક પાત્રક સંગ કથાક ક્રમ, વૈકલ્પિક સમય-કાલક જ્ઞાન આ વાતાવરણક જ્ઞાન આવશ્યક ભઽ જાઇત અછિ। આબ મહાકાવ્યક અનુવાદ દેખૂ, રામલોચન શરણક મૈથિલી રામચરિત માનસ અવધીસઁ મૈથિલીમે અનુવાદ અછિ મુદા દોહા, ચૌપાઇ, સોરઠા સભ સાસ્ત્રીય રૂપેં અનૂદિત ભેલ અછિ। સંસ્કૃત ભાષાક અનુવાદક માધ્યમસઁ પાઠન આંગ્લ શાસક લોકનિ દ્વારા પ્રારમ્ભ ભેલ। એ વિધિસઁ ને લૈટિનક આ નહિયેં ગ્રીકક અધ્યાપન કરાઓલ ગેલ છલ। એ વિધિસઁ જઁ અહાઁ સંસ્કૃત વા કોનો ભાષા સીખબ તઁ આચાર્ય આ કોવિદ ભઽ જાએબ મુદા સમ્ભાષણ નૈ કએલ હએત। જઁ કોનો ભાષાકેઁ અહાઁ માતૃભાષા રૂપેઁ સીખબ તખને સમ્ભાષણ કઽ સકબ, સંસ્કૃતિ આદિ

𑒣𑓂𑒩𑒰𑒟𑒧𑒱𑒏 𑒣𑒰𑒚𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏𑒼𑒭; 𑒂 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒟𑒰 𑒂 𑒃𑒞𑒱𑒯𑒰𑒮𑓂 𑒦𑒴𑒑𑒼𑒪𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒫𑒹𑒬 𑒏𑓄 𑒏𑒩𑒥 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।
𑒮𑓀𑒑𑒝𑒏 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠𑓁 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒢𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒫𑒰 𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡, 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪-𑒏ॉ𑒪𑒹𑒖𑒏 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏, 𑒮𑓀𑒑𑒝𑒏 𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩, 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒮𑓀𑒑𑒝𑒏 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑒼𑒑𑒱𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒏𑒩𑒥 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 "𑒏𑒼𑒪𑓂𑒛 𑒫𑒹𑒪𑓂𑒛𑒹𑒛 𑒋𑒪𑒲𑒧𑒹𑒢𑓂𑒙" 𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒯𑒰𑒮𑓂𑒨𑒰𑒮𑓂𑒣𑒠 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 "𑒢𑒵𑒬𑓀𑒮 𑒖𑒲𑒫" 𑒏𑒩𑒥 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒝𑒏𑒏 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒮𑒬𑒏𑓂𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒹𑒿 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒏𑒱𑒣𑒲𑒛𑒱𑒨𑒰𑒧𑒹 𑓕𑓐𑓐 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 "𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒰𑒫𑒪𑒲" 𑒂 𑓒𑓖𑓐𑓐 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 "𑒬𑒥𑓂𑒠𑒰𑒫𑒪𑒲"𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒮𑒿, 𑒑𑒴𑒑𑒪𑒏 𑒙𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒮𑒪𑒹𑒬𑒢 𑒁𑒍𑒖𑒰𑒩 𑒂𑒠𑒱𑒧𑒹 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒦𑒴𑒞 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒂 𑒂𑒢 𑒑𑒫𑒹𑒭𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒧𑒼𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒤𑒰𑒨𑒩𑒤ॉ𑒏𑓂𑒮 𑒂𑒠𑒱𑒧𑒹 𑒁𑓀𑒑𑓂𑒩𑒹𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒓 𑒣𑒰𑒩𑒱𑒦𑒰𑒭𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒝𑒏𑒲𑒨 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒞𑓂𑒩𑒳𑒙𑒱𑒫𑒱𑒯𑒲𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓁 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑓑.𑓒𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓗𑓗 𑒣𑒩 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

𑒑𑒾𑒞𑒧𑒰 𑒢𑓀𑒠 𑒗𑒰

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒮𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒻𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒥 𑒥𑒛𑓂𑒛 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒂 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒋𑒏𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒱𑒨𑒧 𑒂 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒣𑒩 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒩𑒯𑒥 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒤𑒩𑒰𑒏 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒋𑒐𑒢𑒡𑒩𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒑𑒼𑒪𑒻𑒮𑒲 𑒂 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒏 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫 𑒣𑒩 𑒑𑒩𑓂𑒫 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑓒.𑒑𑒠𑓂𑒨 𑒐𑒝𑓂𑒛
𑓒.𑓑𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 (𑒂𑒑𑒰𑒿)

२२आचार्य रामानंद मंडल-शिक्षक दिवस आ वर्तमान विद्यालय निरीक्षण आदेश
२३लालदेव कामत-रविदिनाँक यात्रा यात्राम कएल एक पोथी हमर आदर्श स्मृति शेष सूर्य नारायण चौधरी सर्वश्री रासबिहारी दासजीः एक विषय कीर्तन लेखाता स्व हरिनंदन कामत डीह गाम मंगरौनी सँ कएल छैक प्रणाम
२४निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खेप-२७)
२५नन्द विलास राय-घसवहिनी
२६प्रमोद झा 'गोकुल'- हमर कि ओकर? (वीहनि कथा)
२७रवीन्द्र नारायण मिश्र-बदलि रहल अछि समकछि (उपन्यास)-धारावाहिक
२८कपिल कामत- बुढ़क्की दावीए चूर गै हमरा पाछुए घूर? (हास्य कटाक्ष)
२९अरविन्द ठाकुर- हुड़दंगिया बहु (लघुकथा)

२१𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 (𑒂𑒑𑒰𑒿)

𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 (𑒂𑒑𑒰𑒿)



(𑒢𑒰𑒧- 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝 (𑓑𑓙𑓓𑓐) 𑒣𑒱𑒞𑒰- 𑒮𑓂𑒫० 𑒣𑒩𑒬𑒳𑒩𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒑𑒰𑒿𑒫- 𑒒𑒼𑒒𑒹𑒮𑒩, 𑒣𑒼० 𑒥𑒱𑒩𑒾𑒪, 𑒖𑒱𑒪𑒰- 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰- 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒞𑒏𑒼𑒞𑓂𑒞𑒩, CAIIB, 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞- 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏 𑒮𑒹𑒢𑓂𑒙𑓂𑒩𑒪 𑒥𑒻𑓀𑒏 𑒁𑒿𑒤 𑒃𑓀𑒛𑒱𑒨𑒰)

𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨
(𑒣𑒠𑓂𑒧 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒐𑒝𑓂𑒛)
𑒔𑒾𑒠𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨

𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 - 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲! 𑒂𑒥 𑒯𑒧 𑒞𑒩𑒏𑒢𑓂𑒢 𑒮𑒿 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨𑒏𑒰𑒥𑒰 𑒣𑒰𑒩𑒃 𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱𑒞 𑒔𑒾𑒠𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒥𑒞𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒠𑓄 𑒏𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒴। 𑒮𑒱𑓀𑒯𑒪 𑒠𑓂𑒫𑒲𑒣 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒫𑒹𑒞𑒰𑒪 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒕𑒪𑒟𑒱, 𑒖𑒹 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒮𑒢 𑒣𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧𑒲 𑒂 𑒏𑒪𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒍 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒐𑒹𑒪𑒻'𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒅𑒠𑒹𑒮𑒏 𑒦𑒃 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒱 𑒠𑒴𑒙𑒰 𑒪𑒞𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰 𑒣𑒩 𑒞𑒹𑒖𑒑𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒦𑒰𑒑𑒻𑒞 𑒐𑒩𑒑𑒼𑒬𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢। 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞-𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒐𑒩𑒑𑒼𑒬 𑒋𑒢𑒰 𑒦𑒰𑒑𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒧𑒰𑒢𑒴 𑒏𑒞𑒯𑒳𑒿 𑒅𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒼𑒋। 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒻𑒞-𑒠𑒾𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒟𑒏𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒍 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒻𑒒 𑒐𑓀𑒠𑒏 𑒧𑒹 𑒑𑒱𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒑𑒱𑒩𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒿 𑒍 𑒪𑒞𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒯𑒰𑒟 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒨𑒪 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧𑒏 𑒫𑒰𑒞𑒰𑒫𑒩𑒝 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒕𑒪। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒯𑒩𑒲𑒢 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒦𑒨 𑒦𑓄 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒬 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒕𑒰𑒯𑒩𑒱 𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒥𑒰𑒢𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒂𑒣 𑒐𑒳𑒬𑒱 𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒱𑒩𑒪 𑒢𑒰𑒩𑒱𑒨𑒪𑒏 𑒤𑒪 𑒂 𑒣𑒰𑒏𑒪 𑒂𑒧 𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒞𑒵𑒣𑓂𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒂 𑒯𑒰𑒟𑒲𑒏 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒮𑒥 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒐𑒹𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒂 𑒮𑒰𑒿𑒣 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒱𑒛𑒩 𑒦𑓄 𑒧𑒼𑒩𑒏 𑒣𑒰𑒿𑒐𑒱 𑒧𑒹 𑒒𑒳𑒮𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒞 𑒕𑒪। 𑒍𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒧𑒹 𑒫𑒞𑓂𑒮 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒳𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒖𑒱𑒞𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒂𑒍𑒩 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒿 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒾𑒠𑒯𑒧 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒪𑒑 𑒫𑒞𑓂𑒮 𑒧𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼

শিষ্য অপন পাঠক ধ্যানমে ছলথি। ওহি জল সঁ ওহি ঠামক মাটি গীল ভঽ গেল ছল। খরগোশক জীবন কিছু শেষ ছল। ও হাঁফৈত ওহি কীচড় মে গির পড়ল। জকরা স্পর্শ মাত্র সঁ খরগোশ সংসার সাগর কেঁ পার কঽ লেলক আ দিব্য বিমান পর বৈসি স্বর্গলোক চলি গেল। লতিয়া সেহো ওকর পাছাঁ করৈত ওহি ঠাম আয়ল। ওহি ঠাম ওকরা শরীর পর কিছু কাদোক ছীংটা পড়ি গেল। ভূখ প্যাসক পীড়া সঁ রহিত ভঽ ও লতিয়াক রূপ ত্যাগি দিব্যাংগনাক রূপ ধারণ কঽ লেলক আ গন্ধর্ব সঁ সুশোভিত দিব্য বিমান পর বৈসি ও সেহো স্বর্গলোক চলি গেলীহ। ই দেখি মুনিক মেধাবী শিষ্য সুকন্ধর হঁসঽ লাগল। দুনূক পূর্বজন্মক বৈরক কারণ সোচি হুনকা বড় বিস্ময় ভেলনি। তখন রাজাক আঁখি সেহো আশ্চর্য সঁ চকিত ভঽ গেল। ও বড় ভক্তি সঁ প্রণাম কঽ পূছলথিন-বিপ্রবর! ই নীচ যোনি মে পড়ল দুন্নূ জীব লতিয়া আ খরগোশ জ্ঞানহীন হোইতো স্বর্গলোক চলি গেল। একর কোন কারণ অছি? একর কথা সুনাউ।

শিষ্য কহলনি- ভূপাল! এহি বন মে বত্স নাম সঁ একটা ব্রাহ্মণ রহৈত ছথি ও জিতেন্দ্রিয় মহাত্মা ছলাহ। ও সদিখন গীতাক চৌদহম অধ্যায়ক জপ করৈত ছলাহ। হম হুনকর শিষ্য ছী। হম সেহো ব্রহ্মবিদ্যা মে বিশেষজ্ঞতা পাবি লেনে ছী। গুরুজীক ভাঁতি হম সেহো সব দিন গীতাক চৌদহম অধ্যায়ক জপ করৈত ছী। হমরা পাঠক শ্রবণ পানি মে লেপনাক কারণ ই খরগোশ আ লতিয়া কে স্বর্গলোক ভেটি গেলনি। আর হম অপন হঁসক কারণ বতবৈত ছী। মহারাষ্ট্র মে প্রত্যুদক নাম সঁ একটা মহান নগর অছি। ওহি ঠাম কেশব নাম সঁ একটা ব্রাহ্মণ রহৈত ছল জে কপটী লোকনি মে আগু ছলথি। হুনকর স্ত্রীক নাম বিলোভনা ছল। ও স্বচ্ছন্দ বিহার করঽ বালী ছলীহ তাহি সঁ ক্রোধ মে আবি জন্মভরিক বৈরক স্মরণ কঽ ব্রাহ্মণ অপন স্ত্রী কেঁ বধ কঽ দেলথিন আ ওহি পাপ সঁ হুনকা খরগোশ যোনি মে জন্ম ভেলনি। ব্রাহ্মণী সেহো অপন পাপক কারণ লতিয়া ভেলীহ।

শ্রী মহাদেব কহলনি- ই সব কথা সুনি শ্রদ্ধাবান রাজা গীতাক চৌদহম অধ্যায়ক পাঠ আরম্ভ কঽ দেলথীন জাহি সঁ হুনকা পরম গতিক প্রাপ্তি ভেলনি।

——0——



(নাম- পৰমানন্দ লাল কর্ণ (1930) পিতা- স্ব০ পৰশুৰাম লাল কর্ণ, গাম- ঘোঘেসৰ, পো০- বিৰৌল, জিলা- দৰভংগা, শিক্ষা- স্নাতকোত্তৰ, CAIIB, সেৱানিবৃত্ত- প্রবন্ধক, সেন্ট্রল বৈঁক অফ ইণ্ডিয়া)

গীতা মাহাত্ম্য
(পদ্ম পুৰাণ উত্তৰ খণ্ড)
পন্দ্ৰহম অধ্যায়

শ্রী মহাদেৱ কহলনি- পাৰ্ৱতী! আব গীতাক পন্দ্ৰহম অধ্যায়ক মাহাত্ম্য সুনু। গৌড়দেশ মে নৃপাল নৰসিংহ নাম সঁ একটা ৰাজা ছলাহ জিনকৰ তলৱাৰক ধাৰ সঁ যুদ্ধ মে দেৱতা সেহো পৰাস্ত ভঽ জায়ত ছলাহ। হুনকৰ বুদ্ধিমান সেনাপতি শস্ত্র আওৰ শাস্ত্রক কলাক ভণ্ডাৰ ছলাহ। হুনকৰ নাম সৰভ-মেৰুণ্ড ছল। হুনকা ভুজা মে প্রচণ্ড বল ছলনি। এক সময় ও পাপী ৰাজকুমাৰ সহিত মহাৰাজক বধ কঽ কে স্বয়ং ৰাজ কৰবাক বিচাৰ কেলনি। ঈ নিশ্চয় কেলাক কিছু দিন বাদ ও হৈজাক শিকাৰ ভঽ মৰি গেলাহ। থোড়েক সময় মে ও পাপাত্মা অপন পূৰ্বকৰ্মক কাৰণ সিন্ধু দেশ মে একটা তেজস্বী ঘোড়া ভেলাহ ওকৰ পেট সটল ছল। ঘোড়াক লক্ষণক জ্ঞাতা কোনো বৈশ্যক পুত্র ঢেৰ মোল দঽ কে ওকৰা খৰীদ লেলক আ বড় জতন সঁ ওকৰা ৰাজধানী লঽ এলাহ। বৈশ্য কুমাৰ ও ঘোড়া ৰাজা কেঁ দিঅ এলাহ। যদ্যপি ৰাজা ওহি সঁ পৰিচিত ছলাহ তথাপি দ্বাৰপাল হুনকা আগমনক সূচনা ৰাজা কেঁ দেলথিন। ৰাজা পুছলনি- অহাঁ কিঅ আয়ল ছী। তহন বৈশ্য ... মে উত্তৰ দেলথিন- দেৱ! সিন্ধুদেশ মে একটা উত্তম লক্ষণ সঁ সম্পন্ন অশ্ব ছল জেকৰা তীনু লোকক একটা ৰত্ন সমঝি হম ঢেৰ দাম দঽ কেঁ খৰীদ লেনে ছী। ৰাজা আজ্ঞা দেলথিন- ওহি অশ্ব কেঁ ওহি ঠাম লঽ আউ।

वास्तव मे ओ अश्व रूप मे उच्चैश्रवा सन छल। ओकर रूप मानू स्वर्गक घर होअए। श्वेत लक्षणक सागर टूटि पड़ैत छल। वैश्य घोड़ा लऽ एलाह आ राजा ओकरा देखलथिन। अश्वक लक्षणक ज्ञाता अमात्य लोकनि ओकर बड़ प्रशंसा केलथिन। ई सुनि राजा अपार आनन्द मे निमग्न भऽ गेलाह आ ओ वैश्य केँ मुँहमाँगा सोना दऽ अश्व खरीद लेलनि। किछु दिनक बाद एक समय राजा शिकार खेलक लेल उत्सुक भऽ ओहि अश्व पर सवार भऽ वन मे गेलाह। ओहि ठाम मृगक पाछू ओ अपना घोड़ा केँ दौड़ा देलथि। पाछू-पाछू सब दिशा सँ दौड़ैत सब सैनिकक साथ छूटि गेल। ओ हरिण सँ आकृष्ट भऽ दूर निकलि गेल छलाह। प्यास हुनका व्याकुल कऽ देल-कनि। तखन ओ घोड़ा पर सँ उतरि पानिक खोज करऽ लगलाह। घोड़ा केँ ओ गाछक डारि मे बाँधि देलथिन आ अपने एकटा चट्टान पर चढ़ऽ लगलाह। किछु दूर गेला पर ओ देखलथि जे एकटा पातक टुकड़ा हवा सँ उड़ि केँ शिलाखण्ड पर गिरल छल। ताहि मे गीताक पन्द्रहम अध्यायक आधा श्लोक लिखल छल। राजा ओकरा पढ़ऽ लगलाह। हुनका मुख सँ गीताक अक्षर सुनि घोड़ा तुरंत गिर पड़ल आ अश्व योनि सँ मुक्त भऽ दिव्य विमान पर बैसि स्वर्गलोक चलि गेलाह। तत्पश्चात राजा पहाड़ पर चढ़ि एकटा उत्तम आश्रम देखलथिन जाहि ठाम नागकेसर, केला, आम आ नारियलक गाछ लहलहाइत छल। आश्रम मे एकटा ब्राह्मण बैसल छलाह जे संसारक वासनाक सँ मुक्त छलाह। राजा हुनका प्रणाम कऽ बड़ भक्ति सँ पूछलथि- ब्राह्मण, हमर अश्व जे एखन-एखन स्वर्ग चलि गेल अछि तकर कोन कारण अछि।

राजाक बात सुनि त्रिकालदर्शी, मन्त्रवेत्ता आ महापुरुष लोकनि मे श्रेष्ठ विष्णुशर्मा नाम सँ ब्राह्मण कहलनि- राजन! पूर्व काल मे अहाँ लग जे 'सरभ मेरुण्ड' नाम सँ सेनापती छल, ओ अहाँक पुत्र सहित मारि केँ अहाँक राज्य हड़पऽ केँ लेल तैयार छल ओहि बीच हैजाक शिकार भऽ ओ मरि गेलाह। तकर बाद ओहि पाप सँ ओ घोड़ा योनि मे जन्म लेलनि। एहि ठाम गीताक पंद्रहम अध्यायक आधा श्लोक लिखल मिल गेल तकरा अहाँ पढ़ऽ लगलहुँ। अहाँक मुख सँ सुनि ओ अश्व केँ स्वर्ग भेटि गेलनि।

तदनन्तर राजाक सैनिक जनका ढूँढ़ैत ओहि ठाम आबि गेलाह। जनका सबकेँ साथ प्रणाम कऽ राजा ओहि ठाम सँ प्रसन्नतापूर्वक चललाह आ गीताक पन्द्रहम अध्यायक श्लोकाक्षर सँ अंकित ओहि पत्र केँ बाँचि-बाँचि खूब भेलाह। जनकर आँखि हर्ष सँ मिल छलनि। घर आबि ओ मन्त्रवेत्ता मन्त्री संग अपना पुत्र सिंहरथ केँ राज्यसिंहासन पर अभिसिक्त कऽ अपने पन्द्रहम अध्यायक जप सँ विशुद्ध चित्त भऽ मोक्ष प्राप्ति केलनि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓒𑓒𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪-𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒠𑒱𑒫𑒮 𑒂 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒢𑒱𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒝𑒏 𑒂𑒠𑒹𑒬



આચાર્ય રામાનંદ મંડલ-શિક્ષક દિવસ આ વર્તમાન વિદ્યાલય નિરીક્ષણમ આદેશ

શિક્ષક દિવસ આ વર્તમાન વિદ્યાલય નિરીક્ષણમ આદેશ

વંદઉ ગુરુ પદ પદુમ પરાગા॥ સુરુચિ સુવાસ સરસ અનુરાગા॥

-સંત તુલસીદાસ

ગુરુ કે મહિમા કે વખાન કવીર કે શવ્દ મેં -

સાત સમદ કે મસિ કરૌ,લેખન સવ વનરાઈ।

ધરતી સવ કાગળ કરૌ, ગુરુ ગુન લિખા ન જાઈ॥

ગુરુ ગોવિંદ દોનો ખડે, કાકે લાગૂં પાય।

વલિહારી ગુરુ આપને,ગોવિંદ દિયો વતાય॥

માને કિ ગુરુ કે મહિમા અપરમ્પાર છૈ।

ગુરુ પૂર્ણિમા મહર્ષિ કૃષ્ણ દ્વૈપાયન અર્થાત વેદ વ્યાસ કે સમ્માન મે મનાયલ જાઇત છૈ વો વેદ કે ચારિ ભાગ મે વંટલન યથા ઋગ્વેદ, સામવેદ, યજુર્વેદ આ અથર્વવેદ। અટ્ઠારહ પુરાણો કે સંગે વો ચર્ચિત મહાભારત કાવ્ય ગ્રંથ કે રચયિતા છલન।

ગુરુ કે મહત્તા બનલ રહલ ગેલ આજાદી કે બાદ પૂર્વ રાષ્ટ્રપતિ ડૉ રાધાકૃષ્ણન કે જયંતી પાંચ સિતમ્બર કે શિક્ષક દિવસ કે રૂપ મે મનાયલ જાઇત છૈ।આ શિક્ષક કે ગુરુ રૂપ મે શ્રદ્ધા નિવેદિત કૈલ જાય છૈ।

પ્રારમ્ભિક શિક્ષા કે અંતર્ગત મહીના મે એક દિન પ્રખંડ સ્તરીય ગુરુ ગોષ્ઠી કે આયોજન કૈલ જાઇ છૈ।જૈમે હર વિદ્યાલય કે પ્રધાનાધ્યાપક અપન વિદ્યાલય કે આવશ્યક કાગજાત કે જમા કરૈત છલન તથા સરકારી આદેશ-નિર્દેશ સે અવગત હોઇ છલન। ગુરુ ગોષ્ઠી કે અધ્યક્ષતા પ્રખંડ શિક્ષા પદાધિકારી કરૈત છલન। પ્રખંડ શિક્ષા પદાધિકારી પ્રખંડ સ્તરીય નિરીક્ષણ પદાધિકારીઓ છલન। હાલાંકિ બિહાર શિક્ષા પરિયોજના કે ગઠન કે પહિલ મધ્ય વિદ્યાલય કે નિરીક્ષી પદાધિકારી ક્ષેત્ર શિક્ષા પદાધિકારી આ પ્રાથમિક વિદ્યાલય કે નિરીક્ષી પદાધિકારી પ્રખંડ વિકાસ પદાધિકારી હોઇત રહલન। જિલા સ્તર પર જિલા શિક્ષા અધીક્ષક આ જિલા શિક્ષા પદાધિકારી નિરીક્ષી પદાધિકારી હોઇત રહલન। પ્રારમ્ભિક શિક્ષા કે પ્રશાસનિક કાજ જિલા શિક્ષા અધીક્ષક આ માધ્યમિક શિક્ષા કે જિલા શિક્ષા પદાધિકારી કરૈત રહલન। હાલાંકિ જિલા શિક્ષા ઉપાધીક્ષક આ અનુમંડલ શિક્ષા પદાધિકારીઓ હોઇત રહલન પરંચ વો નિષ્ક્રિયે રહૈત રહલન।

આબ જિલા શિક્ષા અધીક્ષક, ઉપાધીક્ષક અનુમંડલ શિક્ષા પદાધિકારી આ ક્ષેત્ર શિક્ષા પદાધિકારી કે પદ સમાપ્ત ક દેલ ગેલ છૈ।આ આબ જિલા શિક્ષા પદાધિકારી,ચાર ગો જિલા કાર્યક્રમ પદાધિકારી, કાર્યક્રમ

𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲, 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒰𑒖 𑒏 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯।𑒮𑒦 𑒢𑒱𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯।

𑒋𑒐𑒢𑒹 𑒢, 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑒧𑒱𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 (𑒣𑓀𑒔𑒰𑒨𑒞 𑒫𑒰𑒩𑓂𑒛 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨), 𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰, 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓀𑒛 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒂 𑒖𑒱𑒪𑒰 𑒣𑒩𑒱𑒭𑒠 𑒏𑒹 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓀𑒦𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒏𑒹 𑒢𑒱𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒲 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦𑒱𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑒹 𑒪𑒹𑒏𑒹 𑒅𑒔𑓂𑒔𑒞𑒩 𑒧𑒰𑒡𑓂𑒨𑒧𑒱𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒞𑒏 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒮𑓂𑒞𑒩𑒲𑒨 𑒣𑓀𑒔𑒰𑒨𑒞𑒲 𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒹 𑒁𑒡𑒲𑒢 𑒕𑒪। 𑒋𑒞𑓄 𑒞𑒏 𑒏𑒱 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒢𑒱𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒹 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪।𑒕𑒚𑒰 𑒔𑒩𑒝 𑒞𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒢𑒱𑒨𑒼𑒖𑒢𑒼 𑒏𑒻𑒪𑒏। 𑒣𑒩𑓀𑒞𑒳 𑒮𑒰𑒞𑒧 𑒔𑒩𑒝 𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒨𑒧 𑒥𑒠𑒪 𑒑𑒹𑒪।𑒂𑒥 𑒥𑒲𑒣𑒲𑒋𑒮𑒮𑒲 𑒮𑒹 𑒢𑒱𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒻𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞 𑒂 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒠𑒩𑓂𑒖𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞। 𑒣𑒩𑓀𑒞𑒳 𑒢𑒨𑒰 𑒢𑒱𑒧𑓂𑒢 𑒮𑓂𑒏𑒹𑒪 𑒏𑒹 𑒫𑒹𑒞𑒢𑒧𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞।𑒖𑒾𑒏𑒱 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒫𑒹𑒞𑒢𑒧𑒰𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒴 𑒕𑒪।

𑒖𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒹 𑒮𑒹 𑒢𑒱𑒨𑒼𑒖𑒱𑒞 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒫𑒼𑒏𑒩𑒼 𑒥𑒲𑒣𑒲𑒋𑒮𑒮𑒲 𑒏𑒹 𑒣𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒻𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒠𑒩𑓂𑒖𑒰 𑒂 𑒪𑒰𑒦 𑒣𑒻𑒞𑒢। 𑒯𑒰𑒪 𑒧𑒹 𑒛𑒼𑒧𑒱𑒮𑒰𑒃𑒪 𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪।𑒁𑒃𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒨𑒼𑒖𑒱𑒞 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒂 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒩𑓂𑒟𑒲 𑒂𑒫𑒰𑒖 𑒥𑒳𑒪𑓀𑒠 𑒏 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯।

𑒂𑒥 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒢𑒨𑒰 𑒂𑒠𑒹𑒬 𑒏𑒹 𑒧𑒳𑒞𑒰𑒥𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒏𑒹 𑒖𑒰𑓀𑒔 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑 𑒏𑒹 𑒖𑒰𑓀𑒔 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒂 𑒣𑓀𑒔𑒰𑒨𑒞 𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒹 𑒖𑒰𑓀𑒔 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒁𑒪𑒰𑒫𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑 𑒏𑒹 𑒔𑒞𑒳𑒩𑓂𑒟 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒹 𑒕𑒼𑒛𑓃 𑒏𑒹 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒱𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒂 𑒢𑒱𑒨𑒼𑒖𑒱𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒞।𑒁𑒃 𑒂𑒠𑒹𑒬 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬 𑒏𑒹𑒨𑒼 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯।𑒁𑒃𑒮𑒹 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒹 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒏𑒰 𑒠𑒲𑒠𑒲 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒢𑒱𑒩𑒲𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒏𑒹 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒨 𑒖𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒢𑒲𑒨 𑒅𑒔𑓂𑒔 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒢𑒱𑒩𑒮𑓂𑒞 𑒏𑒹 𑒠𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒨। 𑒂𑒬𑒰 𑒕𑒨 𑒢𑒨𑒼 𑒂𑒠𑒹𑒬 𑒅𑒔𑓂𑒔 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒮𑒹 𑒢𑒱𑒩𑒮𑓂𑒞 𑒯𑒼 𑒖𑒰𑒨𑒞।

𑒁𑓀𑒞𑒞𑓁 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒧𑒩𑓂𑒠𑒢 𑒮𑒹 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒧𑒹𑓀 𑒑𑒳𑒝𑒫𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒢 𑒂 𑒮𑒏𑒻𑒨 𑒕𑒨।𑒁𑒃 𑒮𑒦 𑒞𑒟𑓂𑒨 𑒣𑒩 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒂 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒹 𑒏𑒹 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒕𑒨। 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒠𑒱𑒫𑒮 𑒏𑒹 𑒬𑒳𑒦𑒰𑒫𑒮𑒩 𑒣𑒩 𑒥𑒡𑒰𑒃 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒬𑒳𑒦𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰।।

-શ્રાયાર્ય રામાનંદ મંડ૭ સામાળિક યતિક સહ સાહિત્યકાર સીતામઢી।

-શ્રાયાર્ય રામાનંદ મંડ૭ સામાળિક યતિક સીતામઢી, સેવાનિવૃત્ત પ્રયાનાધ્યાપક, માતા-યન્દ્ર દેવી, પતિ-સ્વ૰રાળેશ્વર મંડ૭, પત્ની- પ્રમાણિ દેવી, ળન્મ તિથિ-૦૧ ળનવરી ૧૯૬૦ યોગ્યતા- એમ-એસસી (રસાયન શાસ્ત્ર), એમ એ (હિન્દી)। ર્યા- સાહિત્યિક, મૈથિલી-હિન્દી કવિતા -કહાની લેખન શ્રા શ્રાલેખ પ્રકાશિત પોથી - મૈથિલી કવિતા સંગ્રહ માસા કે ન વાંટયિો ૨૦૨૨ પ્રકાશિત રચના - સહયિા કવિતા સંગ્રહ પોથી - ળનક નંદિની ળાનકી શ્રા શૌર્ય ગાના ૨૦૨૨ પત્રિકા -મથિલિા સમાળ, ઘર -વાહર શ્રા શ્રૂપર્વા (મૈસામ)। શ્રપ્પવાર -દૈનકિ મૈથલિ પુનર્ળાગરમ પ્રકાશ સામાળકિ- સામાળકિ યતિન, દાયત્વિ- પૂર્વ ળિલા પ્રતનિધિ, પ્રાથમકિ શકિ્ષક સંઘ, ડુમરા, સીતામઢી સ્થાયી પતા- ગ્રામ-પપિરા વશિનુપુર થાના-પરહિાર ળિલા-સીતામઢી વર્તમાન પતા-પપિરા સદન,મુરલિયિાયક વાર્ડ-૦૪ સીતામઢી પોસ્ટ-યકમહલિા ળિલા-સીતામઢી રાળ્ય-વહિાર પનિ- ૮૪૩૩૦૨ મો નં-૯૯૭૩૬૪૧૦૭૫ ઈમેલ-રામાનાનદમાનદાલ૦૦૧૦ગમાલિયોમ

એ રયનાપર શ્રપન મંતવ્ય દતોરાલિસતાડવદિહ૰ગમાલિયોમ **પર પઠાઉ।**

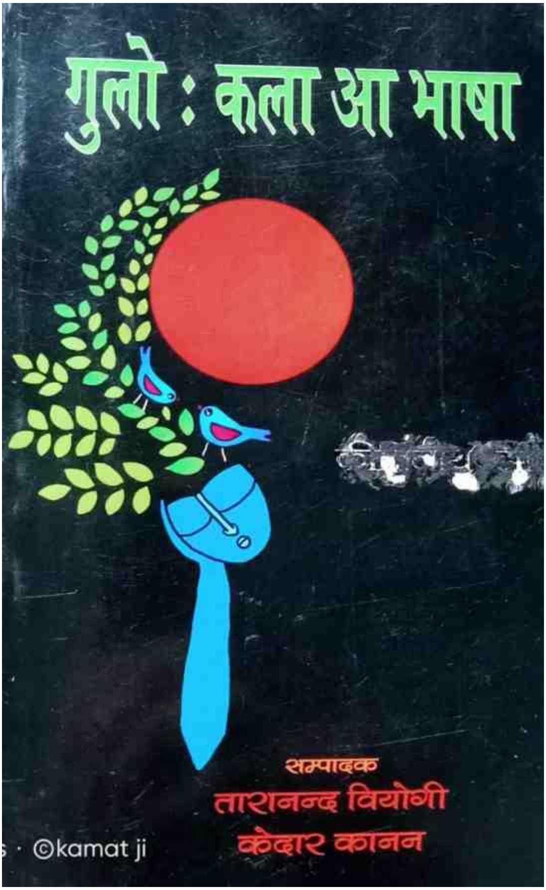
𑒩𑓁𑒑𑒰𑒑𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒰𑒧𑒞-𑒢𑒱𑒢𑒱𑒨𑒱𑓀𑒏 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒋𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒯𑒧𑒩 𑒂𑒠𑒩𑓂𑒬 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱 𑒬𑒹𑒭 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒮𑓂𑒫𑒲 𑒩𑒰𑒮𑒫𑒱𑒯𑒰𑒩𑒲 𑒠𑒰𑒮𑒖𑒲𑓁 𑒋𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒏𑒢𑒱𑒭𑓂𑒞𑒞𑒧 𑒦𑓂𑒩𑒰𑒞𑒰 𑒮𑓂𑒫 𑒯𑒩𑒱𑒢𑓀𑒠𑒢 𑒏𑒰𑒧𑒞 𑒚𑒲𑒏 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑓀𑒑𑒩𑒾𑒢𑒲 𑒮𑒫 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧𑓂



ભાઈદેવ કામત-નનિયાઁક યાત્રિન યત્રિનામ કરૈત એક પોથી હમર આદર્શ સ્મૃતિ શેષ સૂર્ય નારાયણ ચૌધરી સત્યવતી નાસવહિની દાસજી :એક વિષય કવિતાન ળ્ગાત્ સ્વ. હરિનંદન કામત ઠીક ગામ મંગરૌની સવ કરૈત છૈક પ્રણામ

૧

નનિયાઁક યાત્રિન યત્રિનામ કરૈત એક પોથી



वरेण्य साहित्यकार तारानंद वियोगी- केदार कानन जीक सम्पादनमे गुलो : कला आ भाषा (विमर्श) २०२२ ई०में २१५ पृष्ठक 'मैथिली पोथी' कसिन संकल्प लोक सुपौल, प्रकाशित केलक। एहि गरगर साहित्य के दाम दू सय टाका छैक,जाहिमे आवरण अनुप्रिया'क आकर्षक छन्हि। पोथीमे आध्नी एक पाठ मूल उपन्यास लेखक डॉ० सुभाष चन्द्र यादव जीक ' पयपनिया मैथिली 'शत्रिषक सेहो लागल पाठक कें अभरत। ए पोथीमे गुलोक छोट वेटीक जे मूल उपन्यास कथाक केन्द्रीय पात्र अछि, ताहि के मादे विभिन्न विद्वान

સમાળોચના કેળનિ ,સે હુનકે શબ્દમે શ્રપનેકે દિગ્દર્શન ક૧ાવૈન છી।
સુપૌળ ગોડ કેર ૧હવાસી ળગાયક ૫૫ વર્ષીય ગુળો ઉર્ફ ગુળાવ મંડળ કે વાવુળી સઁ હુનક મસોમાનિ ભેળ વેટીક વાળક યાહ દોકાનમે સંગ પૂરૈન ગુળ૧ વસ૧ કરૈન ૧હૈ ય। સે ગામ મહજિન૧ એકદિનિ યોપ્પા દૈન વાસડીહ- ઘ૧ાની કવાળ ક૧ા ળેને ૧હૈક શ્રા મામ ગુળો કેં ગાય સઁ ભાગનિ સવ નુ૧કે ભગા દેળકૈક। ગ૧ીવ ગુળો સ૧કા૧ી ડગ૧કાન વ્૧હ્મસ્થાન ટોળ ળગ કચ્ચાઘ૧ વનાકચ સપ૧િવા૧ વસ્થાપિત જીવન વિતૈન યાહક દોકાન કરૈન ૧હૈછ। શ્રપન જીવનક શ્રાપ્ય૧ી છઃમાસ પૂર્વ ળપ્પક શ્રા હુનક માન્૧ સઁ પ૧ાયિનિ પાવૈન છૈક। કથા નાયક ગુળો જવાનીમે ગાઁજા પવિન ૧હથિ,સે શ્રાવ શ્રો દમ્મા ૧ોગ સઁ ગ્૧સિન છથિ। હુનક પન્ની વેળાવાળી દૂ વેટા- દૂ વેટીકે જન્મ દૈન ૧ોગાહિ ભઽ ગેળ છૈક। ડેઢ઼ દૂ સે૧ (ળીટ૧) દુધ સઁ ગૈઁહકિ ચળવૈન શ્રછિ,શ્રદહિ દુધક યાહ શ્રપને પ૧ાવિા૧ મે સર્ચ જાઈછ। જેઠકા વેટા શ્ર૧જૂનમા એ કસવામે ૧િક્સે ચળવૈન નશિવાજી સંગહનમે ૧હૈન છૈક। શ્રો પૈનળાવ પ્ટચ ગેળ છળૈક। શ્રપના સ્૧ીકે ટાકા કમાકે પડવૈન છૈક। શ્રોક૧ નીન સાળક વેટા સુજીન છૈ સે દાદા-દાદી ળગ દીદી શ્રા શ્રનવ૧ ક્વૈક ળગ પ્પૂવ ૧ીનાએળ છૈ। કોશી ચૌક પ૧ જે પૂર્વી કોસીવાન્હ સઁ પૂ૧વ વે૧ાયિ઼ામંચ વાળા નવ ઉપનિવિશ કાચમ ભેળ છૈક; શ્રોનચ છોટછીન સમાજિક વસાવટ ઢ઼ાંચા ઠાઢ઼ છૈક। નાહિમિ શ્રનવ૧ કડઘાના ૧ાપ્પિ સૂ૨ચા દવાઈ કે ળ'કે ગ્૧ામીમ સઁ નીક ભાઈચા૧ા મે ૧હૈન દેપ્પાઈછ। પ૧ોસમે એક ભળ શ્રાદમી ગુળો શ્રા ૨ન૧ા ગાન્હિ સવ સમાંગ ૧હૈન છૈક। ગુળો ઋમ સમહિ શ્રપન છોટકી વેટીક" નામ ૧નિયિ઼ા ૧ાપ્પને શ્રછિ। સે ૧નિયિ઼ા કોનૂ ગીન ગવૈન શ્રપન શ્રાઁગન દ્વા૧ નીપૈમે નિમગ્ન ૧હૈન શ્રછિ,નિળાસંક૧ા૨ન છીચૈ। સદ્યપ્૧કાશિન એ પોથીમે સદ્દિન સઁ કુમા૧ મનીષ શ્ર૧વિંદ " એહિ યુગક શ્રવહટ્ટ ઉપન્યાસમે" ળપ્પૈન છથિ ' ઉપન્યાસક પ્૧ા૧મ્ભહિ મે ૧નિયિ઼ા નપિયિ઼ા ક' ૧હળ શ્રછિ।શ્રો શ્રોઢ઼ના નહિ શ્રોઢ઼ને શ્રછિ। જાડ઼ક માસ છૈક,નૈયો। શ્રોઢ઼ના નહિ શ્રોઢૈન શ્રછિ,જે નપિયિ઼ા કરૈ મે શ્રોઢ઼ના ળટા જેનૈક। ૧નિયિ઼ા યાહક દોકાનક નપિયિ઼ા કરૈન શ્રછિ ન' દોકાનક શ્રાગૂ સડ઼ક પ૧ નીન ગોટચ ઠાઢ઼ છૈ શ્રા ૧નિયિ઼ા દસિ નાકિ ૧હળ છૈ। ભ૧ાસિક શ્ત્૧ાક સએ હુળકી મા૧ૈન જીવન નહિ૧ૈ છૈ। ગુળો શ્રા વેળાવાળી ઈ વાન વુઝૈ છૈ।મુદા

ગુળીક વેવસી દેખયિો ળે ઓ અપન વેટીકેઁ વાત કહ' કે અતિરિક્ત ઓહિ તીનૂ કેં કછિુ નહિ કહિ સકૈત --_અછિ ઓ અપન વેટી પર વમકૈત અછિ,' ગાએ છૌડ઼ી! છોડ઼ળહિ? આકહિ દિયૌ હાપર!'

ઉપન્યાસ વિન્યાસ આ તાહકિ કથોપકથન તતેક સુસ્પષ્ટ ગેલ છૈન ળે અપને પાઠક હુનક ઠેઠી મૈથલિી આ છોટ વાક્ય ચયન દેખિ પ્રસ્તુલતિ ગ' ઉઠવ સુભાષ ચન્દ્ર વાવુક લેખન શૈલી એહિ તરહેક હોઇછ-:

નનિયિા મનસુઆયલ- એ આર ઠોકા કે મૌસ ખાયત કંદાહાવાલી કહિ કએ ગેલ છૈ ઠોકા લેને એતૌ લેકનિ ઠોકા નૈ ગેલૈ ઊ ઘોઘા લેને એલૈ ઘોઘા છોટ હોઇ છૈ વનવૈ મે ગારી હુંહટ આ ખાઇયો મે વેકાર ઘોઘા દેખ કએ નનિયિાક મન ખસિ પડ઼લ ઊ ગુસ્સા રહલ ને ઘોઘા વનવૈ લએ તૈયાર ને કોનો ટહલ કરૈ લએ તૈયાર માય-વવા કતવો કહૈ છૈ-'પાનિ લિ । હાડ઼ લગા દહી' કોનો પરવાહ નૈ ઊ ગુમસુમ વૈઠલ-એ માય પરચારૈ છૈ-' ળીવલહિ કેહન! સવ દનિ માછે- મૌસૈ ચાહી' નનિયિા કુઆયલ વૈઠલ રહર-એ સુક્ખલ કેલ કેશ હવા મે ઉડ઼યિા રહલ રહલ છૈ ઊ કહયિો કેશ મે તેલ નૈ લગાવર-એ તેલ રહતિ ને છૈ ળે લગાયત એહિ તરહેક પાઁતિ ઉઠાકય કતેકો વિદ્વાતજન અપન આલેખમે સન્હયિને છથિ યથા-: રમાશ કુમાર સહિ ' પ્રગાણતકારી ઉપન્યાસ : ગુળી ' મે લખિને છથિ- સત્વ શકિષા અભયિાન 'ક સચ્ચાઈ એહિ ઉપન્યાસ મે દેખાર પડ઼ૈત અછિ નનિયિા સ્કૂલ પઢૈ લેલ નહિ વનૂ પોશાક ઓર્શ'ક લોભ મે ળાઇત અછિ મૈડમ કહને રહેય ળૂતા કિ ચપ્પલ કતિ લીહેં, મુદા વાવુળી ઓહિ પાઈ સઁ ઘરખર્ચા મે સધા દેને રહેક પાઁચ ટકા મેલા દેખય ળાઈ લે નહિ દ' સકલેક આ ન કોનૂ વેગારા મે કતિવો પાઈ સે નનિયિા હૂઠા ચર કહૈત વાપકે લલકારૈ છૈ અંગારા દુઆરિ (દોકાન) ગોરે નીપૈ સઁ છોટકી વેટીકે મનાહી કરૈત ઓકર માય ચચિઆઇ છૈ- 'માય ગે માય! છૌડ઼ી હમરા ળીઅય નૈ દેતૌ! ગે ચદ્દરિ ઓઢ઼િ નૈ લ' નૈ ઓઢ઼ૈ છી ગરિ કે લટા ળેતૈ!' નનિયિા ખૌહા કએ કહૈ છૈ આ માટકિ ઢેલ ગુડ઼િ- ગુડ઼િ વાલ્ટલિાલ પાનિ મે ખસવૈત ળાઈ છૈ' પૃષ્ઠ સં૦ ૪૧ ,એક દનિ ગહુઁમ કટની કાએ ઘુરૈત- ઘુરૈત રાતિ કે આઠ વાળિ ગેલૈ ગુળી વળાર ગેલ રહૈ નનિયિા કએ વડ઼ળોર ભુખ લાગિ ગેલૈ વવા રહતિઇ તઽ એક-દૂ ટકા માંગકિએ કુઇછ ખાય લૈત ગુળી આ ઉમેશવા

કે દોકાન આમને-સામને છૈ। નનિયાં દેખલક ઉમેશવા કે વેટી દોકાન પર અસકરે છૈ। લગા ગેલ આ કહલકૈ- હે ગે! કને પકૌડ઼ી દે ને। વડ઼ ભૂખ લાગલ-એ। નનિયાં પચ- પચ થૂક ઘોંટૈ ય, મુદા ઓ જીવલાહિ નૈ પાઅનવર યાલીક કૈપ્સુલ દૈ લ ગુલોકેં કહૈત છૈ,પરંચ દામચરા નૈ પુછારા કરત। સરકારી અસ્પતાલ મે દવાય ભેટિ સિકૈછ। સતીશ વર્મા " મેહનતકશ વહુજન સમાજ 'ક મહાકાવ્ય ' શિર્ષક મેં લિખૈત છથિ- ગુલો પઢ઼લાક વાદ હમરા એહિ ઉપન્યાસક પાત્ર ગુલોક વેટી નનિયાં સઁ વેસી જુડ઼ાવ ભ' ગેલ। ગુલો પઢ઼લાક વાદ હમરા લાગલ જે ઈ ઉપન્યાસ ગુલોક કથા સઁ વેસી ગુલોક વેટી નનિયાં 'ક કથા થિક। ઉપન્યાસકાર સુભાષ સેહો ગુલોક કથા કહૈત કહૈત (જાને- અનજાને) નનિયાંક કથા કહય લાગૈત છથિ આ ઈ અનાયાસ નહિ થિક જે ઉપન્યાસ નનિયાં સઁ શુરૂ હોઇત અછિ આ નનિયે પર જા' કે' ખત્મ હોઇત અછિ। ભરિ ઉપન્યાસમે વાપ (ગુલો) આ વેટી (નનિયાં) 'ક વીચ જે ઝટકાર- દુલારવલા મમતા આ પ્રેમક સમન્વય અછિ ,સે ઉપન્યાસક પ્રાણવાયુ થિક। વાચમે આઇસક્રીમ આ દાલમોટવલા ઝેરી લગાવૈત રહૈ છૈ। નનિયાં ગુલો સઁ પાઁચ ગો ટકા માંગઇ-ય-' વવા પાઁચ ગો ટકા દયહ। આઇસક્રીમ ખેવૈ।' નૈ છૈ ટકા-' ગુલો ટભિસ કય કહઇ- એ' દાય ને હૌ-' નનિયાં ખોસામદ કરૈ છૈ। ' નૈ દેવહક-' નનિયાં નિરાશ ભેલ જાઇ-એ। ગુલો કે તામસ ઉઠલૈ- ' હે ગે છૌડ઼ી, દેખવહિ,વડ઼ આઇસક્રીમવાલી ભેલી હૈ। તેહન મારા મારવૌ જે સવ આઇસક્રીમ ઘુસડ઼િ જેતૌ।' નનિયાં ઉદાસ ભાય ગેલ।ઓકર મૌલાયલ મુઁહ દેખ કય ગુલો કય મમતા લાગલૈ। ઓકરા લગ દુઇય ગો ટકા રહૈ, દાય દેલકૈ। નનિયાં ચેહરા પર મુસ્કી એલૈ।

નનિયાં ઘરો મે કાજ આ વાહરો કાજ કરયમે અસકતાઇત નહિ છૈક। આશીષ ચમન ' વેછપ ઉપન્યાસ ગુલો' મે લિખૈત છથિ- કન્દાહાવાલી અપન પાઇ- કૌડ઼ી કે ઘર મે ખર્ચ- વર્ચ નહિ કરૈત છૈક। ઓકર નજિરવ તખન પરાકાષ્ઠા પર ચલિ જાઇત છૈ,જખન ઓ અપન વેટા 'સુજીત' કે ઓચવાય ઉઠાવૈત છૈક તઁ નનિયાં ઓકરા રોકૈત છૈક। નનદિ- ભાઉજ આ વાદમે દેઓરક મધ્ય મારપીટ ભ' જાઇત છૈક। ઓ અપન પતિ 'અરજુનમા' કે ઓન ક' કેં સાસુ-નનદિકિ ખિચાંસ કરૈત છૈક આ પાઁચ હજાર ટાકા અપના ભાયક માર્ફત અરજુનમા '

સઁ મંગા ઘૈન છૈક શ્રા વળાન સઁ ડ્રામ શ્રાનિ શ્રોહિમે વોનવિઉ િોનો મન ગહુઁમ ઢાનિ િાઉ માનિ નહિા યઉિ ળાશ્ન છૈ,ળહ્નકિ શ્રોહિ વોનમિ નિિયાિ સેહો સાહીદાન છઉેક। મણ્ાનેશ્વ્રન હ્ા ' એક વ્રશિષ્ટિ ઉપન્યાસ: ગુાઉ' મેં એકડામ ઉપ્પિને છથિ-" ઉેકનિ નિિયિા િઁ ળુઉમ છૈ। હઁસૈ છૈ િ' વ્રહાર છૈ શ્રૂઉ હ્ડૈ છૈ। નિિયિા 'ક હઁસીમે ળાદૂ છૈ। યુન્મક ળકાઁ પીયૈ છૈ। નશિ્છઉ નિ્મઉ હઁસી। શ્ળોનયિા ળકાઁ છટિકૈિા। શ્રોકન યઉૈ કે , વોઉૈ કે , િાકૈિ કે ઢંગ ઉેક કે મોહિ ઉૈ છૈ। ળે દેપ્પઉક દેપ્પિે નહિગેઉ।' એક વેન ળપ્પન નિિયિા પાઁચ- સાિ ટા છોમી એકે વેન પ્પા ળાશ છૈ િ' ગુાઉ વનળૈ- ' ઽ છૌડ઼ી નાછ્છની ળકાઁ કનૈ છૈ।એોક કશ્ઠ છૈ શ્રા કેઉ બાક્રોસને ળાશ છૈ। નામઉેયન ડાકુન " ગુાઉ : શ્રાળુક પનાિિ" મે એકડામ ઉપ્પિને છથિ-: મથિઉિ દન્શન'ક સાહિ્ય વ્રશિષાંક ઉેઉ હ્મ ઉિઉે ને, સુબાષ યન્દ્ન પાદવ્ર એવં કેદાનનાથ યૌયની કે શ્રાગ્નહ કશ્ને છઉયિ્નિ- ઉપન્યાસક ઉેઉ। મુદા કેશ્રો નહિ દિ' સકઉ। વ્રજીિ શ્રાનણ્દ શ્રા પ્નદીપ વહિાની 'ક શ્રાબાના કનિ્તુ દોસની વ્રન્ષ હ્મ સુબાષ કે યનયિ્વૈિ નહઉયિ્નિ શ્રા શ્રણ્િાિ: ' ગુાઉ ' હ્મના પ્નાપ્િ ભેઉ। એકટા નવ્ર ઢઁગાક કાંટી મૈથિઉિ ઉપન્યાસ। પાિ્નીક ' સત્ય થકિ સંઘન્ષ' કે સાકાન કનૈિ વ્રશિુદ્ધ મૈથિઉિ ઉપન્યાસ। મથિઉિાક , વંયાિ- શ્રવહેઉાિ મથિઉિાક વ્રપથા- કથાક વ્રઉિક્ષણ યાિ્નાણ । 'ગુાઉ' મથિઉિ દન્શનક નવ્રમ્વન- દસિમ્વન ૨૦૧૪ મેં પ્નકાશાિ ભેઉ નહ્યા નિિયિાઁ કે ળપ્પન ઉેક ડડિશ્રેવે છૈ િ' શ્રોકના વાપકે િામસ હોઈ છૈ, શ્રો નિિયિા કૈંદમસવૈિ શ્રો શ્રાશ્સકિીમ ઉ પાઈ મઁગૈ છૈ િ� શ્રેન િમસાશ્િ મુદા દૂ ગો ટાકા વહાન ક' નિિયિા કે દૈિ છૈ।શ્રોકન શ્રપન છોટકી વેટીકે સંગ કનૈિ બાગનિક વ્રયિાહ્મે ળાશ્િ ળેડ વેટી નૂનયિા શ્રોિય સેહો ઉયિાઉન બ' કે શ્રાયઉ નહૈિ છૈક। સે શ્રો ળદિ્દ કનૈિ છૈક શ્રપના સંગે કશિોની નિિયિા કે સાસુન ઉ' ળાએ ઉ ,િઁ નિિયિાક કહઉ વ્રુપ્દિ વ્રઢ વ્રશિષ હોઈછ- ' હ્મ નૈ ળેવૌ ગે વહનિ। ઉેગ કહિ પેટ પોસૈ ઉએ શ્રાયઉ છૈ। વાપ નોગાહ બાએ ગેઉૈ ;દનિ ટગાિગેઉૈ નૈં ને િૂ ળાશ ઉએ કહૈ છહિ? નૈ ળેવૌ ગે વહીન, નૈ ળેવૌ।'

વૈદ્યનાથ હ્ા- ગુાઉ : એકટા પાઠકીય શ્રબમિાિ મેં ઉપ્પિિ છથિ- ગુાઉ ઉપન્યાસમે ળૌ હ્મના સઁ પુછી િઁ વ્રયાનાકન્ષક યનાિ્ન નિિયિા 'ક ઉગૈિ શ્રછિ- નયિોપ્પ,

સચિંદાંનપ્નચિ, સ્વ઼ાભાવિકી , પનિવાનક હિનિમે અપન સ'પ્પક ઠેઠ મોક નહિનિ નનિયિ઼ા નનિયિ઼ાક 'અમ્ડનસ્ટૈડગિ' દેપ્પયિ઼ૌક ળે અપને સ'પ્પ મનોનથ વ્યક્ન કનૈન અછિ,કોના પૂનન,નકન થાહ- પથાહ ભૈન અછિ, મુદા પનસ્થિનિ દિપ્પ યુપ ભ' ળાઇન અછિ યનનિ એહન યવઠ ળે ળેડકી વહીનક દેશ્રોન નેનૂક કુદૃષ્ટિ યીન્હ ળાઇન અછિ આ માય સઁ કહૈન છૈક- ' ઓકના કહી યઠ ળેનૌક'

અશોક " વ઼કિાસક અનઘોઠમે ગુઠ" મે ઠપ્પિન છથિ- મુદા ગુઠક સંસાન મે ળે સભ સઁ દેપ્પનુક પાન્ન અછિ સે નનિયિ઼ા અછિ વાનહ- નેનહ વનપ્પક છૌડ઼ા મુદા 'ળુઠમ' છૈ" ળે દેપ્પઠક સે દેપ્પને નહિ ગેઠ નનિયિ઼ા કકનો કછિ કહિ દૈ છૈ વાન કેહનો નહૌ, પ્પનાવ નહિ ઓૌ છૈ એક ટકા મે દૂ ગો વીડ઼ી દૈ છૈ નનિયિ઼ા કે દૂ ટા દેઠક ન' કહૈ છૈ , ' ઝહ વુઢવા,દૂઝય ગો' વીડ઼ી વાઠ એકટા આન દ' દૈ છૈ પાવ઼નોટી વાઠ કે કહઠક, હો , નૂ વડ઼ા કંળૂસ છહક' આ ઠહકઠહ પાવ઼નોટી ઉઠ ભેઠક કકનો કેના પ્પાઇન દેપ્પઠક ન' વાળઠ, ભૈયા,અપને ટા પ્પાઝ છહક' આ ઓ એગો કેના દ' દેઠક મુદા નનિયિ઼ા કોનો વાનક નોપ્પ નહિ નપ્પૈયે કોનો વાન ભેઠપન શ્રેન ઠગઠ કાળ મે ભીડ઼ ળાઇયે વૂઢૂ ળે એનનીટા છૌડ઼ી પુના ઘન કે સમ્હાનને અછિ મુદા છોટ ભાઝ છોટુઆ સઁ ઓકના નહિ પટૈ છૈ સદપ્પિન હૃહમહૃ યઠનિ નહૈન છૈ નનિયિ઼ા કેં ઘનક પનસ્થિનિકિ વોધ છૈ

વ઼દ્યાનન્દ હ્ના,ઠપ્પિન છથિ- ળપ્પન નનિયિ઼ા એકવેન પડ઼ોસક વનયિ઼ાકે છોટ વેટી સઁ કછિ ઠ' અવૈન અછિ નિ' સવ ઓકના દુનદુન ક' ઉઠૈન છૈક પ્પગઠે નહઠ પન ગુઠ ગાછી સઁ પ્પસઠ આમ વછિ કિ' ઠ' ળાય વઠ કેં કછિ નહિ કહૈન અછિ નનિયિ઼ા અપના ઠગક ગાછી વઠ કેં અપન ગાછીક આમ વીછિ ઉઠ પન ઠભી કહૈન અછિ મુદા અપને અનકન ગાછી સઁ ઠયિ્યી યોનવૈન ઓકના કોનો ઠાળ નહિ ,માનન ભાય હોઇન છૈ

કૃષ્ણમ મોહન હ્ના 'મોહન' એહિ પોથી માદે કહૈન છથિ- 'ગુઠ' અનુભૂનિકિ ગહનના મે ઠપ્પિઠ ગેઠ છોટ આકાનક પૈઘ ઉપન્યાસ થીક ગનીવ ળીનગકિ નમનૈન સંઘન્ષ ળકાઁ ,વૈન્ય ળકાઁ આ દુપ્પ-વ્યાધિ સહવાક અપનામિનિ શક્નિ ળકાઁ ।એકન અનનન પાનનાક સૂક્ષ્મના ગદ્યમે કાવ્યક આસ્વાદ દૈન અછિ આ શઠ્પિક સચેનનના સહળ , સ્વાભાવિકિ અભિવ્યક્નિ મે કથા કહૈન યઠ ળાઇન

अछि।ओ छोट कथाक पैघ उपन्यास मे लिखैत,एरवे नहि एकटा आर प्रसंग मे रनिया मालिक- मलिकाइनकि प्रशंसा करैत कहैत अछि जे- बंबई मे एक्के डाढ़मि दस बारह टा आमके घौदा छै। रनिया सोचने-ए ई घौदे मालिक कए दाए देबै।मालिक बड़ खुश हेतै। एक बेर रनिया गाछपक्कू आम लाए कए गेल रहै त' मालिक पचास गो टाका देने रहै। मलिकाईन खाइ लए देने रहै।
आओर गंगानाथ गंगेश ' उजरल- उपटल गुलोक गुलजार दुनियाँ ' मे लिखै छथि- एक रात नौ बजे मे दशरथ मंडल (पलाई मोल मालिक) के मुंशी गुलो लग एलै। कहलकै-गुलो भाय, एगो बड़का पेट के बात कहे ल आएल छियह। हमरा कंपनी पठेलकै-ए नेपाल मे एगो लड़का छै। कम्पनी के साहु के बेटा छिऐ। जथा- जाल बला छिऐ। बियाह मे जते खरचा हेतइ- दस बीस हजार से कंपनीए देतह। घरक लड़की जाए। सब किछु देखल सुनल । तोहर की बिचार से कंपनी पुछलहक-ए ।' आ चारि मास सोचैक बेटा सँ बियाहैक समय बैत एकदिन जुमकम सँ पहिनि अपने सबहि जाइछ। ताहि सँ पहिलुकवे गप्प-; गुलोक घर पछुआर मे दू टा कदम के गाछ छै। अनवर कहै छै- गुलो एकटा गाछ बेच लेह। चारि-पाँच हजार मे बिकिए जेतह ओहि सँ घर आ कल दूनू ठीक करा लिहह।' गुलो कहै छै- अनवर भाय, ई दुनू गाछ रनियाक बियाह लए राखने छिऐ।' अनवर अवाक् भाए जाइ-ए।
माय के मनो कयला पर चर ५०० मे रनिया पाडि आनि पोसलक ,ओकरा चारतै। दू दिन चर बरखा होइतो रहै से आरा पर मुँग तलकिय लागल रहै, रनिया करिया छौमी बछिलक। एक पौवा दाना नकिलै। से पहिल तोड़ मे सँ सतलेनमा के दालि खाय ल दाए एलै । ऊ बीस टका देने रहै। रनिया जुगाकए टाका राखलक,ककरो नहि देत। एहि तरहैं आरो संद्रज सुनल जाए! रनिया असकरे दू दिन मुँग(खेरहि) तोड़लक। एक-एक छिट्टा। एक दिन दूनू मायधी छोड़करा दू टा जनो तोड़लकै। रनिया मूंग सुखेलक। डंगोलक। आठ- नौ किलो तैयार भेल हेतै। एक छोहन और टुटतै। ओइ मे जे नकिलै। पानि जे नै भेलै से मुंग मुनहि भाए गेलै। गुलो कहै छै-'मूंग तैयार भेल छै से सभटा गतिहत कए दाए एबै। बेलावाली जोड़ई छै। हड़ लागलै,बीया लागलै,सबटा दाए एतै तऽ पूँजियो डूबि जेतै। कहइ

છૈ- " એતે ળે પ્યાયા જેઉ સે ઘા સએ દેવહ્ક? એહ્ન પ્યેતી ઊગ કિ કાતૈ? શ્રાળુનમા ગામ શ્રવતિ પહિ યાહ્ક દોકાનક મુંહ શ્રંગાના દિશન ઘુમવૈત ટાટ ળે ઊગૌઊક સે દમ ઘુટૈત ગુઊકે નૂગ્ન શ્રવસ્થામે પુંગેઊક। શ્રા મુરઊ વાપ ાનિયિા નહિ ળગા સકઊ। સે સાકાની શ્રીસ હળા પ્ાપ્ત ટાકા જાગનિ ગોડ્ટેઊ સઁ શ્રાવિ ગિતિમે શ્રપના શ્રોહિડિમ ઊ' ગેઊ। પ્ાતજાને ાનિયિા શ્રોઈ ડકહ્ાવા જાય સઁ સવ ટાકા ઙટયિાની સઁ યા મિઁગ શ્રિાનઊક। કોશકિનહ કૃષેત્ મે ાનિયિા સન શ્રનેકો શ્રાતિ પિછિાઊ-ગાીવ મુદા વહદુ ઊઊના શ્રપન ઉત્કાષ દેપ્યાવૈછ।

૨

હમા શ્રાદ્શ સ્મૃતિ શેષ સૂ્ય નાાયામ યૌયાી

સાહિત્યિકા-પત્કા શ્રા ાળનેતાક નૂપમે પ્ાપ્યાત સૂ્ય નાાયામ યૌયાી ળીક ળન્મ ૧૨ ળનવરી ૧૯૩૩ કેં મયુવની ળિઊક મગ્ળાપુ (ાળનગા) ગામમે સ્વ� ામઊપ્યન યૌયાી કે ઘા જેઊ છઊન્હિ।૧૯૫૦-૫૪ યિ શ્રો સી�એમ� કાૅઊળક ક' સ્નાતક છાત્ ાહઊહ। નતિ્ય દિનિ ગામે સઁ નોકા પ્યાઈક પહુંચવૈત ાહૈક। હિનિકા વાવાકે ાળઘાના દાગંગા સઁ સંપાક ાહૈક શ્રા પિતાળી વાદ મે ઘો ઊગક મહત ળીક પ્યળાંયી ાહ શ્રપનો દૂ મૌળેક ળગહ ળમીન સઁ પ્યેતી પૈદાવા કાાવથિ। યૌયાી ળીક પહિ વ્ાષગાંડ પા વહિાક વડકા ગૂમકમ જેઊક ળાહમિ હિનિક પૈતૃક પ્યપૈઊ જોતઘા ધ્વસ્ત જા' ગેઊક। યૌયાી ળીક વાઊ-વિવિાહ માનેયા ગામમે વ્ાતન સંગ જેઊનિ,ળાહસિં દૂ પુત્ી, એક પુત્ પ્ાપ્ત જેઊનિ। વડકી પુત્ી નુગ્ન વોાાક વયિાહ ઊઊમનયિાં જેઊક ળે મઊહનમા (નેપાઊ) મેં ાહૈત છૈક શ્રા પુત્ ામવાવૂક ઉત્શ્ વિનોદ કુમા યૌયાી વયિાહ વિાટનગા મેં પ્યડૌશ્રા નવિાસી ડા� ામળી વ્યાસક વહિ ઊક્ષ્મી સઁ જેઊનિ, છોટ પુત્ી નઊમ પ્ાજાક વયિાહ ડા� શ્રપ્યઊશ મંડઊ ળીક (મેહંદીગામ) સંગ જેઊનિ ળે વ્ાતમાન કટહિા મેં ાહૈત છથિ વો ગાજાશ્ત કૈવ્ાત સમાળ છથિનિ। યૌયાી ળી મગય વિશ્વિવદ્યિાઊય સઁ શ્રાગૂક શકિ્ષા પ્ાપ્ત કાૈત ગેઊે મેં નૌકાી કાય ઊગઊહ શ્રા કતેકો ટ્ાેડ યૂનયિન

आंदोलन मेँ सक्रियो रहि समाजसेवाक अभिप्राय सँ नौकरी छोड़ि देलनि। पिता केँ रेलवे मे नौकरी करैत छथि जे पटना जं� मेँ १० वर्षक बाद नौकरी छोड़ि समता पार्टी मेँ सक्रियो भेलैक आ दू बेर बाबूबरही तथा मधुबनी सँ निर्दलीय चुनाव विधानसभाक लड़लैक। पुनरपि सेहो जिला परिषदक चुनाव मेँ कम मतक अन्तर सँ हारि गेलहि। मुख्य विषय दिशि अबैत छी आब:-
समाजवादी नेता सूरज नारायण सहि जीक नेतृत्व मे संचालित अनेक भूमि आन्दोलन मेँ आ सक्रियो रहलाह। छात्र संगठन मे सेहो समितिक समाजवादी नेतृत्व स्थापित करैत प्रभावकारी भूमिका निभेलथि। सोशलिस्ट पार्टीक प्रचारात्मक एवं आन्दोलनात्मक काज मे अगुआ रहथि। बहिर आन्दोलन मे सक्रियो रहि स्वामीश्वरनाथ नेमुक संग मलिकए लुक्कड़ करि सम्मेलन, नाटक आ चित्र प्रदर्शनिक आयोजन पटना मे करथि। आपातकालमे गामक खेत बेचकिए प्रेस खोललनि आ गुप्त साहित्यिक प्रकाशन,तकर वितरण सेहो करैत छलाह। जीविका निर्वहन लेल किछु दिन लेल स्टेरसँ दानापुर मे रेलवेक नौकरी केलैथ। सूर्य नारायण बाबू बहिरक एक पैघ मेचारी, परिश्रमी आ दूरदृष्टी रचनाहिर रचनाकार रहथि। बहिरक अतिपिछड़ी ऐनेक्सर-१ केवट जाति सँ रहथि, एहि पृष्ठभूमि सँ कोनो व्यक्ति लेखनमे एतेक नम्हर मूल्यक नहि भेल रहथि। १९६८ ई�मे रेमुजीक सहयोगे रचना नामक साहित्यिक संस्थाक स्थापना केलनि जकर ओ सचिव रहथि। १९८१ मे कर्पूरी ठाकुर जीक प्रेरणासँ श्री लालू प्रसाद आ सच्चिदानंद जीक संग राजगृहमे साहित्यकार, बुद्धिजीवी आ राजनीतिज्ञ सभक एकटा मंच बनाय संपूर्ण क्रांति एवं कौमी एकता सम्मेलन केलनि। चौधरी जी भारतक समटा राज्यक यात्रा करैत संबंधित क्षेत्रक लोक जीवनक वृहत अध्ययन केलनि। यात्रा संस्मरण "पूर्वांचल की यात्रा" खूब लोकप्रिय हिन्दी पोथी भेलनि। तहि सँ पूर्व समय की यात्रा-परिचय प्रकाशन हापुर सँ प्रकाशित भेल रहय जाहि पर पुस्तक समीक्षा पाटलिपुत्र टाइम्सक पृष्ठ ४ पर १२ जुलाई १९८७ केँ डा� अमर कुमार सहि छपबौने रहथि। चौधरी जी प्रमुख राजनीतिक पत्रिका 'दिनमान' मे स्थायी रूपे प चारावाहिक

શ્રાઉપ્ય ઉપ્પિને છથિ,ળે ઇંટરવ્યૂ, યાત્રાવૃત્તાંત રૂપે છપૈત રહલૈક। ૧૯૬૮ મેં રોઉ હ્ડ્તાઉ મે ળેહ્ઉ ગેઉાહ શ્રા પ્રેસવ્રઉિ વ્રિરોધી શ્રાંદોલન એવં મંડલ શ્રાયોગાક સહ્ટિરાશિ ઉાગૂ કરેવા ઉઉ શ્રાયોળતિ પ્રદર્શની ધ્યાતિ શ્રપન ગતિશ્વતાટી દેઉનિ। ૧૯૮૫ મેં મધુવની વિધાનસભા સઁ ચુનાવ ઉોકદઉ ટકિટ પર ઉડ્ઉથિ શ્રા એહિ દેઉક પ્રાંતયિ કાર્યં સમતિમિ ૧૯૮૬મે સેહો મનોનીત કર્પૂરી ળી દ્વારા ૧૯૮૮ મે ભેઉાહ। શ્રાકાશવાણી શ્રા દૂરદર્શનક ઘેરાવ કાર્યક્રમ મે હુનકા પુઉસિ વર્વર રુપે પટિને રહેકાવો વહુત વર્ષ ધરિ કાંશ્ચી હાઉસક શ્રળાત્રિ હ્સ્સિા વનઉ રહઉાહ; એહિ વાને મે શ્ચેર કહિયો વિસ્તાર સઁ વુઝાયબ।

'વહિાર કી શ્રસ્મતિા' પુસ્તક શબ્દના દર્દિઉી સઁ ૧૯૯૧ મે સાહત્યિ કેન્દ્ર પ્રકાશન સઁ વહરાયઉ છૈક ળે શ્રો શ્રપન શ્રયકિાર ઉઉ સંઘર્ષ કરય વાઉા તમામ વ્યક્તિકે સમર્પતિ કયને છથિ। એહિ દોસરો પ્રકાશક છપાઇ કેઉક ,હુનિક પ્રકાશ્યકૃતિ મે પૂર્વાંચઉ કી યાત્રા, સમકાઉીન પરિવેશ કી કાઉી યાદેં વ એકટા કાવ્ય પુસ્તકિા છૈક।૭ મઇ ૧૯૯૦ કે વહિાર વિધાનસભા ક્ષેત્ર સઁ એમએઉસી ળનતા દઉ વનેઉકૈન પરંચ ૧૪ શ્રપ્રૈઉ ૧૯૯૧ કેં શ્રચાનક દર્દિઉીક વત્તરા હોસ્પીટઉમે હ્ૃદયગતિ સદા ઉઉ રૂકિ ગેઉનિ। હુનકર શ્રસામાયકિ નધિન સઁ દૂ દનિ ધરિ પટના દર્દિઉી દઉમઉતિ ડઠિ ગેઉ,કર્પૂરિક તઁ શ્રો સામાળકિ ન્યાય કેર ઉડાઇ ઉડૈવાઉા એક સમાળકિ યોદ્ધા રહથિ। એક સમય કેર પ્રતવિદ્ધ વૌદ્ધકિ ચૌધરી ળીક પરવિાર મે શ્રનુકંપા નહિ ભેટઉૈક ,ળખન કિ શ્રોહિ સમય મેં વહુતો રાળનેતાક વંશળ ઇ સુખ પાવૈમે શ્રગૂએઉૈક। શ્રાઇ એકટા શ્રદદ સ્મારક ઉઉ હુનકા ચાહૈ વાઉાક વીચ ળવરદસ્ત શ્રભાવ ખટકિ રહઉૈક શ્રછિ। એહન પ્રખર વિદ્વાન મનીષિ મિથિઉાંચઉક એકટા શ્રાદર્શ છઉાહ। શત્-શત્

૩

સર્વશ્રી રાસવહિારી દાસળી :એક વિષય કર્િતન ળ્ઞાતા

મધુવની ળઉિક કોશીક્ષેત્રક દેવનથપટ્ટી ગામમે કર્પૂરિ કુઉક વાવાળી કામત(મંડઉ) ઘર શ્રાઇ સઁ કરીવ સયશાઉ પુર્વ એક ચર્ચાર વાઉકક ળન્મ

भेल रहनि।ओ नवजात शिशु रहय नासबहिानी जी।बाल्यकाल्यमे हुनकर माय गुजरि गेलीह त' सनौती बालि(कुलाय चौधरीक बहिण) विमाता लालन -पालण केलकनि।हुनकर मातृक वशिष्ठपुर जन्मिसुपौल मैं दू ममियौत भाय चतरी आ महादेव तथा बसुलीमे दू मसियौत भाय यदु एवं जोतीष रहथिन।हिनक बाल विवाह सुनयिाहि जन्मभुवनी निवासी रामजी कामत जीक बेटी बरहनयिा देवीक संग भेल रहनि।जाहि सँ हुनका तीन पुत्र आ तीन पुत्री भेलनि। जे क्रमशः चन्द्रकला (मुजयिासी), त्यागी उत्कृष्ट रामनारायण,वैरागी, सुन्दरकला (कनौली), सत्येन्द्र आशोर दुर्गेश (चावघाट) छन्हि।श्री दासजी रमैत वैष्णव रहथि आ गरीबीमे जीवन बितैत छलन्हि।तहि समयमे कुम्हारक माटिक बासनमे सबकयिो पाक आ भोजनलै बर्तन व्यवहार करथि।से बचपनमे ई कोको घैल आरि कनप्पा बाहर कय,ओहिमे कागत साटिक खुजी बजबय लेल छारथि।तहि गनिन गनिनायात ता गीनसुपट आबाज निकालथि।केराक थम सँ ढोलक आकार केर गरदैनमे लटका कैं डमिकि डमिकि डम डम्मआ गपचर्य गपचर्य गम गम्बूव ताल बजाबैथ।कतौह गान बजान नेनामे देखथि त' एकहाथ देवालल कोनो चनानयि चकै के चकचुम ,चक्कै के चकचुम,मकई के बगीया। चना बजाकय पना जाथि।से विवाह भेलासन्ता जे गाम सँ पड़ेलाह त' चुन सीखैत(स्वंजगारनाथी कामत) गौआंके कलकत्तामे देखेलाहातायचना लोक हनिका मादें स्यह बुद्धेक जे कतौह मरा- खैप गेल हेतैक। कलकत्ता मैं एक नामी नामवला थियेटर कम्पनीमे ठेका बजेबाक काज मांगने रहथि,त' मैनेजर साहेब जाँचमे अनारी मानि हटाबय चाहलका।हुनका सँ अनुनय विनय करैत चौका केर काजक बहाने रहैत ,सब तरहक साज बाज बजौनाई सीख गेलाह।कोको तरहक आधुनिक वाद्ययन्त्र केर मास्टर आ अजानिय कलामे पारंगत भेलाह।पुवा भेलापर मारवाड़ी समाजके सहयोग सँ अपन खुदसर मण्डली बनौलनि।जिनका मंडलीके बिहारक नृत्य करैत बंगाल सीमान सँ टपलाह आ कार्यक्रम प्रस्तुत करैत जे कैया पुष्कर जन्मा भेल छलनि से पटा भोजपुरिया संगतिया ल'कैं नाटको नाटक पार भ गेलैक।पोशाक आ पर्दा सेहो संगे ल'भागलनि।सात दनियरा ओहि सोगे अन्न जल त्यागने छलाह।स्तेर

सब घुमैलक कलकत्ता दर्शन,ओतय स्टेज सँ मारवाड़ी समाज दिस सँ मंडली नीकी चलेबाक लेल आर्थिक मदति केलैन, जेकरालोकहिन कार्यक्रम विषय कीर्तन मंडली बनाकय संयोजित कायमे लागि गेलाहायामिक सांस्कृतिक जागरूकता लेल हुनका संग ढोलक वादक जीतन कामैत(अलोला) नाम गुलाम यादव- हाईल (नविमा)गामेक मोहनजी सहि हामोनिमावादमे जागीन वसुआनकि सोमन जी,गंगापुरक दुखी ठाकुरजी (कम्पाउण्डर)पनसिंगा पुरैनाभेपालमे श्री लछमी पावू क' (अलोला नविसी)गायन बजानमे डकैता रहि ढोलक बजबैत अपना सँ दोबर उपर उछालि स्टेज लोकि ताल पकरेने रहथि यंगेली मेलामेबहुतो शहरमे हनिक कार्यक्रम देखि पुरस्कार देल गेल छलन्हलिष्यन शक्तिनिास खंड सुनैत एक प्रखर बुद्धिक लोक बाजल रहथि ई कहियो नामलीला अवश्य कयने हेताहजाहि समयमे वहिार हारखंड एक राज्य रहैक आ १६टा जिला मात्र रहैक, ओहि समय दरभंगा जिला परिषद केर उपाध्यक्ष आ मधुबनी लोकल बोर्डक चेअरमैन बाबू खुशी लाल कामत हनिका संकीर्तन प्रतियोगितामे पुरस्कृत कयने छलनागाम देहात सँ लोक कैं एहेन गवैया जीके स्टेज सुनयमे दोसर नहि उजैक अछिहुनकर दू घंटाक विषय कीर्तन सुनैत देरी हमरा देहमे जेना अनुदेरय तरंग उठि जायाहैरमुनियाँक मधुर आवाज कैंबन्द करै छै जैकोटक चेनक जीहार जकाँ खीच दैतथिकोशी तटबंधक बरका बाढ़ि बनि गेलापर गाममे नाट्यकलाक आरम्भ कयलनातकर संयोजन मे जगह परक मंडील हनिक आश्रय स्थल बनल आ संरक्षाम दैत स्व० बालगोविंद सहि जीहनिक नातिक सीखाओल नोहलसल कैं याटपा हटनी सँ जुबक लोकनि टाटआनिदेखैत बादमे दुर्गापूजा मैं प्रदर्शन करैत गेलैकाओई सँ पूर्व हटनी भूतपूर्व अशेसर लीत कामत पोखैर प्रांगण जे कोशीसँ कुदरती परिवर्तन भ' गेल रहैक,तय मैनहि गामक नाटककार लोकनिक साटापर प्रस्तुत होइत रहैकागामक दूबेर सार्वजनिक काली पूजा देखकय अगहन १९८८०९०मैं एहि परिवार यना याम सँ परग्रावनामीय नास वहिनी दास जीक महाप्रयाण गामहिमे जेलनाएहि लघु आलेख मे बहुत आंकड़ा वह तथ्य समा नहिं सकल।

श्रद्धा सुमन अर्पित करैत छथिन हम।

४

स्व. हरिनंदन कामत जीक गाम मंगरौनी

मधुबनी जिला मुख्यालय सँ ३ किलोमीटर उत्तर भाग घना बस्ती अवस्थित छैक मंगरौनी। एहि आदर्श ग्रामके परिधिमे २५० परिवार केवट (करुट) अमात ५०,धानुक १४५, मल्लाह ७, नाई २५, कुर्मी४, यादव१००, कायस्थ एक घर, सोनार ब्राह्मण ५, ब्राह्मण ६०(भलमानुष) केर अतिरिक्त १०० गृहस्थ ब्राह्मण बसैत रहथि। एहिगाम तप करवाक उद्देश्यसँ आबि सिद्ध गाम भेलैक आ कछु लोक अन्तय उपटकिए जा बसलाह। अध्यात्म क्षेत्र मे स्वर्गीय मदन उपाध्याय तान्त्रिक मच्छिन्द्रनाथ जे बाबा गोरखनाथ केर समकालीन छलाह, हुनके काका पं� गोकुलनाथ उपाध्याय कर्मकांड धार्मिक दृष्टिकोण रखने मिथिला मे प्रसिद्धि प्राप्त केने रहथि। वर्तमान मे आबि गाँव हुनके वंशज बसल छथि। एहि गामक दक्षिण मंगल दोनी रहैक जाहिगाम मौयक बहुतायत उपलब्ध होइत रहैक तैं एहिगामक लोक कालांतर मे मधुबनी नाम उच्चारण करय लगलैक। गामक सटल दक्षिण सँ एकादश शिवदर्शन लेल मुख्यतः दूर-दूर धरि भक्त लोकनीक आगमन होइत रहैत छैक। १९५७ ईस्वीमे पंडित श्री मुनीश्वर झा धर्माचार्य तान्त्रिक द्वारा सेवैत पंडित श्री जय ना� झा ज्योतिषाचार्य कुटी स्थापित केलनि जे श्री श्री १०८ गौरीशंकर राधेश्याम स्थान (देवसभा) कहबैत छैक। धर्मानुरागी-यात्रीके गरमी मे स्वर्गीय मैथरा राउत मधुबनी द्वारा बनिली पंपा उपलब्ध छैक। एकादश रुद्र तीर्थ स्थल क्षेत्र मे शुमार भ गेल छैक।यैह केर लग मुख्य दर्शनम पापनाशनाय पैघघंटा लागल दृष्टिगोचर भेलाहनि भाग सँ बसहा आ बामकात सँ शेर पाथर केर बनल छैक जे बड़ मनमोहक दृश्य उपस्थित केने अछि। एहि सिद्धिद्वारक बगलमे आध्यात्म, यति-पूजन विशाल भवन बीच सभाकक्ष केर प्रवेश मध्यमे त्रिशुल प्रतीक सेहो दर्शनार्थी के आकर्षित करैत य। एहि गामक दक्षिणवारि टोल मे बुढ़ी माय स्थान ७००

વ1સ પુ1ાન છૈક, મંદિ1 પુ1નનિ્માણ કાળ ભેઉક। દુ1્ગાળી દ1્શન ઊઊ પ1ોપટ્ટાક ઊક એનય़ શ્રાવિ શ્રાશીષ માંગૈ1 દેપ્પાઇછ। ૨૦૦ વ़1્ષ સઁ પૂ1્વ़ાની ટોઊ મે દુ1્ગા પૂળા દ1ભંગા મહા1ાળા કાઊસઁ હોઝ1 શ્રવૈ1 છૈક। પશ્યમિ ટોઊ મે દુ1્ગા ળીક પૂળા પ્1યાન છૈક, એનય़ પ્પેઊ-1માશા નહિ ઊગૈ1 છૈક। એહકિ ઊગ સટઊ પુ1ાન મંડીઊ ૩૦૦ વ़1્ષક છૈ ળે ૧૧ ઊખ ટાકા ઊગ1 સઁ ટોઊવૈયાક શ્રા1્થકિ મદૈ1 સઁ કાળ સુસમ્પન્ન ભેઉક। એનુકા પાખ્1કિ ગાછ યા1્ની ઊઊ શ્રાસ્1ય़ સ્થઊ 1ુપે વ़ખ્પિયા1 ભેઊ છૈક। એહિ મંડીઊકે કનેકવે ઉ1્1 ભાગ માઁ કાઊ (શ્યામા માય़) મંડીઊ શ્રા પૈઘ પોખ્પૈ1 છૈક, 1ક1 પછવ1ાયિ મુહા1મે મહા1ાની કામ સુંદ1ી કે નામ સઁ ઉ1્ક1્મ1િ મધ્ય વ़િદ્યાઊય यૈઊ1 છૈક। મહા1 પ1 શાનદા1 ઘાટ શ્રા ગોઊ યવૂ1ા શ્રાળાદી પુ1્વ़હકિ વનઊ છૈક; ળઊ યવૂ1ાક નિ્માણ કાળ 1ત્કાઊન મહા1ાળા કામેશ્વ़1 સહિ દોસ1 વિયાહ એનય़ કેઊનિ શ્રપન મનમ1્ળી સઁ એક ગ1ીવક વેટી સઁ। હુનકે ડીહક ઉ1્કૃષ્ટ1ા શ્રા જૂમકિ 1મણીય़ વનેવાક પ1મ ઉદ્દેશ્ય़ મે કેને 1હથિ।એહિ સ્થાનકે 1ાળ નગ1 સઁ ળોડ़કિએ વ़િસ્1ૃ1 શ્રધ્યયન ક1વાક પ્પગૌટ વુહાઇછ। એહિ ગામક નેયાયકિ સંદ1્ભા1: ય1્યા દોસ1 પ્પેપ ક1વ। એહિ ગ્1ામક સ્વ़નામ ધન્ય़ સ્વ़1્ગીય़ હ1નિંદન કામ1 ળી કોઊકા1ા મે પ્પૈટિ ૩ કટ્ઠા ળમીન મધુવની ઊહ1ાયિગંળ વાયમે ઉપા1્ળન કેઊથિ ળે ૧૯૭૬૬�શ્રપ્પઊ ભા1ા1 કૈવ़1્1 કઊયાણ સમિતિ કે છા1્1ાવ़ાસ ઊઊ સંપૂ1્ણ 1કવા દાન-પ1્1 દસ્1ાવ़ેળ વનાકે દૈ1 શ્રતિ પછિડ़ઊ સમાળ કે છા1્1 (કેવટ) કે પહિઊ વે1 મધુવની ળિઊ મુખ્યાઊય़ મે ઉપઊવ્ધ કેઊનિ, એહિ છા1્1ાવ़ાસક નિ્માણ ૩ કમ1ા ૧૯૮૦ મે ભેઊ, ળિ1્મ્મોદ્વ़ા1 ઊઊ ક1ેકો માનનીય़ 1ાળને1ાક એચ્છિક કોષક સહયોગ ભેટૈ1 1હઉક। શ્વે1 દોસ1ો દા1ા કિયો એહન શ્રવ़દાનક ઊઊ એહિ ગામમે શ્રાગૂ શ્રાવિ સ્વ़1્ગીય़ કામ1 ળીક સહય1 વનિ શ્રપન નામ ળગળિયા1 ક1થિ સે શ્રાશ ળગૌ1સન ભ' 1હઊ હન। એહિ ગામકે શ્રપન પૈ1ૃક એઊ�એન� હા સન વ़િભ્૧ઓ કહૈ1 છથિનિ, શ્રા સે ૫ ટા શ્રાઇ�એ�એસ�-શ્રઇ�પી�એસ� શ્રાશ્રસિ1 એનુકા વેટા વનઊહ। શ્1ી વ़િનોદ કુમા1 વહિા1 1ાળ્ય પ્1શાસનકિ સેવ़ા સેહો એહિગામક 1હવાસી થિકાહ। એહિ ગામક માઁટકિ હમ યંદન વંદન શ્રાશ્રો1

શ્રભિનિંદન કરૈત છી।

૫

સવ કરૈત છૈક પ્નામામ્

સ્વતંત્રતાક શ્રમર સેનાની સ્વ�શ્રનન્ત લાલ કામત જીક પુણ્ય સ્મરણ હોઇત એકટા ચરિત્ર માનસ પટલ પર શ્રવૈત શ્રછિ। સ્વાધીનતાક ગાઁધી સન મુખ્યાક ૃતિ શ્રાભા શ્રા મોટગર રંગહીન ખાદીક કમીજ-ધોતી શ્રા ચેશમા પહિને ધરબ્બાના ગામછા કાન્હપર સજલ એક માહત્મા જી સઁ ગાડ્વા ગામમે પહિલેર ભેંટ કરૈત છી; તઁ નામ-પરિચય જનલાહ શ્રા પુછૈત વજલાહ કતેકમે પઢૈત છી વાઊ। હમરા મુઁહસઁ જે શવ્દ વહરાયલ તઁ કેર પ્રશ્ન કેલનિ પીળી� ડીશ્રારડી� કરૈત એના પાહુન જગદીશ કામત જીક સંગ કતય વૌશ્રા ઠહના રહલ છી। હમર ઉત્તર સુની જે ર્ગ્નુસઁ ઘરે વૈસલ પત્રાચાર કોર્સ ક' રહલહૂઁ શ્રછિ શ્રા પરીક્ષાલેલ તીન વેરક શ્રવસર દેલ ગેલૈક શ્રછિ સે મુજફ્ફરપુર ડૉ� શ્રમ્વેડકર પૂનવરસિટીક લાર્ચ્વેરી મૈં જા પરીક્ષા દેલહૂઁ । શ્રો શ્રાજાદીક સંગ્રામક શ્રા રચનાત્મક કાર્યક્રમક સંગ-સંગ જાતીય મહાસભાક કાજક ચર્ચ કરૈત ભાવ વિભોર હોઇત રોદન કરય લાગલાહ। હુનક પ્રશ્નનતાક નોર સઁ ભસિયાઇત ર્ે સમાજ મહ્યાર સઁ શ્રાપ્પતિ કહિયા ધરતિ કતવાહ લાગત। હુનકા વાજે મે સ્વ� નામ નાગરાયણ મામ્ડલ જીક તર્ક ભેલનિ જે દૂ શ્રધ્યાય મૈં શ્રાજાદીસઁ પૂર્વ શ્રા વાદક સમય કાલ ખણ્ડ મે કાર્યક લેખા જોખા હોઇત। પ્રખ્યાત સમાજવાદી ચરિત્રક, વિચારક, નિરપેક્ષ, સમાજસેવી, શક્ષિાપ્રેમી, ભારત સરકાર,દ્વારા તામ્રપત્રસઁ સમ્માનતિ સ્વતંત્રતા સેનાની વાવૂ શ્રનન્ત લાલ કામત જીક જન્મ શ્રી સ્વ� હરિનંદન કામત એવં શ્રીમતી ખજની દેવી જીક ઘર ૧૦૮ વર્ષ પૂર્વ ૧૯ જનવરી કેં ઘોઘરડીહા પ્રખંડકે ગાડ્વા ગામમે શ્રતિ પિછ્ડા વર્ગ કેવટ જાતમિ ભેલ રહનિ। હુનકર વાલ વિવાહ સૂર્યકલા દેવીક સંગ ભેલનિ,જાહિ સઁ ચારિ પુત્ર એક પુત્રી ભેલનિ । વો સનાતન હિન્દૂ ધર્મકે માનૈત વૈષ્ણવ છલાહ। કેવટ સમાજ શ્રપન ર્તિહાસ જાનવાક લેલ્સા જરૂર રખૈત હોયત। વહિાર શ્રા નેપાલક મથિલિા પ્રક્ષેત્ર મૈં લગભગ એક કરોડ઼ શ્રાવાદી વાલા કિવૈટ કેર કેવર્ત શ્રા કેઉટ (કેવટ) જાતિ

नाम सँ १८३१ ई� मे ब्रिटिश हुकूमत सर्वेक्षण करैत रहैक। ताहिमे निषाद - मल्लाह केँ पृथक रूपे संख्याँकित देखाओल गेलैक जे वर्तमान काल मे गोढ़ी सहनी समाज कहबैत अछि। ओ जलचर आ थलचर (कृषिकार्य) रूपे अलग-अलग आदी - विवाहक तत्कालिन सामाजिक संस्कृति सँ अलगाज मे पड़ल छी। ओना मैथिली पंजी प्रथा अनुसारे कूर्मी जातिक अंगक रूपमे केवट धानुक आ अमातक गणना होइत अछि। मुदा वास्तविकता किछु और छैक। गोटे कहने छथि" राष्ट्रकवि वियह होताह जे देशक सभ्यता अपन जातिक इतिहासक सब प्रमुख घटनाके परस्परिक समन्वयक सन्धान पाबि गेल होएब। जनिका इहो ज्ञात नै सकल होय जे हुनक जातिक इतिहासमे कोन - कोन गम्हर घटना घटित भेल छैक। "तकर परिणाम की भेलैक हुन? हरेक जातिक अध्यात्मिक विशेषता होइछ , कोनो संस्कृतिक वैशिष्ट्य होइछ संसार आ जीवनके देखबाक दिव्य दृष्टि होइत अछि। जे कवि एहि दृष्टि - बोधके अभिव्यक्ति दै' सकय, सैह राष्ट्रक राष्ट्रकवि कहेबा जोगर होइत छैक' केवट जातिमे आखिर राष्ट्रकविमे नामित के भेलाह अछि? जखन कि बहुतो काव्य रचनाकारक कृतिक प्रकाशित नै भेल छैक। एहि लेल राष्ट्रीय राजधानी मे वृहद, विमर्शक आवश्यकता समय केर मांग छी'आनन्द बाबू आ हुनक संगी मास्टर साहेब आनन्द शरण जी अपना जातिमे राष्ट्रकविक निर्धारण परेखय सेहो चलल छलाह। सब� शरण जीक स्टेचू बनिकै बिजोजितमे सेहो राजस्थान सँ आबि गेल छैक जे स्थापनाक बाट जोहैत अछि।

अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

२४.𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝- 𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱𑒬𑒱𑒐𑒰 (𑒦𑒰𑒑-२७)



𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝 (१९६०-), 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 - 𑒋𑒧. 𑒋., 𑒢𑒻𑒯𑒩- 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒣𑒣𑒳𑒩, 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰, 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩- 𑒑𑒼𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰𑒩𑒲 (𑒥𑒪𑒯𑒰), 𑒫𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒫𑒰𑒮- 𑒩𑒰𑒿𑒔𑒲, 𑒗𑒰𑒩𑒐𑒝𑓂𑒛। 𑒗𑒰𑒩𑒐𑓀𑒛 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒋𑒫𑓀 𑒥𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒳𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒑𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒣𑒩𑒱𑒨𑒼𑒖𑒢𑒰 𑒣𑒠𑒰𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒠𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫ृ𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒪𑒹𑒐𑒢।

𑒁𑒑𑓂𑒢𑒱𑒬𑒱𑒐𑒰 (𑒦𑒰𑒑- २७)

(𑒧𑒴𑒪 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲- 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒖𑒱𑒞𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒏𑒩𑓂𑒝, 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠- 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒩𑓂𑒝)

𑒏𑒟𑒰 𑒁𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱:

ઉર્વ઼શી આ રાજા પુરૂરવ઼ા અપન ગૃહસ્થ જીવ઼નક ઉપભોગ કરવ઼ા મે દુનિયાઁક સવ કિછુ વિસરિ વ઼્યસ્ત ભઽ ગેલ છલાહ।

આવ આગૂ:

રાજા પુરૂરવ઼ા આ ઉર્વ઼શી વ઼િવ઼ાહિત જીવ઼ન મે અપન પ્રણય સંવંધ કે પ્રગાઢ઼ સઁ પ્રગાઢ઼તમ કરવ઼ા મે વહુત વ઼્યસ્ત ભઽ ગેલ છલાહ। રાજા અપન રાજ્ય સંચાલન આ પ્રજા કે સમસ્યા સઁ દૂર ભઽ કઽ ઉર્વ઼શી કે સૌંદર્ય પાશ મે આવદ્ધ ભઽ ગેલ છલાહ।મુદા એક કાર્ય હેતુ ઓ સતત સજગ રહૈત છલાથિ। શેષ સવ કિછુ વિસરિ ગેલા કે ઉપરાન્તહુ ઉર્વ઼શીક શર્ત ઓ એકો ક્ષણ નહિ વિસરલથિ।ઓ અપન સમસ્ત શક્તિ સઁ આ સદિખન સજગ રહિ મેમના સભક રક્ષા મે લાગલ રહલાહ। ભલે દુનૂ ગોટે કોનો ઉપવ઼ન મે રહથિ અથવ઼ા કુનૂ આશ્રમ મે!મુદા ઉર્વ઼શીક દુનૂ મેમના સેહો હુનકા દુનૂ પ્રાણીક સંગહિ દેખવા મે અવૈત રહૈત છલ। રાજમહલ મે સેહો એકટા સુન્દર સન સજાય઼લ કક્ષ મે દુનૂ મેમનાક નિવ઼ાસક વ઼્યવ઼સ્થા કએલ ગેલ છલ। દુનૂ મેમનાક રક્ષાક લેલ સદિખન દૂ ટા પહરેદાર ઓહિ દુનૂ જીવ઼ક સંગ રહૈત છલ। જેના આદમી સંગ પરછાઈં રહૈત છૈક,ઓહિના દુનૂ મેમના સંગ દુનૂ પહરેદાર રહૈત છલ। ઓના પરછાઈં તઽ અન્હાર મે આદમી સઁ વ઼િલગ ભઽ જાઇત છૈક,મુદા પહરેદાર અન્હારહુ મે તત્પર રહૈત છલ મેમનાક સુરક્ષા મે। ઉર્વ઼શી સેહો રાજા પુરૂરવ઼ા સઁ અત્ય઼ંત પ્રસન્ન છલીહ।રાજા પુરૂરવ઼ાક સંગતિ મે પ્રસન્નતા એવ઼ં ચંચલતા જેના હુનકર અવ઼િભાજ્ય઼ સ્વભાવ વનલ છલ, જે સદિખન હુનકા સંગહિ રહૈત છલ। કખનો કાલ હુનકર ચંચલતા રાજા કૈં સેહો પરેશાન કરૈત છલનિ, જાહિ કારણેઁ ઓ પરેશાન ભઽ જાઇત છલાહ।આ ઉર્વ઼શી સઁ પિત જાઇત છલાહ,મુદા આપસી ઝગડ઼ા માત્ર ઉનકા સવહક મધ્ય઼ મધુર તકરાર છલન્હિ। હુનકા દુનૂ કે મધ્ય઼ હોઇ વલા તકરાર કહિય઼ો કલહ કે રૂપ નહિ લૈક। ઓના તઽ પતિ-પત્નીક મધ્ય઼ હોઇ વલા તકરાર કે એક અલગ આનંદ હોઇત છૈક। જાહિ ઘરમે જઁ કોનો નોક-ઝોક અથવ઼ા તકરાર નહિ હોઇત છૈક તખન ઓ કેહન ઘર અછિ। ઈ નોક-ઝોક અથવ઼ા તકરાર વૈવ઼ાહિક જીવ઼ન કે સુખક એકટા મહત્વ઼પૂર્ણ અંગ થિક। નારીક

चंचल व्यवहारक कारणेँ बाला मे चंचलता आ चपलता सन गुण बहुत तीव्र गति सँ विकसित भऽ रहल छल,सदिखन शान्त आ गंभीर रहए वला बाला उर्वशीक सान्निध्य मे एहन चंचलता आ चपलता देखबैत छलाह जे देखि कतेको बेर उर्वशी सेहो आश्चर्यचकित भऽ जाइत छलीह आ हुनका सोहाँ मे ओ अपन पराजय स्वीकार कऽ लैत छलथि। एक दिन दुनू दंपति प्राकृतिक रूप सँ बनल एक सुन्दर झील लग बैसल प्राकृतिक मनोरम दृश्यावलि देखि आनंद लऽ रहल छलथि। बाला एहि दृश्य मे बेसी डूबि गेल छलाह।एम्हर उर्वशी धीरे-धीरे उठि गेलथि आ हुनक दृष्टि सँ बचैत चुपचाप एकटा गाछक पाछू नुका गेलीह। पुनः ओ धीरे-धीरे जा कए ओहि वृक्ष केर डारिसँ झूलि गेलीह।आ फेर धीरे-धीरे एहि शाखा सऽ ओहि शाखा पर चढ़ैत ओकर पात सघन बीच नुका कऽ बैसि गेलीह। अचक्के बाला किछु पुछलथि उर्वशी सऽ,जखन प्रत्युत्तर नहि भेटलन्हि,बाला घुमलथि उर्वशी के दिशा मे,ओ विचलित भऽ गेलथि हुनकर स्थान रिक्त देखि।आश्चर्यचकित भऽ ओ एम्हर-ओम्हर अपन दृष्टि घुमाबय लगलाह।ओ व्याकुल भय सब दिशा मे एम्हर-ओम्हर तकलनि,अपन दृष्टि घुमा-घुमा कऽ उर्वशी के तलाश केलथि,मुदा कतहु नहि भेटलन्हि हुनकर प्रेयसि उर्वशी।आब बाला अत्यंत भयभीत भऽ गेलाह आ उर्वशी कें तीव्र आवाज मे बजाबय लगलाह,मुदा उर्वशी नहि एलीह। बाला हुनका नहि भेटला पर चिंतित भऽ गेल छलाह।मुदा ओ ओतय सँ उठि कऽ कतहु दूर चलि कए हुनकर तलाश मे एम्हर-ओम्हर सेहो नहि जा सकैत छलाह,कारण हुनकर दुनू मेमना के ओहि बियाबान मे छोड़ि कतहु जेनाइ संभव नहि छलन्हि।एहन स्थिति मे हुनकर कुंठा आ तामस बढ़ि रहल छलन्हि। ओहि कुंठा मे ओ "उर्वशी!उर्वशी!उर्वशी!"आवाज देलथि।ओ जोर-जोर सँ आवाज दऽ रहल छलथि आ अपन दृष्टि दूर-दूर धरि पसारि ताकि रहल छलथि उर्वशी कें। झील के चारू कात आ ओहि पार अपन दृष्टि के सीमा तक देखबाक प्रयास कऽ रहल छलथि।उर्वशी कें नहि भेटला पर अत्यंत दुखी भऽ कऽ ओ घबरा कऽ और दूर तक हुनका देखबा हेतु एखन ठाढ़ भेल छलथि,तखनहि ऊपर गाछ पर सँ उर्वशी "चम्म" केर आवाज करैत नीचाँ

धरती पर कूदि कऽ पुनः राजाक कान्ह पर बैसि गेलीह। राजाक घबराएल मुखमंडल देखि उर्वशी ठठा कऽ हँसय लगलीह।उर्वशीक ई शरारती चंचल व्यवहार देखि राजाक क्रोध क्षण भरि मे समाप्त भ' गेलनि,आ ओहो हँसय लगलाह। राजा उर्वशीक संगति मे रहि कऽ चंचल आ शरारती बनि रहलाह। हुनक चंचल शरारती मोन मे उर्वशीक एहि शरारत कें आओर बेसी भारी शरारत सँ प्रतिउत्तर देबाक विचार उठलनि।एहि लेल ओ एकटा खतरनाक खेल करबाक विचार कएलथि।जखन उर्वशी मेनका सखीक संग खेलाइत-खेलाइत ओकरा दूर के दुलार करबा मे व्यस्त छली,ओहि काल राजा पूरबा गहीर झील मे घुसि गेलथि आ झील मे डूब चलि हेबाक नाटक करय लगलथि।किछु आगू बढ़लाक बाद,डूबबाक नाटक करैत,जोर सँ करुण स्वर मे पुकार लगौलथि - "उर्वशी!हमरा बचाउ!हमरा बचाउ!उर्वशी! हम डूबि रहल छी!"हम डूबि रहल छी! पहिने हुनका सं गप्प करैत काल उर्वशी के ज्ञात भेल छलनि जे हुनका हेलब नहि अबैत छनि,तहि लेल उर्वशी के लागल जे राजा डूबि रहल हेताह, तहि लेल ओ एक जोर सं चिचिया रहल छथि। उर्वशी सँ सहायता माँगि रहल छथि। ई सोचि ओ पलक झपकैत झील लग आबि गेलीह।ओ राजा के बचाबय लेल आयल छलीह,मुदा ओतय हुनका राजा के निर्जीव सन भेल शरीर धीरे-धीरे एकटा चट्टान के पाछु पानि मे डूबैत भेटलनि।उर्वशी डरि गेलीह आ ओहो घबराहट मे झील मे कूदि गेलीह।आ पानि के शीघ्रता सऽ काटैत राजा के निकट पहुँचि गेली। ओ कोनो तरहें राजा के सहारा दैत पानि मे खींचैत किनार दिसि आबय लगलीह। बहुत कठिनाई सँ राजाक संग झीलक कात मे पहुँचि सकली उर्वशी! राजाक शरीर झीलक कछार पर पहुँचला उपरान्त उर्वशी हुनक नाड़ी आ साँसक परीक्षण कएलथि। नाड़ी तऽ धीरे-धीरे चलैत छल मुदा साँस नहि चलि रहल छल। ई तऽ मृत्युक संकेत स्पष्ट रूपें देखबा मे आबि रहल छल।शोक-संतप्त उर्वशी आँखि मे नोर लऽ कऽ कानय लगलीह। ओ कानि रहल छलीह, आ आर्द्र स्वर मे कछि -कछि बाजि रहल छलीह ।- "ओह प्राणप्रिय आब हम कोना क रहब ! आब हमर के सहाय होयत !हमरा छोड़ि कतय चलि गेलौ !आब हम केकर भरोसे अहि धरती पर रहब!" एखन तरहक विभिन्न

𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒥𑒱𑒪𑒐𑒱-𑒥𑒱𑒪𑒐𑒱 𑒏𑓄 𑒏𑒰𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒲𑒯,𑒂 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒮𑒿𑓄 𑒠𑒯𑒼-𑒥𑒯𑒼 𑒢𑒼𑒩 𑒗𑒯𑒩𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒋𑒞𑒨 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒞𑒰 𑒏𑒩𑒨 𑒫𑒰𑒮𑓂𑒞𑒹 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒂𑒥𑒨 𑒏𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪।𑒋𑒯𑒱 𑒖𑒢-𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨 𑒫𑒢 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒞𑒰 𑒏𑒩𑒨 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒁𑒥𑒻𑒞। 𑒍 𑒮𑒥 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒞𑒯 𑒂𑒨𑒪 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒞𑒐𑒢 𑒋𑒯𑒢𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒏𑒹 𑒯𑒳𑒃𑒞𑒟𑒱! 𑒏𑒹𑒍 𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒠𑒹𑒧𑒨 𑒫𑒪𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒠𑒳𑓁𑒐 𑒮𑓄 𑒏𑒰𑒞𑒩 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒢𑒱𑓁𑒮𑒯𑒰𑒨 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒏𑒭𑓂𑒙𑒠𑒰𑒨𑒏 𑒏𑒩𑒳𑒝 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯।𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒧𑒹𑒧𑒢𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒍𑒞𑒨 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒯 𑒣𑒩 𑒔𑒳𑒧𑓂𑒥𑒢 𑒪𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪।𑒄 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒁𑒮𑒯𑒰𑒨 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒧𑒹𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒖𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒂𑒩 𑒏𑒩𑒳𑒝 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒣 𑒏𑒩𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒲𑒯। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒯𑓂𑒫𑒪 𑒦𑒨 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒣 𑒏𑒋𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒍 𑒅𑒚𑒱 𑒏𑓄 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱 - "𑒚𑒲𑒏 𑒕𑒻 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨,𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿! 𑒂𑒥 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒖𑒲𑒫𑓄 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒂𑒥 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒥।" 𑒄 𑒏𑒯𑒱 𑒍𑒯𑒼 𑒗𑒲𑒪 𑒧𑒹 𑒅𑒞𑒩𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯, 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒰 𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒱 𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒩 𑒤𑒹𑒩 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒪𑒑 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒏𑒣𑒰𑒩 𑒣𑒩 𑒔𑒳𑒧𑓂𑒥𑒢 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒏𑒰𑒢𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒲𑒯। 𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒋𑒏-𑒋𑒏 𑒁𑓀𑒑 𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒳𑒧𑓂𑒥𑒢 𑒪𑒻𑒞 𑒏𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯।𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑓂𑒭𑒝𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒯𑒱𑒣𑒏𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒔𑒼𑒩𑒹-𑒔𑒼𑒩𑒹 𑒤𑒳𑒖𑒃𑒞 𑒥𑓀𑒠 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪 𑒂 𑒤𑒹𑒩 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒐𑒳𑒖𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒢𑒼𑒩 𑒦𑒩𑒪 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒮𑒿 𑒁𑒬𑓂𑒩𑒳𑒮𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒹 𑒥𑒖𑒪𑒲𑒯 - "𑒂𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒏𑒹𑒯𑒢 𑒧𑒼𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨!" 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒞𑒲𑒫𑓂𑒩 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒮𑒿 𑒚𑒯𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒪𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒯𑒿𑒮𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯 - "𑒯𑒧𑒩𑒰!𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒞𑓄 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱!𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒧𑒩 𑒯𑒰𑒪𑒞 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒩𑒹 𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒣𑒴𑒕𑒻𑒞 𑒕𑒲?" 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 � "𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒍 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒐𑒢𑒱 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑓂𑒭𑒝 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒕𑒪! 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒥𑒢𑓂𑒠 𑒕𑒪!" 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒚𑒚𑒰 𑒏𑓄 𑒯𑒿𑒮𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯 � "𑒁𑒔𑓂𑒕𑒰!𑒍! 𑒍 𑒞𑓄 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩 𑒕𑒪 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒚𑒱𑒚𑒼𑒪𑒲 𑒏𑒹। 𑒯𑒧 𑒞𑓄 𑒋𑒏 𑒣𑒯𑒩 𑒞𑒏 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒩𑒼𑒏𑒱 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲।" 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒞 𑒣𑒩 𑒞𑒧𑒮𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯।𑒍 𑒥𑒖𑒪𑒲𑒯 - "𑒏𑒲 𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒯𑓀𑒮𑒲 𑒚𑒱𑒚𑒼𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲?𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒂𑒍𑒩 𑒯𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒲 𑒋𑒯𑒢 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒑𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏,𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒞𑒯 𑒮𑒱𑒐𑒪𑒯𑒳𑒿 ? 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒿𑓄 𑒋𑒯𑒢 𑒦𑒨𑒰𑒢𑒏 𑒯𑓀𑒮𑒲 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿!𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒯𑒰𑒪𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒯𑒧 𑒧𑒩𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞

𑒩𑒯𑒲। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒋𑒯𑒢 𑒯𑒿𑒮𑒲-𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒑𑒲 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱,𑒞𑒹𑒿 𑒤𑒹𑒩 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒥।" 𑒄 𑒏𑒯𑒱 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒞𑒧𑒮𑒰 𑒏𑓄 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒲𑒯।𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒧𑒹𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒻𑒿 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒢𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒰𑒕𑒰𑒿-𑒣𑒰𑒕𑒰𑒿 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒋𑒫𑓀 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒧𑒾𑒢 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒣𑒩 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱।𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒧𑒹 𑒮𑓄 𑒏𑒹𑒍 𑒧𑒾𑒢 𑒦𑓀𑒑 𑒏𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪𑒡𑒩𑒱 𑒁𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒔𑒪𑒫𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒩𑒴𑒮𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒹 𑒥𑓀𑒯𑒳𑒿𑒮𑒫𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓀𑒦 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱,𑒦𑒰𑓀𑒞𑒱-𑒦𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒏𑒹 𑒫𑒰𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒋𑒫𑓀 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒏𑒪𑒰𑒣 𑒏𑒹 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰। 𑒪𑒹𑒏𑒱𑒢 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒧𑒾𑒢 𑒩𑒯𑒪𑒲। 𑒞𑒐𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹 𑒫𑒰𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒋𑒫𑓀 𑒔𑒳𑒯𑒪𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒤𑒹𑒩 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣𑒲 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱, 𑒧◌𑒵𑒠𑒰 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒣𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒯𑒳 𑒁𑒮𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪 𑒅𑒣𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒮𑒿𑓄 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒏𑒹 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒧𑒹 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒩𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯। 𑒁𑒯𑒱 𑒥𑒹𑒩 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒧𑒹 𑒮𑒤𑒪 𑒦𑒹𑒪𑒟𑒱 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒹 𑒧𑒾𑒢 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒍 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱 - "𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒏𑒼𑒧𑒪 𑒣𑒻𑒩 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒏 𑒏𑒚𑒼𑒩𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒯𑒞। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒂𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒩𑒴,𑒯𑒧 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒻𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒢𑓂𑒯 𑒣𑒩 𑒪𑓄 𑒖𑒰𑒨𑒫।" 𑒄 𑒏𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒏𑒻𑒿 𑒅𑒚𑒰 𑒏𑓄 𑒏𑒰𑒢𑓂𑒯 𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒅𑒕𑒪𑒱 𑒏𑓄 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒢𑓂𑒯 𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒅𑒞𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲 𑒂 𑒤𑒹𑒩 𑒮𑒿𑓄 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒻𑒩 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒣𑒩 𑒣𑒙𑒏𑒻𑒞 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑓄 𑒪𑒑𑒪𑒲𑒯।𑒂𑒥 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒤𑒹𑒩 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯 - "𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒧𑒮𑒰𑒅!𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓄 𑒩𑒴𑒮𑒴 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒹! 𑒂𑒥𑒯𑒳 𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒴,𑒢𑒯𑒱 𑒞𑓄 𑒯𑒧 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒔𑒥! 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒮𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏𑒩𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒹 ,𑒢𑒯𑒱 𑒞𑓄 𑒮𑒔 𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒄 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧-𑒣𑒱𑒣𑒰𑒮𑒳 𑒧𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒞।" 𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒒𑒳𑒧𑒱 𑒏' 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒟𑒱। 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒧𑒹 𑒢𑒼𑒩 𑒦𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏।𑒍 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒼𑒏𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒟𑒱 𑒂 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒏𑒻𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒪𑒱𑓀𑒑𑒢 𑒧𑒹 𑒪𑓄 𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒍 𑒦𑒰𑒫𑒰𑒫𑒹𑒬 𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒥𑒹𑒩 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒫𑒏𑓂𑒭𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒣𑒩 𑒔𑒳𑒧𑓂𑒥𑒢 𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱।𑒤𑒹𑒩 𑒍 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰𑒏 𑒫𑒏𑓂𑒭𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒧𑒻 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒹𑒯𑒩𑒰 𑒏𑒻𑒿 𑒮𑒙𑒹𑒢𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒂𑒪𑒱𑓀𑒑𑒢𑒥𑒠𑓂𑒡 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒪𑒲𑒯। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒠 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒳𑒐 𑒅𑒚𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒏𑒹 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒧𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒲𑒯 - "𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒧𑒩𑒨 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲! 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒢𑒱𑒏𑒼 𑒣𑒮𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱! 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒠𑒱𑒐𑒢 𑒧𑒩𑒨-𑒖𑒲𑒫𑒨 𑒏𑒹 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒳। 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒯𑒩𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒱𑒨𑒹! 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒫𑒔𑒢 𑒠𑒱𑒨,𑒂𑒥 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒋𑒯𑒹𑒢 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒥।" 𑒩𑒰𑒖𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒴𑒩𑒫𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒧𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒏𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒑𑒰𑒜𑓃 𑒔𑒳𑓀𑒥𑒢 𑒪𑒹𑒪𑒟𑒱।𑒅𑒩𑓂𑒫𑒬𑒲 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩

वक्षस्थल में सेहो अपन मुँह नुका लेलथि। किछु समयक बाद हुनका छाती सँ मुँह उठा कऽ हुनका आँखि मे तकैत बजलीह - "हमअहाँ पर कोना तमसाएब!नहि प्रिये,हम अहाँ पर तमसाएल नहि छलहुँ,ने हम अहाँ सँ रूसल छलहुँ!नहि प्रियतम,ई हमर भाग्य अजानिये छल।" दुनूक बीचक सभटा तामस आ मान समाप्त भऽ गेल,तखन दुनू गोटे ओतहि एकटा गाछक छाँह में बैसि प्रेमालाप मे मगन भऽ गेलथि।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रूपनन्द बिलास राय-धसबहिनी



નન્દ વિલાસ રાય

ઘસવહિની

છઠના-મહીના નાનીગઢી પનારીસઁ પૂવ સડ઼કક કાતમે એકટા વેસ હમટગાન કદમક ગાછ શ્રછા વૈશાખ માસક જોનુકા ઉખનાહા દનિક દસ વળેળા ટહટહૈશ્રા નૈદા એકટા વીસ-વાઇસ વન્ખક ઘસવહિની શ્રોર કદમક ગાછ તન વૈસલ છેલી ઘસવહિની વેસ સુન્નના છેલી ગૌન વન્મ્મ, છડ઼હના સરીન, ગોલ શ્રા સુડૌલ મુઁહ, નમહન-નમહન શ્રાંડયિા કેસા કાની-કાની શ્રા પૈઘ-પૈઘ દુનૂ શ્રાઁખિા સમતોલાક શ્રાડ઼ાસન ડોના પૂશ્રા ળકાઁ શ્રૂલલ-શ્રૂલલ શ્રા સેવ સન લાલ-લાલ ગાલા યાનાટિા કૌલળયિા લડ઼કા સાઇકલિસઁ શ્રોર સડ઼કસઁ ળા નહલ છલા ળખન કદમક ગાછસઁ એક લગ્ગા પાછૂએ નહએ તઁ શ્રોરમે સઁ એકટા કૌલળયિા લડ઼કાક નળેન શ્રોર ઘસવહિનીપન પડ઼લા કૌલળયિા લડ઼કા તઁ કૌલળયિ લડ઼કા હોઇઓ વેસી લસ્તુશ્રા શ્રા ઉચ્છ઼ૃખલા શ્રો લડ઼કા ળેકન નળેન ઘસવહિનીપન પડ઼લ નહએ, વાળલ-

�નૌ જાય, કની શ્રપનો સજા એ ગાછાતન ળપિા લા�

તાવેતમે દોસન, તેસન શ્રા યાનમો લડ઼કાક નળેન ઘસવહિનીપન પડ઼લા દોસન લડ઼કા વાળલ-

�હઁ, હઁ, વડ઼ નૌદ છૈ, કની ગાછાતન ડંઢા લા�

યાનૂ લડ઼કા શ્રપન-શ્રપન સાઇકલિ ખડ઼ા કેલક શ્રા કદમક ગાછાતન શ્રાવ વૈસ

[illegible]



𑒣𑓂𑒩𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪'

𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒱 𑒋𑒏𑒩? (𑒫𑒱𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰(

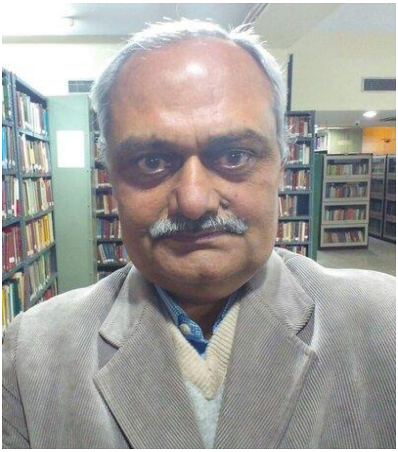
𑒞𑒲𑒢 𑒧𑒯𑒲𑒢𑒰𑒮𑒹 𑒥𑒢𑒱 𑒁𑒢𑓂𑒢 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒠𑒹𑒯 𑒏𑒰𑒿𑒙 𑒏𑒰𑒿𑒙 𑒂 𑒏𑒢𑒻𑒞 𑒏𑒢𑒻𑒞 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒮𑒴𑒐𑒪𑒱 𑒁𑒪𑒪𑒴 𑒮𑒢 𑒦𑒻 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒋 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒹 𑒑𑒻 𑒧𑒰𑒨 𑒔𑒪 𑒅𑒚 !,𑒪𑒰𑒑𑒰 𑒖𑒼 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒧𑒹 𑒂 𑒯𑒿 !,𑒞𑒯𑒴𑒿 𑒯𑒻 𑒥𑒰𑒥𑒴 !! 𑒒𑒹𑓀𑒙 𑒅𑒚𑒰𑒏𑒹 𑒂 𑒮𑒼𑒢𑒰 𑒞𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒩𑒯𑒯 ! 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒃𑒖𑓂𑒖𑒻𑒞 𑒢𑒻 𑒑𑒹𑒪𑒯 ।𑒃𑒖𑓂𑒖𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒋𑒩 𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒲𑒏𑒹 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒱𑒑𑓂𑒠𑒰𑒢𑒮𑒱 𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒏 । 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒢 𑒏𑒼𑒃 𑒢𑒻 ,𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒻𑒪 𑒞𑒏 𑒯𑒧 𑒔𑒔𑒰𑒖𑒲 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒪𑒱𑒨𑒻 𑒮𑒹 ।

𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒂𑒥𑒴𑒏𑒹 𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒯 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒑𑒧𑒹 𑒮𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴𑒩 𑒏𑒹 𑒦𑒩𑒞 ? 𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒪𑒹 𑒖𑒰𑒃 𑒖𑒰𑒯 𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒑 𑒮𑒥 𑒠𑒱𑒢 𑒁𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒣 𑒠𑒣 𑒩𑒯𑒞 । 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒼𑒐𑒱𑒧𑒹 𑒥𑒪𑒖𑒼𑒩𑒲 𑒖𑒹 - 𑒣𑒴𑒕𑒞 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒰𑒣 𑒏𑒹 ? 𑒯𑒧 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒂 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒠𑒹𑒥𑒻 𑒖𑒹 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒥𑒰𑒣 𑒋 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒲 𑒑𑒩𑒰𑒧𑒲 𑒮𑒥𑒮𑒹 𑒣𑒻𑒒 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑓂𑒪𑒪𑒰𑒿 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒥𑒹𑒙𑒰 𑒮𑓂𑒪𑒪𑒰𑒿 𑒕𑒱𑒨𑒾 ।𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒏𑒩 𑒃𑒖𑓂𑒖𑒞 𑒖𑒹𑒞𑒻 ? 𑒯𑒧𑒩 𑒏𑒱 𑒋𑒏𑒩 ?? 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒁𑒫𑒰𑒏 𑒦𑒻 𑒑𑒹𑒪𑒰

-𑒣𑓂𑒩𑒧𑒼𑒠 𑒗𑒰 '𑒑𑒼𑒏𑒳𑒪', 𑒠𑒲𑒣,𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 (𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 𑒠𑒱𑒞𑒼𑒢𑒰𑒟𑒱𑒮𑒞𑒰𑓁𑓁𑒫𑒠𑒱𑒯𑒰०𑒑𑒰𑒧𑒰𑒟𑒱𑒨𑒼𑒧 **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑒩𑒥𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒦𑒏𑒱𑒕𑒳 (𑒇𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)-𑒡𑒰𑒩𑒰𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏



<u>𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩</u>

𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒫𑒰𑒯𑒱𑒏

<u>𑒦𑒰𑒑 𑓓𑓑 𑒮𑒿 𑒁𑒢𑓂𑒞 𑒡𑒩𑒱</u>

𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖

𑓓𑓑

𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒢𑒱𑒏𑒹𑒞𑒢 𑒏𑒰𑓀𑒛𑒏 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙𑒧𑒹 𑒤𑒻𑒮𑒪𑒰 𑒂𑒥𑒏 𑒩𑒯𑒻𑒏 । 𑒮𑒰𑒪 𑒦𑒩𑒱𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲𑒮𑒿 𑒄 𑒧𑒰𑒧𑒪𑒰 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪 । 𑒏𑒹𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏 𑒑𑒫𑒰𑒯𑒲 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 । 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨𑒮𑒦 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒂 𑒍𑒏𑒩 𑒑𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒪𑒱𑒣𑓂𑒞𑒞𑒰 𑒮𑒰𑒥𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒏 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏 । 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒲𑒨 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒧𑒠𑒞𑒱 𑒏𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒢𑒱𑒏𑒹𑒞𑒢𑒧𑒹 𑒣𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒠𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫𑒹𑒖𑒮𑒦 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒧𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒖𑒑𑒴𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒏 । 𑒖𑒖 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒞𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒳𑒣𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒧𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒥𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒥𑒰𑒿𑒏𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒐𑒪𑒏 । 𑒖𑒖 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒩𑒴𑒣𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 । 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮𑒮𑒦 𑒛𑒩𑒰𑒥𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒏𑒹𑒪𑒏 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒖 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒁𑒛𑓃𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯

। 𑒁𑒞𑓁 𑒤𑒻𑒮𑒪 𑒂𑒋𑒪। 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒮𑒧𑒹𑒞 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒞𑒧𑒰𑒧 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒏𑒰𑒩𑒰𑒫𑒰𑒮𑒏 𑒠𑓀𑒛 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒤𑒮𑒼𑒔𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒤𑒿𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒪𑒱𑒣𑓂𑒞𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒮𑒥𑒴𑒞 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒂𑒠𑒧𑒲 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒍𑒏𑒩 𑒮𑒦𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒂𑒑𑒴 𑒏𑒹𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒂𑒍𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒿𑒔𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒰𑒋। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒿𑒔𑒱 𑒮𑒏𑒪। 𑒁𑒮𑒪𑒧𑒹 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒱𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒋। 𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒯𑒼𑒮 𑒁𑒋𑒪𑒻𑒏 𑒞𑒰𑒥𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒹𑒩𑒲 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒖𑒐𑒢 𑒧𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒮𑒲𑒥𑒲𑒂𑒃𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒁𑒋𑒪𑒻𑒏 𑒞𑒐𑒢𑒯𑒳 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒲 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒠𑒲𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒑𑒫𑒰𑒯 𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒋। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒢𑒯𑒱। 𑒂𑒐𑒱𑒩 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒦𑒹𑒪। 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨𑒼 𑒋𑒯𑒢 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒹 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒋 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒠𑒩𑓂𑒖𑒢 𑒦𑒩𑒱 𑒮𑒪𑒰𑒯𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒋𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒂𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒏𑒰𑒩𑒰𑒫𑒰𑒮𑒮𑒿 𑒠𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒯।

𑒁𑒮𑒪𑒧𑒹 𑒄 𑒧𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒦𑒩𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪 𑒦𑒨𑒰𑒫𑒯। 𑒢𑒰𑒢𑒲 𑒢𑒏𑒱𑒞𑒢𑒏 𑒪𑒑𑒣𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒢𑒩𑒏𑓀𑒏𑒰𑒪 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒕𑒪। 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒪𑒰𑒣𑒞𑒰 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒯𑒛𑓂𑒛𑒲 𑒍𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒙𑒪 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒛𑒲𑒋𑒢𑒋 𑒖𑒰𑒿𑒔𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒔𑒰𑒢 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒖𑒹 𑒂𑒍𑒩 𑒁𑒣𑒩𑒰𑒡𑒏 𑒮𑓀𑒑-𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒖𑒒𑒢𑓂𑒨 𑒁𑒣𑒩𑒰𑒡 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒰𑒧 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒕𑒪। 𑒤𑒻𑒮𑒪 𑒮𑒳𑒢𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒖𑒖 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒏𑒯𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒄 𑒤𑒻𑒮𑒪 𑒁𑒐𑒢 𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒁𑒣𑒩𑒰𑒡𑒲 𑒁𑒐𑒢𑒯𑒳 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒢𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒥𑓀𑒠 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒞,𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳 𑒔𑒪𑒱𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒞। 𑒋𑒏-𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒠𑒼𑒭𑒲𑒣𑒩 𑒠𑓀𑒛 𑒠𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒹 𑒄 𑒧𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒥𑓀𑒠 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒞। 𑒖𑒖 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥𑒏 𑒅𑒣𑒩𑒼𑒏𑓂𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙𑒧𑒹 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒏𑒮𑒦 𑒦𑒲𑒞𑒩𑒮𑒿 𑒯𑒱𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒮𑒦𑒏 𑒚𑒼𑒩𑒣𑒩 𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣𑒲 𑒣𑒮𑒩𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒂𑒥 𑒏𑒲 𑒯𑒼𑒋𑒞? 𑒏𑒹 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒞,𑒏𑒹 𑒖𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒢 𑒚𑒹𑒏𑒰𑒢?

𑒢𑒰𑒢𑒲 𑒢𑒏𑒱𑒞𑒢 𑒏𑒰𑓀𑒛𑒏 𑒤𑒻𑒮𑒪 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒖𑒐𑒢 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒍 𑒧𑒰𑒟𑒣𑒩 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒬𑒰𑒮𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐-𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒂𑒠𑒧𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒯𑒪 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰𑒏 𑒯𑒰𑒟-𑒣𑒻𑒩 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒢 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒖𑒥𑒩𑒠𑒮𑓂𑒞𑒲 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒂𑒑𑒴 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒮𑒲𑒮𑒿 𑒯𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒼 𑒁𑒮𑒪𑒲 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒹 𑒯𑒰𑒟𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲 𑒮𑒧𑒹𑒞 𑒮𑒦 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒂𑒠𑒧𑒲𑒮𑒦 𑒖𑒯𑒪 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯। 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒣𑒩 𑒁𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒞𑒞𑓂𑒫𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒥𑓂𑒖𑒰 𑒦𑒋

𑒑𑒹𑒪। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒍 𑒮𑒦 𑒂𑒣𑒮𑒧𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒪𑒏।
"𑒄 𑒮𑒧𑒨 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒏𑒰𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒑𑒴 𑒩𑒐𑒢𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒂 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦 𑒪𑒑 𑒩𑒯𑒋। 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒯𑒳𑒿𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒢𑒲𑒏𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒼𑒥𑒰𑒩 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒞।"
"𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒍 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒖𑒲𑒞𑒱 𑒮𑒏𑒥?"
"𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒹 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏?"
"𑒔𑒳𑒢𑒰𑒍 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒪𑒛𑓃𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒣𑒩 𑒪𑒛𑓃𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒧𑒳𑒮𑓂𑒞 𑒦𑒼𑒙 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒂𑒑𑒴 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒛𑓃𑒞। 𑒥𑒮 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒑𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒻𑒏। 𑒞𑒏𑒩𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻𑒏 𑒏𑒲 𑒯𑒼𑒃 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏।"
"𑒮𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒯𑒼𑒋𑒞।"
"𑒯𑒻𑒞 𑒢𑒹। 𑒠𑒴-𑒔𑒰𑒩𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒠𑓀𑒑𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒹𑒞𑒻𑒏। 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙𑒮𑒿 𑒂𑒩𑒏𑓂𑒭𑒝𑒏 𑒐𑒱𑒪𑒰𑒤 𑒤𑒻𑒮𑒪𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒹𑒞𑒻𑒏। 𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒖𑒢𑒞𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒏 𑒥𑒪𑒹 𑒏𑒲𑒢𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒙𑓂𑒩𑒏𑒏-𑒙𑓂𑒩𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒩𑒞। 𑒧𑒲𑒛𑒱𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒕𑒟𑒱𑒯𑒹। 𑒍 𑒮𑒦 𑒏𑒯𑒱𑒂 𑒏𑒰𑒖 𑒁𑒍𑒞𑒰𑒯? 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒕𑒻𑒏। 𑒖𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒯𑒹𑒞𑒻𑒏 𑒍𑒞𑒥𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒹𑒞𑒻𑒏। 𑒋𑒏 𑒪𑒰𑒐,𑒠𑒮 𑒪𑒰𑒐। 𑒂𑒩 𑒖𑒐𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒥𑒢𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞,𑒮𑒦 𑒮𑒳𑒠𑒱-𑒧𑒳𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒍𑒮𑒳𑒪 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱।"
"𑒋𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒐𑒞𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒨𑒼𑒖𑒢𑒰 𑒮𑒤𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒞𑒐𑒢?"
"𑒐𑒞𑒩𑒰 𑒏𑒟𑒲𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏? 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒛𑒩𑒰 𑒏𑒋 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒡𑓀𑒡𑒰𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒄 𑒮𑒦 𑒔𑒪𑒱𑒞𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒑𑒴𑒍 𑒔𑒪𑒞।"
"𑒚𑒲𑒏 𑒕𑒻𑒏। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒮𑒋𑒯 𑒏𑒩𑒲।"
𑒋𑒯𑒱 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩-𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒍 𑒮𑒦 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰 𑒪𑒑 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒋𑒏𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒞𑒯𑒱 𑒞𑒰𑒧𑒮𑒹 𑒪𑒰𑒪 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒲𑒯।
"𑒞𑒼𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒖𑒢?"
"𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒮𑒦𑒠𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒬𑒳𑒦𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒯𑒴𑒿𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒱𑒞 𑒕𑒲। 𑒍 𑒖𑒴𑒩 𑒕𑒳𑒙𑒱 𑒏𑒋 𑒁𑒍𑒞𑒰𑒯। 𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒨 𑒞𑒿 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒞𑒰𑒥𑒹 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒡𑒻𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒐𑒥𑒰𑒏

હોએત।"

"હમ ઈ સભ નહિ જાની। આબ બહુત ભએ ગેલ। હમ એહિસભમે પડ़લ નહિ રહિ સકૈત છી। હમ આઇએ રાજ્યપ્રમુખક પદસઁ ઇસ્તીફા દેબએ જાએ રહલ છી। અહાઁ લોકનિ અપન દોસર નેતા ચુનિ લિઅ। એહિ કાજમે લાગલ રહબ હમરા બશક નહિ અછિ। હમર સ્વભાવ આ પરિસ્થિતિ ઈ સભ કરબાક અનુમતિ નહિ દએ રહલ અછિ।"

"અહાઁ અગુઆઇ છુનિ। ચુનાઓક ઘોષણા ભએ ગેલ અછિ નેતાજી આ હુનકર સહયોગીલોકનિ જિહલમે છથિ। એહન સંક્રમણ કાલમે જઁ અહૂઁ ધૈર્ય નહિ રાખબ તખન હમસભ કોના જીતિબ?"

"સે અહાઁ લોકનિ જાનૂ।"

"મુદા અહાઁકેં અપન ધિઆ-પુતાક ચિંતા નઁ હોએત?"

"સે કી?"

"ઓ સભ તાકતે સુરક્ષિત અછિ।"

"ખબરદાર! જઁ આગૂ કિછુ બજૈત ગેલહુઁ તઁ હમરાસઁ ખરાબ કેઓ નહિ હોએત।"

મામિલા બિગડ़ૈત દેખિ કિછુગોટે આગૂ બઢ़િ કએ મહિમાકેં બુઝેબાક હેતુ એકાંતમે લએ ગેલથિ। આખિર ચુનાઓ ધરિ મહિમા રાજ્યપ્રમુખક કાજ કરબાક હેતુ તૈયાર ભએ ગેલથિ। સભગોટે નિશ્ચિંત ભએ અપન-અપન ઘર વાપસ ગેલથિ।

૩૨

સરકારક મુફ્ત યોજનાસભસઁ સરકારી ખજાના ખાલી ભએ ગેલ છલ। સેવાનિવૃત્ત કર્મચારીક પેનસન દેબ મોસકિલ ભએ રહલ છલ। કાર્યાલયસભક બિજલી,પાનિક બિલ તઁ કમ ભેલ મુદા આઓર જરૂરી સમાનસભક ઘોર અભાવ ભએ ગેલ। કૈકટા કાર્યાલયસભમે કર્મચારી અધિકારીક દરમાહા ભેટનાઇ સેહો પરાભવ ભએ ગેલનિ। મહગાઇ તતેક બઢ़િ ગેલ જે દોના ભરિ કએ ટાકા લએ ગેલાક બાદો એકહુ સપ્તાહક હેતુ સમાનસભ નહિ ભેટૈત છલ। કહબાક મતલબ જે સૌસે ઘોર અરાજકતા પસરિ ગેલ છલ।

𑒔𑒳𑒢𑒰𑒍𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒾𑒪𑒧𑒹 𑒯𑒰𑒪𑒞𑒱 𑒥𑒱𑒑𑒛𑓃𑒞𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒪𑒰𑒐 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒪𑒠𑒪𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒯𑒼𑒃 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒯𑒹𑒥𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒢𑒱।
"𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲?"
"𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒬𑒏𑒹𑒿 𑒄 𑒮𑒦 𑒁𑒕𑒱 𑒢𑒯𑒱। 𑒖𑒢𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒞𑓂𑒩𑒰𑒯𑒱𑒧𑒰𑒧 𑒧𑒔𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒼𑒏 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒡𑒱𑒂-𑒣𑒳𑒞𑒰𑒏 𑒦𑒫𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒏𑒙𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒢 𑒚𑒰𑒧 𑒯𑒧 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒍 𑒖𑒿 𑒖𑒱𑒞𑒱𑒋 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒞𑒿 𑒏𑒼𑒢 𑒤𑒰𑒨𑒠𑒰 𑒯𑒼𑒋𑒞।"
𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍𑒏𑒩 𑒞𑒟𑒰𑒏𑒟𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒏𑒮𑒦 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒏। 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒮𑒦 𑒙𑒱𑒏𑒙 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒙𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒪𑒑 𑒑𑒳𑒙 𑒥𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒏। 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒯𑒰𑒪𑒞 𑒍𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒢𑒰𑒧𑒲 𑒢𑒏𑒱𑒢𑒞 𑒏𑒰𑓀𑒛𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒒𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮𑒮𑒦𑒏 𑒒𑒧𑓀𑒛 𑒏𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒍 𑒮𑒦 𑒖𑒹𑒢𑒰-𑒞𑒹𑒢𑒰 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒍 𑒖𑒲𑒞𑒱 𑒪𑒹𑒞,𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒤𑒹𑒩𑒮𑒿 𑒍𑒏𑒩𑒹𑒮𑒦𑒏 𑒥𑒢𑒞𑒻𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒋𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒞𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒮𑓂𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒍 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒍 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒛𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒒𑒼𑒭𑒝𑒰 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱। 𑒆𑒣𑒩𑒮𑒿 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒧𑒹 𑒤𑒴𑒙 𑒦𑓄𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒏 । 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒂𑒧 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑒩𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒼𑒥𑒪 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒐𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏।
𑒂𑒐𑒱𑒩 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒁𑒪𑒑 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒠𑒵𑒜𑓃 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨 𑒏𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒬𑒰𑒧𑒹 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒱। 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒼𑒚𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒲। 𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒠𑒵𑒬𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒦𑒫𑒱𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒨𑒼𑒖𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒥𑒋𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒲 𑒏𑒱 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒯𑒳𑒿।
"𑒂𑒅, 𑒂𑒅।"
𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒁𑒮𑒑𑒩𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒯𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒮𑓂𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒔𑒰𑒯 𑒁𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒔𑒰𑒯𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲।
𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢-
"𑒋𑒯𑒱 𑒁𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒂𑒑𑒧𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝?"
"𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒞𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒯𑒼𑒋𑒞। 𑒮𑒾𑓀𑒮𑒹 𑒞𑒥𑒰𑒯𑒲 𑒧𑒔𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒼𑒏 𑒣𑒩𑒹𑒮𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒣𑒩 𑒑𑒪𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒢𑒱𑒨𑓀𑒞𑓂𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒯𑒧 𑒋𑒯𑒱 𑒤𑒮𑒰𑒠𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒍𑒢𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒏𑒯𑒱𑒍 𑒩𑒴𑒔𑒱 𑒩𑒯𑒥𑒼

𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒋𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒋𑒯𑒢𑒱 𑒒𑒴𑒿𑒮𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒞' 𑒮𑒦𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧 𑒂𑒑𑒴 𑒋𑒯𑒢𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲।"

"𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒯𑒢𑒱 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒖𑒥𑒴𑒩𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒖𑒐𑒢 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒯𑒙𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲।"

"𑒥𑒰𑒞 𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒂𑒮𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏। 𑒯𑒧𑒩 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒣𑒩 𑒁𑒮𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒞𑒞𑓂𑒫𑒏 𑒏𑒥𑓂𑒖𑒰 𑒕𑒻𑒏। 𑒍 𑒮𑒦 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒒𑒹𑒩𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑒰𑒐 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒱𑒌𑒏 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯𑒧 𑒂𑒥 𑒞𑒨 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒲। 𑒯𑒧 𑒋𑒯𑒢𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒥। 𑒯𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒚𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒱𑒌𑒏 𑒁𑒕𑒱।"

"𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒮𑒯𑒲 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒮𑒦 𑒞𑒩𑒯𑒹𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒧𑒠𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒥।"

"𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒂𑒬𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒧 𑒋𑒞𑒋 𑒂𑒋𑒪 𑒕𑒲।"

𑒋𑒢 𑒧𑒾𑒏𑒰𑒣𑒩 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒮𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒪𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒒𑒼𑒭𑒝𑒰𑒮𑒿 𑒮𑒧𑒑𑓂𑒩 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒠𑒪𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒩𑒰𑒬𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒾𑒪 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒮𑒦 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒍𑒩𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒍𑒋𑒯 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒡𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲𑒧𑒹 𑒯𑒰𑒯𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒢𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒪𑒏 𑒕𑒫𑒱 𑒍𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒐𑒩𑒰𑒥 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮𑒮𑒦𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒮𑒤𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒏। 𑒖𑒞𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒴,𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒖𑒨𑒑𑒰𑒢 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪। 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒯𑒳𑒖𑒳𑒧 𑒖𑒧𑒰 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪। 𑒯𑒧 𑒂 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒠𑒱𑒢-𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒑𑒰𑒧𑒹-𑒑𑒰𑒧 𑒒𑒳𑒧𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒹 𑒦𑒴𑒐 𑒪𑒑𑒢𑒱,𑒢𑒹 𑒣𑓂𑒨𑒰𑒮। 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒁𑒞𑒱𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒳𑒗𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱।

"𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒠𑒳𑒭𑓂𑒙𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒮𑒲𑒮𑒿 𑒯𑒙𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒥 𑒞𑒰𑒥𑒹 𑒔𑒻𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒥।" 𑒍 𑒥𑒮 𑒋𑒞𑒥𑒹 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒖𑒢𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒞' 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒹𑒔𑓂𑒕𑒰𑒮𑒿 𑒠𑒱𑒢-𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒑𑒰𑒧𑒹-𑒑𑒰𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒧𑒞𑒠𑒰𑒞𑒰𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒬𑒱𑒐𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒢𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒯𑒾𑒪 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡𑒲 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒰𑒮 𑒏𑒋 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒮 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒼𑒙𑒲𑒣𑒼𑒙𑒲 𑒑𑒳𑒧𑓂𑒧 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒯𑒰𑒪𑒞 𑒏𑒰𑒥𑒴𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒮𑒧𑒑𑓂𑒩 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒠𑒪𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒍 𑒮𑓂𑒟𑒑𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 ।

"દેશક પરિસ્થિતિ ચુનાઓક હેતુ ઉપયુક્ત નહિ અછિ। પહિને હાલાતિ ઠીક હોઅએ દેવાક ચાહી તખનહિ ચુનાઓ કરેવાક હેતુ આગૂ વઢલ જાએ।"
તાહિ ઉદ્દેશ્યસઁ ઓ સભ ચુનાઓ આયોગ પહુઁચલ। મુદા ચુનાઓ આયોગ અડ઼િ ગેલ।
"એહનો કહીં ભેલૈક અછિ। ચુનાઓક ઘોષણા ભએ ચુકલ અછિ। ચુનાઓ સમયેપર હોએત। સભકેં એહી દિશામે કાજ કરવાક ચાહી।"
ચુનાઓ આયોગક એહિ ઘોષણાસઁ વદમાસસભકેં વહુત નિરાશા ભેલૈક। મુદા કરએ કી સકૈત છલ?
૩૩

સમગ્ર વિકાસ દલક તમામ વિરોધક અછૈત જનતા જનાર્દન શિક્ષાક સમર્થનમે એકજુટ ભએ ગેલ છલ। જતએ કતહુ ઓકર કાર્યક્રમ હોઇત છલ,લોકસભક મેલા લાગિ જાઇત છલ। લોક શિક્ષાકેં સુનતહિ નહિ છલ,અપિતુ કિછુ-ટાકાક યોગદાન સેહો કેને જાઇત છલ। એહિ તરહેં પ્રચુરમાત્રામે ધન જમા ભએ ગેલ જે ચુનાઓક લેલ ને પર્યાપ્ત ને છલૈ , તકર વાદો વહુત વઁચિ જેવાક સંભાવના છલૈ। શક્તિનાથ એક-એક પાઇક હિસાવ રખૈત છલાહ। સંગહિ આગાંમિ કાર્યક્રમક યોજનાકેં અન્તિમ રૂપ દેવાક કાજો ઓએહ દેખૈત છલાહ। જીઁ જીઁ ચુનાઓ લગીચ અવૈત ગેલ,ઈ સ્પષ્ટ હોઇત ગેલ જે વિજય ને જનક્રાન્તિદલક હોએત। જખને ઓ શ્વેતવસ્ત્ર પહિરને જનતાક સમક્ષ ઉપસ્થિત હોઇતએ ને વિના કિછુ કહનહિ જનતાક ઓકરા પ્રતિ સહાનુભૂતિ ભએ જાઇત છલૈક। સભ પુછતિએ-
"એના કિએક? વાત કી છૈક? કોન એહન ઘટના ભેલ જે હિનકા ઈ રૂપ ધારણ કરએ પડ઼લનિ।"
લોકસભ આપસમે ચર્ચા કરતિઐ। એહિ તરહેં શિક્ષા સંગે ઘટિત ઘટનાસભ કાને-કાન યત્ર-તત્ર-સર્વત્ર પ્રચારિત હોઇત રહતિઐ। શિક્ષાક જાદૂ જનતાપર કાજ કએ રહલ છૈક। લોકસભ ઓકરા અપન આદર્શ માનિ લેને છલ। ઓકરા હેતુ કિછુ કરવાક હેતુ તૈયાર છલ।

एहन प्रबल जन समर्थन आखिर चुनाओक परिणाममे प्रदर्शित भेल। तीन सएमे सँ दू सए पंचानबेटा जन प्रतिनिधि जनक्रान्ति दलक जीति गेल। ओकर अतिरिक्त पाँचटा निर्दलीय चुनाओ जीतलाह। ओहिसभ मूलतः जनक्रान्ति दलक छलाह। मुदा टिकिट नहि भेटबाक कारण निर्दलीय चुनाओ लड़लाह आ जीति गेलाह। समग्र विकास दलक एकहुटा उम्मीदवार चुनाओ नहि जीति सकल। पार्टीक ई हाल होएत,से सपना केओ नहि सोचने रहल होएत। मुदा सत्य सामने छल,डंकाक चोटपर दहाड़ि पारि रहल छल।

शिल्पा आइ गुलाबी रंगक सारी पहिरने छलीह। ओहिसँ मेल खाइत रंगक आओर परिधानसभ पहिरने जखन ओ मंचपर अएलीह तँ लोक एक क्षणक हेतु चकित भए गेल। चारूकातसँ फूलक वर्षा भए रहल छल। सभ आनन्दमे छल। प्रायः एहि क्षणक प्रतीक्षा लोक कहि नि कहिआसँ कए रहल छल। लोकसभ करतल ध्वनिसँ हुनकर स्वागत केलक। सत्यक विजय भेल। लोकमे बहुत उत्साह रहैक। सभकेँ ओहि क्षणक प्रतीक्षा रहैक जखन शिल्पा राज्यप्रमुखक पदपर शपथ लेतीह। ताहि लेल कार्यवाही शुरुओ भेल। जन प्रतिनिधिसभक बैसारमे हुनकर नाम नेताक रूपमे प्रस्तावित कएल गेल। सभगोटे सर्वसम्मतिसँ हुनका नेता चुनि लेलनि। तकर बाद शिल्पा उठलथि। लोकसभक अनुमान रहैक जे ओ धन्यवाद देबाक हेतु आगू बढ़ि रहल छथि। मुदा हुनकर मोनमे तँ किछु आओर छलनि। ओ माइक अपना हाथमे लैत छथि। लोकसभ हुनका सुनबाक हेतु एकटक भए गेल छथि। शिल्पा बजनाइ शुरु करैत छथि-

"बंधुगण!

एहि ऐतिहासिक विजयक अवसरपर अहाँलोकनिक संग विजयोत्सवमे भाग लए हम अतिशय अह्लादित छी। जाहि उत्साहसँ समाजक सभ वर्गक लोक एहि चुनाओमे अपना लोकनिक दलक संगे लागल रहल,दिन-राति काज करैत रहल,ताहिसँ विजय तँ निश्चित लागि रहल छल। मुदा विजय एहन होएत जे विरोधी दलक खाता धरि नहि खुजि सकत तकर अनुमान सपनो ककरो रहल होएत। असलमे जनतामे अपार शक्ति अछि। बस ओकरा जगेबाक काज छैक। ई बात नहि छैक जे विपक्षी दलक लोक सुतल रहलाह। अपितु,अपना भरि सभ

𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒻𑒪 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒯। 𑒁𑓀𑒞-𑒁𑓀𑒞 𑒡𑒩𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒨𑒳𑒫𑒰𑒍 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒧𑒨 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒍 𑒮𑒦 𑒋𑒯𑒱 𑒯𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒋𑒏𑒯𑒳𑒙𑒰 𑒖𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒳𑒢𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒪। 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰𑒮𑒿 𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒋𑒏𑒩𑒹 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒖𑒨𑒼𑒪𑓂𑒪𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒩𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱 । 𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳,𑒖𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒣𑒩 𑒮𑒯𑒲 𑒅𑒞𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑,𑒞𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒩𑒥 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒮𑒹 𑒮𑒦𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒐𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒮𑒏𑒞। 𑒮𑒯𑒲 𑒧𑒰𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒖𑒢𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒞𑒐𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞। 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒢𑒱𑒧𑓂𑒢𑒞𑒧 𑒣𑒰𑒨𑒠𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒁𑒛𑓃𑒏𑒪 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒚𑒰 𑒏𑒋 𑒍𑒏𑒩𑒰𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒩𑒱𑒧𑒰𑒧𑒨 𑒖𑒲𑒫𑒢-𑒨𑒰𑒣𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒖𑒰𑒥𑒹 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒋 𑒮𑒏𑒥 𑒞𑒰𑒫𑒹 𑒄 𑒫𑒱𑒖𑒨 𑒁𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒁𑒕𑒱,𑒁𑒩𑓂𑒟𑒯𑒲𑒢 𑒁𑒕𑒱, 𑒫𑓂𑒨𑒩𑓂𑒟 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒮𑓂𑒞𑒳,𑒯𑒧 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒮𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒪𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒝𑒨 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒠 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒥। 𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒲𑒔𑒧𑒹 𑒖𑒰 𑒏𑒋 𑒠𑒲𑒢-𑒠𑒳𑒐𑒲 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥। 𑒁𑒮𑒪 𑒧𑒰𑒢𑒹𑒧𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿𑒮𑒿 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒻𑒏। 𑒮𑒦𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒹𑒣𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒖𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒧𑒲𑒢𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒯𑒼𑒟𑒱 𑒂 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒪𑒼𑒦-𑒪𑒰𑒪𑒔𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒢 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒢𑒱𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒦𑒰𑒫𑒮𑒿 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒟𑒱। 𑒞𑒐𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒼𑒏 𑒧𑒠𑒞𑒱 𑒏𑒰𑒩𑒑𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞। 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒟𑒰 𑒪𑒳𑒙𑒪 𑒪𑒼𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒫𑓂𑒨𑒩𑓂𑒟𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞। 𑒯𑒧𑒩 𑒃𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐𑒏 𑒣𑒠𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒳𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒋। 𑒍 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒠𑒵𑒜𑓃 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨𑒲 𑒂 𑒣𑒩𑒱𑒬𑓂𑒩𑒧𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒯𑒱 𑒃𑒧𑒰𑒢𑒠𑒰𑒩 𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒧 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒍𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥। 𑒞𑒏𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒄 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒥𑒢𑒱। 𑒖𑒐𑒢 𑒖𑒹 𑒧𑒠𑒞𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒕𑒲 𑒂 𑒩𑒯𑒥।

𑒋𑒞𑒹𑒏 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒪𑒲𑒯 𑒂 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒧𑓀𑒔𑒣𑒩 𑒂𑒑𑒴𑒏 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒋𑒪𑒲𑒯। 𑒤𑒴𑒪𑒏 𑒧𑒰𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒰𑒠𑒱 𑒠𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒯𑒧 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒢 𑒏𑒻𑒪 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐𑒏 𑒣𑒠𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒏𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿। 𑒍𑒞𑒯𑒱 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒏𑒩𑒞𑒪 𑒡𑓂𑒫𑒢𑒱𑒮𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒯𑒩𑓂𑒭

સમ્નથન કેઉનિ। સ્નવ્ન્ન પ્રુસીક માહૌઉ છઉ। ઉાગા નહઉ છઉ ળે એહિ પનિવ્નિ્નનક સ્વન્મે યડિ યુનમુન સમેન સમસ્ન પ્નક઼ૃનિ શ્રપન સહમનિ વ્યક્ન કઽ નહઉ છઉ। નપ્પનહિ કનહુસઁ ઉમન્ૈન-ઘુમન્ૈન મેઘ સેહો શ્રાવિ ગેઉ। હીસી પડ઼નાઽ શુનુ ભાઽ ગેઉ। ઉાગા નહઉ છઉ ળેના પ્નક઼ૃનિ હૃદયસઁ એહિ યુગાન્નકાની પનિવ્નિ્નનકેં સ્વાગાન કઽ નહઉ છઉ। સભ એકસ્વન્સઁ કહિ નહઉ છઉ-

"ઽનકિઉાવ! ળિદાવાદ!"

"શપ્પિા ળિદાવાદ! શક્નિાથ ળિદાવાદ !"

"ળનક્નાન્નિ દિઉ ળિદાવાદ!"

३४

સમાળમે ભાઽ નહઉ એહિ નિનહક સકાનાન્મક પનિવ્નિ્નનસઁ સભસઁ વેસી પનેસાન નેનાસભ છઉાહ। કાનાાા શ્રાવ હુનકાસભક ભોટવૈક પ્પનમ ભાઽ ળેવાક સંભાવ્ના દેપ્પા નહઉ છઉ। શ્રો સભ નવ્-નવ્ સમસ્યાક નિનિ્માાાકઽ સમાળકેં વઁટવાક પ્નયાસમે નહનિ છઉાહ। ગાામ-ઘનમે કોનો-ને-કોનો નૂપમે શ્રપન ઉપસ્થિનિ વનશ્રોને નહવાક હેનુ એકટા ગુટક સંગા ભાઽ ળઽનથિ,ભને શ્રો કનવો ગાઉન કિઽક નહિ હોશ્રઽ। પનિાાામનઃ વદમાસસભ ઢોઽ ભેઉ ળા નહઉ છઉ। ન્યાય વ્યવસ્થા વહુન મહગા શ્રા ઉવાઉ છઉ। નપ્પન ઉાક ળાઽ કનઽ?

એહિ પનિસ્થિનિમે શપ્પિા એકટા શ્રાશાક કિનાા વનિ કિઽ સમાળક સામનેમે ઉપસ્થિનિ છઉાહ। શ્રો શ્રપના ભનિ પ્નયાસો કનનિ છઉાહ। મુદા સમાળક શ્રંનનવ્નિોય સમસ્યા વનિ કિઽ સામનેમે મુપ્પન ભાઽ ળાઽન છઉ। શ્રાવ ગાામસભ સહનોસઁ વેસી એકાકી ભેઉ ળા નહઉ છઉ। ઉાકસભ શ્રપન દનવાળા યનિ સિમિટિ

कए नहि गेल छल । घर-घर टीभी,मोबाइलपसरि गेल छल । फेसबुक,ह्वाट्सअपपर दुनियाँ भरिक समाचारसँ लोक क्षणमे भरिम अवगत भए जाइत छल । मुदा लग-पासमे की भए रहल छल तकर कोनो जानकारी लोकक सुधि नहि रहि जाइत छल । निश्चय ई परिस्थिति बहुत विकट छल ।

मुदा शम्पा अपन बातपर अड़ल छलि । शम्पा एकटा सही काजमे लागल छलि । जान रहए की जाए ओ अपन लक्ष्यक प्रति बनि कोनो प्रतिदानक अपेक्षाकेँ पूर्ण समर्पित छलि । ओकरा एहि अभियानमे असगरो नहि छोड़ल जा सकैत छल । अस्तु,हम सभ कहिं छोड़ि हुनकर कार्यक्रमकेँ आगू करबामे लागल रहलहुँ। दिन-राति शम्पाक संग देत रहलहुँ ।

जेठक दुपहरिया होअए कि माघक जाड़,शम्पा पैरे-पैरे गामे-गाम भ्रमण करैत रहलीह। ई क्रम एक दिन,दू दिन , दू मास,तीन मास नहि अपितु, वर्षक-वर्ष अनवरत बिना रुकने चलैत रहलीह। गौरवर्णक तेजस्वी आभासँ परिपूर्ण जखन ओ ग्रामवासी लोकनिकेँ संबोधित करथि तँ लोक भाव विह्वल भए जाइत छल । हुनकर बातकेँ अनुसरण करबाक दृढ़ संकल्प करैत छल। बात ओ कोनो तेहन कहबे नहि करथि जकरा करब कठिन होइक । जेना कोनो प्रकारक नीसाँ नहि करब। नेनासभसँ नौकरी नहि कराएब,अपितु ओकरा इस्कूल पठाएब । बृद्धलोकनिकेँ सादर अपन-अपन परिवारमे राखल जाएत । विवाहमे दहेज नहि लेल जाएत । बालिकाकेँ बेटा जकाँ शिक्षा देल जाएत । पारिवारिक संपत्तिमे बेटा-बेटीकेँ बराबरि हक देल जाएत । जाति-पाँति,धार्मिक विवादसँ समाजकेँ मुक्त कएल जाएत। ई सभ बात एहन छल जाहिपर कोनो तरहक प्रश्नचिन्हक प्रश्ने नहि उठि सकैत छल। मुदा ओकर कार्यान्वयनमे परेसानी जरूर छल । कारण लोक उपदेश तँ दए दैत छल ,मुदा जखन अपनापर पड़ैक तँ टारि दैत छल।

एहि तरहेँ समाजमे परिवर्तनक प्रयास करैत-करैत बीस वर्षसँ बेसीए बीति गेल । हमसभ अपन सर्वस्व समाजक हेतु अर्पित कए देलहुँ। मुदा शम्पा अखनहु थाकलि नहि छलीह । पूर्ण आशावान बनल रहथि । तकर अनुकूल परिणामो देखबामे आबि रहल छल । बालिकासभ डाक्टर,इंजीनियर बनि रहल

𑒕𑒪𑒱। 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒮𑒦 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒏𑒋 𑒐𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯,𑒅𑒞𑓂𑒮𑒫 𑒧𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒡𑒩𑓂𑒧,𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒦𑒹𑒠 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒩𑒮𑒞𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒪𑒾𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒬𑒣𑓂𑒣𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒣𑓂𑒢 𑒮𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒦𑒏𑒱𑒕𑒳। 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒙 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒯𑒲 𑒧𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒳𑒪𑒦 𑒯𑒼𑒋𑒞। 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒞𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱,𑒃 𑒮𑓀𑒦𑒫𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒞𑒞 𑒔𑒪𑒋 𑒥𑒪𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒲 𑒃 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒮𑒦 𑒮𑒏𑒰𑒩𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒠𑒱𑒬𑒰𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒛𑒹𑒑 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒲 ,𑒮𑒯𑒲 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒯𑒩𑓂𑒭 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒲। 𑒖𑒏𑒩 𑒖𑒹 𑒯𑒏 𑒕𑒻𑒏 𑒮𑒹 𑒠𑒱𑒌𑒏। "𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒦𑒹𑒪𑒻𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒂𑒑𑒳𑒍 𑒯𑒹𑒞𑒻𑒏। 𑒖𑒰𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒦 𑒮𑒳𑒐𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒋 𑒖𑒰𑒋𑒞, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒁𑒮𑒧𑒰𑒢𑒞𑒰, 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒲, 𑒬𑒼𑒭𑒝 𑒯𑒙𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒞𑒰𑒡𑒩𑒱 𑒩𑒳𑒏𑒥𑒰𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 ।" 𑒮𑒹 𑒍 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒢𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒅𑒠𑓂𑒒𑒼𑒭𑒝𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯-"𑒔𑒩𑒻𑒫𑒹𑒞𑒱! 𑒔𑒩𑒻𑒫𑒹𑒞𑒱!

(𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞)

-𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩, 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧: 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩, 𑒧𑒰𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧: 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨𑒰 𑒠𑒨𑒰𑒏𑒰𑒬𑒲 𑒠𑒹𑒫𑒲, 𑒫𑒨𑒮: 𑓖𑓘 𑒫𑒩𑓂𑒭, 𑒣𑒻𑒞𑒵𑒏 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧: 𑒍𑒛𑓃𑒹𑒩 𑒛𑒲𑒯, 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒏: 𑒮𑒢𑓂𑒢𑒱𑒒𑒰𑒬𑓂𑒩𑒰 𑒛𑓂𑒨𑒼𑒜𑓃𑒲, 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱: 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒅𑒣 𑒮𑒔𑒱𑒫 (𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞), 𑒮𑓂𑒣𑒹𑒬𑒪 𑒧𑒹𑒙𑓂𑒩𑒼𑒣𑒼𑒪𑒱𑒙𑒱𑒢 𑒧𑒖𑒱𑒮𑓂𑒙𑓂𑒩𑒹𑒙, 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲(𑒮𑒹𑒫𑒰𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞), 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰: 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒡𑒰𑒩𑒲 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒮𑒿 𑒥𑒲𑒋𑒮-𑒮𑒲 𑒦𑒾𑒞𑒱𑒏𑒱 𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰 : 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒡𑒱 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒞𑒏, 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒏𑒵𑒞𑒱: 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒧𑒹: 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒭:𑓒𑓐𑓑𑓗 𑓑𑒦𑒼𑒩𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒿𑒗 𑒡𑒩𑒱 (𑒂𑒞𑓂𑒧 𑒏𑒟𑒰),𑓒 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑𑒫𑒬 (𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡), 𑓓𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒋𑒞𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 (𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑); 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒭:𑓒𑓐𑓑𑓘 𑓔 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 (𑒏𑒟𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯) 𑓕 𑒢𑒧𑒮𑓂𑒞𑒮𑓂𑒨𑒻 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮) 𑓖 𑒫𑒱𑒫𑒱𑒡 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓀𑒑 (𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡) 𑓗𑒧𑒯𑒩𑒰𑒖(𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮) 𑓘𑒪𑒖𑒏𑒼𑒙𑒩(𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮); 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢

વ઼્૧ષ:૨૦૧૮ ૯઼સીમાક શ્રોહિ પા૧(ઉપન્યાસ)૧઼૦સમાયાન(નવ઼િય સંગ્૧હ) ૧઼૧માન઼ૢ મૂમાં(ઉપન્યાસ) ૧઼૨સ્વ઼પ્નભોક(ઉપન્યાસ); પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૨૦ ૧઼૩શંપ્યનાદ(ઉપન્યાસ) ૧઼૪૨૯૬ થકિ ળીવ઼ન(સંસ્મ૧ામ)૧઼૫ઠહૈન દેવાભ(ઉપન્યાસ); પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૨૧ ૧઼૬પાથેય઼(સંસ્મ૧ામ) ૧઼૭હમ શ્રાવિ ૧હભ છો(ઉપન્યાસ) ૧઼૮પ્૧ભયક પ૧ાન(ઉપન્યાસ); પ્૧કાશન વ઼્૧ષ:૨૦૨૨ ૧઼૯વીત ગેભ સમય઼(ઉપન્યાસ) ૨઼૦પ્૧ાવિમ્વિ(ઉપન્યાસ) ૨઼૧વદભિ ૧હભ શ્રછિ સમકછિ(ઉપન્યાસ) ૨઼૨૧ાષ્ટ્૧ મંદિ૧(ઉપન્યાસ) ૨઼૩સંયોગ(કથા સંગ્૧હ) ૨઼૪નાયિ ૧હભ છભિ વ઼સુયા(ઉપન્યાસ) ૨઼૫દીપ ળ૧ૈન ૧હએ (ઉપન્યાસ)।

શ્રપન મંતવ્ય઼ દિ઼ત઼ીન૧ાભિ઼સના઼ઙઙ઼વ઼દિ઼હ઼ા઼૦ગમાભિ઼યોમ **પ૧ પઠાઉ।**

૨઼૮કશિન કાનીગ૧- વુહક્કની દાવીએ યૂ૧ ગૈ હમ૧ા પાછુએ ઘૂ૧? (હાસ્ય઼ કટાક્ષ)



𑒏𑒣𑒱𑒪 𑒏𑒰𑒢𑒲𑒑𑒰𑒩
𑒫𑒳𑒠𑓂𑒡𑒏𑒲 𑒠𑒰𑒥𑒲𑒋 𑒖𑒴𑒩 𑒢𑒻 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒣𑒰𑒕𑒳𑒋 𑒒𑒴𑒩? (𑒯𑒰𑒮𑓂𑒨 𑒏𑒙𑒰𑒏𑓂𑒭)

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒛𑓃𑒥𑒛𑓃𑒰𑒃𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰𑒯 𑒏𑒯𑒟𑒱 𑒞 𑒋𑒯𑒢𑒼 𑒏𑒯𑒲 𑒫𑒳𑒠𑓂𑒡𑒏𑒲 𑒠𑒰𑒥𑒲 𑒖𑒹𑒪𑒻𑒋? 𑒖𑒹 𑒯𑒧𑒯𑒱𑓀 𑒙𑒰 𑒥𑒛𑓂𑒛 𑒏𑒰𑒥𑒪𑒱 𑒫𑒳𑒠𑓂𑒡𑒏𑒹𑒩 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒞 𑒞𑒕𑒱 𑒫𑒳𑒠𑓂𑒡𑒹 𑒢𑒹 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒯𑒼𑒅 𑒖𑒹𑒢𑒰? 𑒯𑒧𑒯𑒱𑓀 𑒙𑒰 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒪𑒱𑒐𑒻 𑒕𑒲 𑒂 𑒧𑒯𑒰𑒫𑒻𑒨𑒰𑒏𑒩𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒫𑒪𑒰 𑒠𑒰𑒥𑒲 𑒖𑒹 𑒂𑒢 𑒁𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒻 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒏𑒩𑒝 𑒏𑒹 𑒮𑒧𑒗 𑒏𑒞𑓂𑒞𑒹 𑒮𑒿 𑒕𑒻? 𑒖 𑒋𑒏 𑒂𑒡 𑒙𑒰 𑒏𑒫𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒹𑒪𑒢 𑒧𑒹 𑒔𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒼𑒃 𑒂 𑒏𑒱 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒧𑒲 𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒼𑒅 𑒞𑒼𑒐𑒹 𑒮 𑒞𑒫 𑒞 𑒂𑒢𑒼 𑒁𑒢𑒏𑒩 𑒧𑒼𑒖𑒩 𑒢𑒻 𑒏𑒯𑒻 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻 𑒏𑒲?

𑒯𑒧 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒮 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒖𑒹 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒦𑒢𑒰𑒫 𑒂 𑒏𑒲 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒻 𑒕𑒱𑒨𑒻 𑒮𑒹 𑒞 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒐𑒻𑒮𑒪 𑒏𑒩𑒻 𑒏𑒲𑒢𑒹? 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒹 𑒧𑒼𑒖𑒩 𑒢𑒻 𑒏𑒯𑒻 𑒖𑒰𑒃𑒋 𑒞 𑒁𑒯𑒴𑒿 𑒧𑒼𑒖𑒩 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒴? 𑒋𑒞𑒹 𑒧𑒟𑒰𑒣𑒹𑒔𑒲 𑒏𑒻𑒪𑒋? 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒻 𑒯𑒾 𑒏𑒰𑒢𑒲𑒑𑒰𑒩 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒱 𑒧𑒹 𑒁𑒖𑒥𑒹 𑒞𑒪 𑒕𑒻 𑒮𑒥 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒠𑒰𑒥𑒋 𑒖𑒴𑒩 𑒪𑒯𑒞 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒥𑒛𑓂𑒛 𑒏𑒰𑒥𑒪𑒱 𑒪𑒹𑒐𑒏, 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒞 𑒁𑒠𑒩 𑒥𑒠𑒩 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒋?

𑒠𑒩𑓂𑒬𑒏 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒮𑒥 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒏𑒞𑒰𑒥 𑒣𑒜𑓃𑒥𑒹 𑒢𑒻 𑒏𑒹𑒪𑒏𑒻 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒧𑒢𑒹 𑒠𑒰𑒥𑒲𑒋 𑒖𑒴𑒩 𑒪𑒯𑒞? 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒖𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒢𑒻 𑒅𑒯𑒼 𑒮𑒥 𑒧𑒟𑒱𑒪𑒱 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒱 𑒚𑒲𑒏𑒹𑒠𑒰𑒩 𑒏 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒪𑒪 𑒫𑒳𑒠𑓂𑒡𑒏𑒹𑒩 𑒠𑒰𑒥𑒲𑒋 𑒑𑒾𑒩𑒫𑒹 𑒖𑒴𑒩 𑒪𑒯𑒞𑓂 𑒖𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒣𑒫𑒪𑒏𑒱 𑒖𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒫𑒳𑒠𑓂𑒡𑒏 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒁𑒢𑒹𑒩𑒴𑒂 𑒠𑒰𑒥𑒲 𑒖𑒴𑒩𑒧𑒴𑒩 𑒦𑓄 𑒖𑒹𑒞𑒻 𑒏𑒲?

𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒥𑒖𑒯𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒱𑒯𑒏 𑒞 𑒩 𑒏𑒕𑒱 𑒖𑒼𑒑𑒣𑒲𑒫𑒰 𑒑𑒖𑒣𑒲𑒫𑒰 𑒠𑒪𑒪 𑒁𑓀𑒔𑒪𑒏𑒞 𑒮𑒥 𑒯𑒧𑒩𑒹 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒯𑒙𑒩𑒫𑒰, 𑒏𑒰𑒢𑒲𑒑𑒰𑒩𑒫𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒁𑒫𑒯𑒹𑒪𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒞𑒯? 𑒣𑒳𑒕𑒥𑒯𑒏 𑒋𑒢𑒰 𑒏𑒃 𑒞 𑒮𑒴𑒩𑒮𑒥𑒴𑒏 𑒣𑒩 𑒑𑒪𑒟𑒼𑒟𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒞𑒯? 𑒍𑒞𑒾𑒯 𑒏𑒳𑒞𑒩𑓂𑒏 𑒏 𑒫𑒳𑒠𑓂𑒡𑒏𑒲 𑒠𑒰𑒥𑒲 𑒠𑒹𑒐𑓂𑒨𑒰 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒢𑒲𑒨𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒻 𑒏𑒹 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒧𑒹 𑒪𑒯𑒞𑒯 𑒏𑒲? 𑒂𑒥 𑒪𑒖𑒼 𑒨𑒰𑒣𑒱 𑒕𑒻 𑒏𑒯𑒰𑓀 𑒁𑒃 𑒢𑒧𑒱𑒪𑒖𑒰 𑒮𑒥 𑒏𑒹?

हम बाबा के टोकलहुँ जे बड़बड़ाइते रहब की एकर समाधानो हेतै? बाबा हं हं क हँसैत बजलाह जखनि आब हमरा कोनो डर अछि की? आब हमहूँ एकरा सब लक बुद्धक्की दावीए रहब जून आ ई सब हमरा पाछुए घून? करतै बतकुट्टैल त आब पर्लकि घ्यहितै क देतै गलबल्ली मे जूनमून

अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

२.अरविन्द ठाकुर- हहटिया बहु (लघुकथा)



𑒁𑒩𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩

𑒗𑓀𑒗𑒙𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒯𑒳 (𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰)

𑒗𑓀𑒗𑒙𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒧𑒴𑒪 𑒢𑒰𑒧 𑒗𑓀𑒗𑒙𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒋।

𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒁𑒢𑒴𑒣𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒳𑒩𑒳𑒖 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒯𑒩𑒥𑒰𑒯 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢 𑒂 𑒮𑒳𑒩𑒳𑒖 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒦𑒰𑒑𑒱𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒩 𑒍𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒩𑒰𑒐𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢 𑒏𑒧𑒪 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩। 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒄 𑒏𑒧𑒪 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒯-𑒯𑒰𑒟 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒯𑒱 𑒋𑒯𑒢 𑒦𑒰𑒩𑒲 𑒐𑒔𑓂𑒔𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒞-𑒥𑒰𑒞 𑒣𑒩 𑒖𑒹𑒏𑒩𑒰-𑒞𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓀 𑒜𑒰𑒯𑒱 𑒪𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪, 𑒪𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒠𑒻𑒫 𑒅𑒠𑓂𑒨𑒞। 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒮𑓀 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒙𑒩𑒲 𑒥𑒻𑒮𑒥𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒋। 𑒩𑒼𑒖𑒏 𑒪𑒛𑓃𑒰𑒃-𑒗𑒑𑒛𑓃𑒰, 𑒩𑒼𑒖𑒏 𑒯𑒰𑒟𑒰𑒣𑒰𑒃, 𑒩𑒼𑒖𑒏 𑒑𑒪𑓂𑒪𑒧-𑒑𑒪𑓂𑒪𑒰। 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒧𑒰𑒟 𑒤𑒼𑒛𑓃𑒥𑒻𑒢𑒹 𑒒𑒳𑒩𑒋, 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒚𑒹𑒯𑒳𑒢 𑒤𑒼𑒛𑓃𑒥𑒻𑒢𑒹 𑒞 𑒏𑒯𑒱𑒞𑒼 𑒠𑒰𑓀𑒞 𑒞𑒼𑒛𑓃𑒥𑒻𑒢𑒹। 𑒋𑒏𑒩 𑒁𑒯𑒱 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒝𑒮𑒦𑒏 𑒔𑒪𑒞𑒹 𑒋𑒏𑒩 𑒋𑒏𑒞𑒳𑒩𑒱𑒨𑒰𑒮𑒦 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒗𑓀𑒗𑒙𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒯𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪𑒋 𑒂 𑒏𑒰𑒪𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒧𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒧 𑒏𑒹 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒪𑒏, 𑒧𑒴𑒪 𑒢𑒰𑒧 𑒯𑒹𑒩𑒰𑒋 𑒑𑒹𑒪𑒋 𑒂 𑒏𑒧𑒪 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑓀𑒗𑒙𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒮𑓀 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒮𑒧𑒨 𑒁𑒋𑒪𑒋। 𑒗𑓀𑒗𑒙𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒦𑒹𑒪𑒋। 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑓀 𑒁𑒋𑒪𑒋 𑒞 𑒍𑒏𑒩 𑒙𑒼𑒪𑒏 𑒖𑒢𑒰𑒢𑒲𑒮𑒦𑒏 𑒧𑒳𑓀𑒯 𑒣𑒩 𑒋𑒏𑒹𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒩𑒯𑒋' 𑒖𑒹𑒯𑒢𑒹 𑒗𑓀𑒗𑒙𑒱𑒨𑒰, 𑒞𑒹𑒯𑒢𑒹 𑒥𑒯𑒳! 𑒯𑒹 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢! 𑒋𑒯 𑒢 𑒏𑒩𑒴𑒣 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒂𑒃 𑒞𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒪। 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒞𑒰 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒐𑒼𑒔𑒯𑒰 𑒏𑒩𑒔𑒲 𑒮𑓀 𑒥𑒢𑒻𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹𑒢𑒰!'

અહિ કનિયાંક નૈહર મે જે નામ રહલ હુઅએ, સાસુર મે ઓ 'હંહટિયા વહુ'ક નામ સં પ્રસિદ્ધિ ભેલ। વિવાહ વાદક કિછુ દિન, કિછુ હફ્તા, કિછુ મહિના ત ઠીક-ઠાક ચલલએ, તેકર વાદ લોકક ઉઠૌનાવલ ઘોલ-પચક્કા શુરૂ ભેલ। કોનો એહન દિન નહિ જાઇ જે દુનૂ પરાની મે હંહટ નહિ હોઇ। આ સે હંહટ એહન-ઓહેન નહિ, જાનિજાનિ કએલ કોનો એક પક્ષ પહિને હલ્લુક-સન ગારિ-વાત પર ઉતરએ આ તેકર વાદ રાંઢ઼ી-વેટખૌકી હોઇત હોટા-હોટી તક પહુંચ જાઇ। ઘરક લોકક કથે કી, સૌંસે ટોલ મે ગર્દમગોલ ભએ જાઇ। એકર કોનો સમય સેહો નિર્ધારિત નહિ રહએ। કહિયો ભોર હોઇતહિ શુરૂ, કહિયો દુપહરિયાક જોગ દેખૈત, કહિયો સાંઝક દિયા-વાતી પહર મે, કહિયો રાતિક પ્રથમ પહર, ત કહિયો મધ્ય રાત્રીક સ્તબ્ધ પહર કેં ચિર્રીચોથ કરૈત। કાલાન્તર મે હંહટિયા ત હંહટિએ રહલ, કિન્તુ હંહટિયા-વહુક સંગ અનેકાનેક વિશેષણસભ જુડ઼ૈત ચલિ ગેલએ કોઢની, અલવટાહ, નટ્ટિન આદિ-આદિ વિવાહક ચારિ-પાંચ વરસ વિતલાક વાદો જખનિ ઓકરા કોનો સંતાન નહિ ભેલએ ત ઓકરા સંગ એકટા વિશેષણ ઓર જુડ઼િ ગેલએ વાંઝ।

એકદિન ખેત પર કમઠાઉન કરૈત સ્ત્રીગણક ગપક ક્રમ મે મેનહાવાલી કહલકએ 'અહિ મૌગીક છાતી પર દૂધક ચૈલ છેવે નહિ કરએ ત એકરા વાલ-વચ્ચા કતએ સં વિતએ!'

હંહટિયા આ હંહટિયા-વહુ દુનૂક બીચ જર-જમાનાક એહેન-એહેન ઉપાધિસભ ચલિ-સન।

હંહટિયા કેં જન-મજૂરીક કાજ ભેટવ મુશ્કિલ રહએ। જેતહિ જાઇ, અપન સંગી મજૂરસભક સંગ કોનો ને કોનો હંહટ કએ લઇએ, કોનો ને કોનો અવસાદ ઠાઢ કએ દિઅએ, કતહુ પોસિન્દહિ સં ભીડ઼ જાઇ। તેં એના હોઇ જે ચપચટ મે દૂ-

તીન દિનિક કાળ બેટઘ આ મહિનાક છવ્વીસ-
સત્તાઇસ દિન વિના કોનો કાળકા હંહ્ટયિા વહુ ઓકરહુ સં સેસ્સના પેત-
પોસિનક કાળ કરવાક પ્રતિ કોનો નૂર્ય નહિ ટોઘક આન સ્ત્રીગામ ળકાં
 વોનિ કિમાએવ ઓકર સ્વભાવે મે નહિ ઘર મે પેનાર તક વનૈનાર ઓકરા બા
રી વુહ્રાવએ કોનો અડ઼ોસની-પડ઼ોસની સં ને કોનો ગપક સંવંધ ને કોનો કામ-
કાળક, તે અપન ટુટઘ મઢહિયાક જુરયાં પર પટયિા વછિાએ કએ ઓઘરાઇઘ ર
હૈત રહએ આયા સં વેસી માસ ઉપાસે ળાતિ રહએ, તે પારકો વનૈવાક હંહ્ટ કમે
 હોએ એક દિન વનઘ આ વચઘ રહઘ ત ઓએહ વસયિા દૂ દિન-
તીન દિન ચઘએ, નહિ વિચએ ત ળૈ ગોવરૂચના

સે હંહ્ટયિા-વહુ એક દિન અચરાળક કાઘ કએઘકા ચાર-
પાંચ વરસ વતિઘાક વાદો ળપ્પનિ ઓકરા વાઘ-
વચ્ચા નહિ બેઘએ ત આ અડ઼ોસની-
પડ઼ોસની સં વતિઆવએ ઘાગઘ સે વાત કી ત હંહ્ટયિાક દોસર વિયાહક ઘઘ ઘ
ડ઼કી પોળવાક નહિરા અડ઼ોસની- પડ઼ોસની સુનએ આ સુનિ કિએ મને-
મન હંસએ મુંહ પર કછિો કિહવાક સાહસ ત રહએ નહિ કિન્તુ પરોક્ષ મે ઓક
ર નહિરાક ગપ કએ ઠહક્કાવાળી કરએ, ઠઠિઘ કરએ એહન હંહ્ટયિા આ અક
રવ મનસિા, તહિ પર સો નંવરક કોઢની એકટા વહુ, તેકરા કે પપિઆહ અપન
વેટી દેતએ? કછિુ દિન તક હંહ્ટયિા-
વહુ અહિ બિરોસ મે રહઘ ળે ટોઘક ઈ અડ઼ોસની-
પડ઼ોસનીસભ ઓકરા મદદ કરતએ કિન્તુ ળઘદિ ઓકરા અહિ વાતક બાન બ
એ ગેઘએ ળે ઓકરાસભ સં કોનો આસ રાપ્પવ વ્યર્થ છૈ

આ એક દિન, ળહિ દિન આનહિ દિન ળકાં સુરુળદેવ ઉગાઘ રહથિ, આનહિ દિન
ળકાં બોર આ દુપહર બેઘ રહએ, તહિ દિનિક સાંહ મે હંહ્ટયિા-વહુક અડ઼ોસ-
પડ઼ોસ, ટોઘક ઘૌગ અપન આંપ્પિ ચિયિારિ-ચિયિારિ, પપિની કે વેર-વેર રગડ઼િ-
રગડ઼િ કિએ આશ્ચર્યચકિત બેઘ હંહ્ટયિાક ટૂટઘ મઢહિયા મે એકટા નવકી ક
નિયાં કે આવૈત, પ્રવેશ કરૈત દેપ્પઘકા નવકી કનિયાંક અએવાક પવરિ કાને-

કાન સૌસે ગામ મે ઈ વાત પસરિ ગેલઇ। પુરુષલોકનિ અપન-
અપન ગોલ વનાએ દુરહિ સં પ્રાપ્ત અહિ અચરાજકારી ઘટના પર ચર્ચા કરથિ
, ચર્ચા મે વિસ્મય વ્યક્ત કરથિ, વિભિન્ન તરહક અનુમાન લગાવથિ આ અ
હિ અન્હેર પર ટીકા-ટિપ્પણી કરૈત સ્લીલ-અસ્લીલ હંસી-
મજાક કરથિ। જનાનીસભક અલગે તાલ, અલગે ગાંજ રહઇ। ઓસભ હંટ્ટયિા
ઘર પર મજમા લગાએ દેલક। ઓકરાસભ કે કોનો રોક-
ટોક ત રહઇ નહિ। આવઇ, મઢહિયિા મે હુલિ જાઇ,કનિયિાં કે દેખઇ આ અપન આંટૈ
ત કોઢ કે આટઇ સં વચૈવાક લેલ દુનૂ હાથ સં અપન છાતી પકડ઼ને, દેખૌસ લેલ
અપન મુંહ વિચકાવૈત અપન-અપન ઘરક ડગર ચઇ લઇિઇ।

"હઓ માલિક, અન્હેર છૈ! નવકી કનિયિાં હંટ્ટયિા-
વહુક મમઓૌત વહિન છઇિઇ। વચ્ચા મે મલરિયિા-કાલાજાર જેલ રહઇ, મરૈત-
મરૈત વચલ રહઇ। સુખઇ કઇ ટટાએલ છૈ સૌસે દેહ મે હડ્ડિ-
હડ્ડી। છૈ ત કનિયિાં ઝાક-
ઝાક ગોર મુદા વિભિરિયિા દેહ છૈ। ઈ મૌગી ગાજ કેના ચરતઇ આ ચરતઇ ત ઓક
રા સમ્હારિ કેના સકતઇ?" મરૌનાવાલી કહલકઇ।

કિન્તુ દુનિયિાં અચરાજ સં ભરલ છૈ આ હંટ્ટયિાક ટોલ કિ હંટ્ટયિા સેહો રઇહ
 દુનિયિાંક હિસ્સા મે રહઇ। સે અચરાજ જેલઇ સાલ વીતૈત-
વીતૈત હંટ્ટયિાક નવકી કનિયિાં, જે સૌસે ટોલ મે 'મરલહિયિા'ક નામ સં પ્રસિ
દ્ધિ પએને છલ, ગાજહુ ચઇલક, ઓકરા સન્હારિઓ લેલક આ એકટા પુત્રક રૂ
પ મે ઓકરા ચરા-ચામ પર ઉતારિઓ દેલક।

ઈ અચરાજ એત્ય ખતમ નહિ હોઇ છૈ, એત્ય સં શુરૂ હોઇ છૈ।

આ એકર વાદવલા અચરાજ એક દિન હમરા ઘર તક પહુંચલ।

એક દિન વરામદા પર સં વૈસલ-
વૈસલ દેખલિઇ જે એકટા સપાટ છાતી વાલી પરમ કુરૂપા સ્ત્રી હમર પરાસિ

𑒪 𑒧𑒹 𑒒𑒳𑒮𑒪, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒧𑒰𑒟 𑒣𑒩𑒏 𑒮𑒰𑒛𑓃𑒲𑒏 𑒕𑒼𑒩 𑒏𑒹𑓀 𑒏𑒢𑒲 𑒢𑒱𑒔𑒱𑒨𑒰𑓀 𑒒𑒱𑒔𑒪𑒏, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒪𑒑𑒰 𑒂𑒥𑒻𑒞-𑒂𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒞𑒰𑒢𑒪 𑒒𑒼𑒒 𑒏𑒹𑓀 𑒏𑒢𑒲 𑒎𑒩 𑒞𑒰𑒢𑒪𑒏 𑒂 𑒏𑒢𑒲-
𑒏𑒢𑒲 𑒯𑒏𑒱𑒨𑒏𑒱𑒨𑒰𑒃𑒞, 𑒏𑒢𑒲-
𑒏𑒢𑒲 𑒟𑒟𑓂𑒨𑒰𑒃𑒞 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒑𑒪 𑒮𑓀 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒍𑒜𑓃𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒏𑒹 𑒯𑒧𑒩 𑒂𑓀𑒑𑒢 𑒠𑒱𑒮𑒱 𑒣𑒻𑒮𑒱 𑒑𑒹𑒪।

𑒥𑒰𑒠 𑒧𑒹 𑒑𑒵𑒯𑒮𑓂𑒫𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲 𑒥𑒞𑒾𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒍 𑒯𑓀𑒯𑒙𑒱𑒨𑒰-
𑒥𑒯𑒳 𑒩𑒯𑒋 𑒏𑒰𑒖 𑒐𑒼𑒖𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒪 𑒂𑒋𑒪 𑒩𑒯𑒋 𑒯𑒧𑒩 𑒒𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒖𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒋𑒧𑒯𑒩 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑓀 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒁𑒑𑒢𑒰𑒋𑒪-
𑒧𑒑𑒢𑒰𑒋𑒪 𑒖𑒏𑒰𑓀 𑒩𑒯𑒋 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒠𑒱𑒢 𑒂𑒥𑒋, 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒠𑒱𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒥𑒋। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒠𑒱𑒢 𑒖𑒼𑒩 𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒋 𑒞 𑒮𑒰𑓀𑒗 𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒑𑒰 𑒏𑒋 𑒠𑒱𑒁𑒋। 𑒑𑒵𑒯𑒮𑓂𑒫𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒢 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒞𑒹𑒯 𑒕𑒰𑒋𑒪 𑒩𑒯𑒢𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒞𑒹𑒯𑒕𑒪 𑒧𑒢𑒯𑒏𑒱 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒰𑒧 𑒩𑒯𑒋 𑒖𑒹 𑒄 𑒖𑒰𑒢𑒱𑒞𑒯𑒳 𑒖𑒹 𑒯𑓀𑒯𑒙𑒱𑒨𑒰
-
𑒥𑒯𑒳 𑒣𑒩𑒧 𑒥𑒹𑒪𑒳𑒢𑒰 𑒕𑒻, 𑒍 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒰𑒖 𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒥 𑒑𑒕𑒱 𑒪𑒹𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒟𑒱𑒢। 𑒁𑒨𑒢𑒰𑒖𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑓀𑒨𑒼𑒑 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂𑒥𑒋 𑒕𑒻।

𑒋𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠𑒏 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒑𑒵𑒯𑒮𑓂𑒫𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒨𑒞𑒲-
𑒥𑒱𑒪𑒰𑒣 𑒮𑒳𑒢𑒻𑒞 𑒥𑒲𑒞𑒪 𑒯𑓀𑒯𑒙𑒱𑒨𑒰-
𑒥𑒯𑒳 𑒣𑒩𑒧 𑒁𑒏𑒩𑒥 𑒕𑒻, 𑒥𑒰𑒮𑒢𑒮𑒞 𑒏𑒹𑓀 𑒢𑒲𑒏 𑒮𑓀 𑒢𑒯𑒱 𑒧𑒰𑓀𑒖𑒋 𑒕𑒻, 𑒒𑒩𑒏𑒙𑒪𑒯𑒱 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒋 𑒕𑒻, 𑒥𑒰𑒜𑒢𑒱 𑒠𑒋 𑒕𑒻 𑒞 𑒏𑒰𑒞-𑒏𑒼𑒢𑒙𑒰𑒏 𑒑𑒩𑒠𑒰-
𑒧𑒰𑒙𑒱 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒕𑒳𑒙𑒪 𑒩𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻, 𑒣𑒼𑒕𑒰 𑒠𑒋 𑒕𑒻 𑒞 𑒁𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩 𑒣𑒩 𑒧𑒙𑒱𑒂𑒋𑒪 𑒛𑒱𑒛𑒱𑒩𑒱 𑒮𑒞 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒻, 𑒁𑒢𑒮𑒼𑒯𑒰𑓀𑒞 𑒪𑒰𑒑𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒋 𑒕𑒻, 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒰𑒖 𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒐𑒥 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒦𑒰𑒩𑒲 𑒦𑒴𑒪 𑒦𑒹𑒪, 𑒂𑒠𑒱-𑒂𑒠𑒱 𑒥𑒰𑒮𑒢𑒏 𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒏𑒰 𑒮𑓂𑒙𑒛𑒲-
𑒩𑒴𑒧𑒏 𑒗𑒰𑒛𑓃𑒴-𑒣𑒼𑒕𑒰𑒏 𑒯𑓀𑒯𑒙𑒱𑒨𑒰-
𑒥𑒯𑒳𑒏 𑒏𑒩𑒞𑒥𑒮𑒞 𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒞𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒲। 𑒠𑒹𑒐𑒲, 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒏𑒋 𑒧𑒢𑒯𑒱-𑒧𑒢 𑒏𑒢𑒲-
𑒧𑒢𑒲 𑒣𑒢𑒱𑒣𑒢𑒰𑒃 𑒂 𑒄 𑒮𑒼𑒔𑒱 𑒔𑒳𑒣 𑒩𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒖𑒹 𑒄 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒱𑒦𑒰𑒑 𑒢𑒯𑒱 𑒟𑒱𑒏, 𑒁𑒢𑒹𑒩𑒹 𑒧𑒑𑒖𑒣𑒔𑓂𑒔𑒲 𑒏𑒩𑒱 𑒏𑒢𑒲।

કિન્તુ પનરહિયા વીતૈત-
વીતૈત ગ ૃહસ્વામિનીક શક્રિયતા વોઉ ક્રમશઃ ઘટૈત ગેઉનિ આ માસ વીતૈત-
વીતૈત એકદમ્મે વંદ ભાએ ગેઉ તેકર વાદ હુનક શ્રીમુખ્ય સં યદા-
કદા હંહ્ટયિા-
વહુ ઊઊ પ્રશંસાક વોઉ સેહો આવએ ઊગઊ અહુના એોક દનિક વૈવાહકિ ઝીવન મે અહિ વાતક અનુભવ ત હમ કૈએ ગેઉ છી ઝે ઝં કોનો વાત, કોનો વસ્તુ સં ગ ૃહસ્વામિની કે શક્રિયતા નહિ છનિ ત એકર સાસ્ઠ-
સાસ્ઠ અર્થ અછિ ઝે ઓ ઓહિ વાત, ઓહિ વસ્તુ સં સંતુષ્ટ છથિ

ગ ૃહસ્વામિની ગામક મહિઊઊકનકિ ઊઙરારન છથિ આ તે હમરા ઘર મે મહિઊઊકનકિ અવરઝાત ઊગઊહિ રહૈત અછિ ભતિરકા મોહઊ મે હુનકાસભક ઊઊ યાયક પાનિ સદૈવ યઢઊહિ રહૈત અછિ ઝાનકારી ભેટઊ ઝે એહન પ્રત્યેક અવસર પર આવ અપન નયિત કાઝક અતિરિક્ત હંહ્ટયિા-
વહુ હ્ટ દએ યાય વનૈવાક ઊઊ અગુઆએ ઝારત અછિ આ તેકરા કપ-
પ્ઊટ મે નાપ્પિ સિભ કે સાદર પરોસિ સેહો આવૈત અછિ હમર ઘર અએનિહારિ મહિઊઊકનિ ઘરક સાસ્ઠ-સસ્ઠાર દેખ્થિ, ઓકર સંઝ્ઞાન ઊથિ આ હંહ્ટયિા-
વહુક વનાએઊ યાય પીવિ આનંદતિ હોથિ અહિ સં હંહ્ટયિા-
વહુક યશ હમર ઘર સં હોરત વાહરહુ-વાહર પહુંચઊએ આ ઓકરા ઓર દૂ-
તીન ઘરક કાઝ ભેટ ગેઊએ ઓ કેકરહુ નિરાશ નહિ કએઊક આ તીનૂ-
યારૂ ઘરક કાઝ મન ઊગાએ કએ કરએ ઊગઊ કાઝ ત ઓકરા ઓર ભેટૈત રહએ કિન્તુ તેકરા ઊઊ ઓકરા સમય નહિ વચૈત રહએ ભરિ દિનિ અહિ ઘર સં ઓહિ ઘર આ ઓહિ ઘર સં અહિ ઘર, એક ક્ષણક સ્ઠુરસત નહિ હમર ગ ૃહસ્વામિની યકતિ ભેઊ કહથિ ઝે કતેક પાનિ છૈ અહિ મૌગીક દેહ મે ઝે એોક ઘર સભ મે ખટનીક વાદહુ હંહ્ટયિા-વહુ ટન-
ટન કરૈત રહૈત અછિ, થકનીક નામ નહિ આ ઝં થકની છૈ ત ઓકરા દેખાર નહિ હુઅએ દૈત અછિ

સમય અહિના વીતૈત ગેઊએ

एक दिन देखलिऐ जे हुंडरिया-बहु स्कूल-ड्रेस मे सुसज्जित एकटा गोर-नार छौड़ाक स्कूल-बैग अपन कंधा पर राखने ओकर हाथ पकड़ि हमर घरक सामनेक सड़क सँ चलि जाइत रहए। स्वाभाविक रूप सँ जिज्ञासा भेल, केलिऐ गृहस्वामिनी बहिनक कहलनि 'सभ चमत्कारक मूल मे बएह छौड़ा अछि'। हुनका ज नाएल गेल जे ओ छौड़ा हुंडरिया-बहुक सत-बेटा कहिऔ कि बहिन-बेटा छिऐ। अपन समस्त कमाएल ओ ओकरहि पर खर्च करैत अछि। नीक-सुन्दर कपड़ा-लत्ता, नीक आ पौष्टिक भोजन आ ओकरा एकदम साफ-सुथरा राखब एकर प्राथमिक कर्तव्य भेल छै। चारि-पाँच घरक चौका-बासन, झाड़ू-पोछा करितहुँ ओ ओहि छौड़ाक कोनो काज लागा नहि हुअए दए छै।

'आ एकटा बात बुझलिऐ? ओ ओहि छौड़ाक नाम ओहि स्कूल मे लिखबेने छै जहि मे अहाँक पोता-पोती पढ़ैत अछि' कहैत गृहस्वामिनीक गप मे गर्वक भाव रहनि।

दुनियाँ अचरज सँ भरल छै आ अहि अचरजक कोनो अंत नहि।

एक दिन मन मे अकस्मात एकटा प्रश्न जागल। गृहस्वामिनी कें हाक देलि ऐनि। अएलीह त पुछलियनि 'हुंडरियाक की हाल छै?'

गृहस्वामिनी तेना कए हमरा दिस ताकलनि जेना हम कोनो प्रलयाण्ड बुड़ि होइ। तेन कनी बकर भेलनि आ ओलहनक स्वर मे कहलनि 'ई लिखए-पढ़ैक चक्कर मे अहाँ कें किछु बुझलहु रहए ए जे अहि दुनियाँ मे की-की भए रहल छै?

ओर बजलीह 'बेटा भेलाक बाद हुंडरिया किछु दिन तक घरहि मे गुप्त-बास चए लेलका। ने किछु बाजए, ने भुकए। रहए-रहए आ उठि कए एक बेर-दू बेर-बेर-

बेर बेटाक मुंह देखि आबए बहुत दिनक बाद एक दिन घर सं बहराएल आ सड़क पर दौड़ए लागल। तकर बाद ई दौड़ब ओकर नित्य-कर्म भए गेल। लोक जखनी ओकरा देखए, दौड़ाइ देखए आ बुझए जे हुंहटपिया बताह हेबाक डगर धए लेलक अछि।'

'ठीके बताह भए गेलए की?' हमर ब्याकुल उत्सुकता हुनका टोकलकनि।

'सुनिऔ त!' ओ बजलीह।

आन हुनक स्वभाव सं बिपरीत हुनक ठोर पर एकटा खूब मीठगर, खूब आह्लादकर मुस्की अएलनि, कहलनि 'पुलिसक भर्ती निकलल रहए। हुंहटपिया ओहि मे भाग लए हसिसा लेलक। दौड़क प्रतियोगिता मे ओ सौसे जिलाक प्रतिभागीसभ मे अौवल रहल। पहिलुक सेलेक्शन ओकरे भेलए। अपना कोनो थाना नहि भेटलए त अपना पुलिस-लाइन मे ड्यूटी भेटल छै। बुझलिऐ, कालिदास जी !'

हमर अचानक सं बाबल मुंह देखैत आ देखि कए आनन्ददायी-बदमाशीक हंसी हंसैत हमर गृहस्वामिनी अंगना दिसि चलि गेलीह।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३. पद्य

३१पवन मिश्र 'गोनौली'-मैथिलीक संस्कृति आ पारिस्थितिक स्वरूप



પવન મિશ્ર 'ગોનૌલી'

મૈથિલક સંસ્કૃતિ આ પરિવર્તનક સ્વરૂપ
(પદ્યમય)

૧
પરિવર્તન સૃષ્ટિક અછિ આધાર,
પલ- પલ ઘટિત હોઇત રહૈછ |
સૃષ્ટિક કોનો અવયવ એહિસઁ નઞ બચલ
પરિવર્તનક બિના જીવન તથા
પ્રકૃતિક કલ્પના નઞ ભઽ સકૈછ ||

જ્ઞાન, અનુભવ, અનુભૂતિ આ પ્રયોજન
ભેલ કરૈછ સમયક સાપેક્ષ |
પરિવર્તન કહિઓ સાર્થક કહિઓ નિરર્થક,
સાર્થક પરિવર્તન જીવનક પ્રાણ હોઇછ ||

નજરિ ઘુમા કઽ દેખિ તઁ,
માનવ જીવનક પરિવર્તન, પહિરન- ઓઢ઼ન,
સભ્યતાક આરંભહિસઁ |
ખાન- પીન, રહન- સહન આ મનોરંજન,
સામૂહિકતાસઁ નિજતાક દિશિ ક્રમશઃ પ્રારંભહિસઁ||

𑒮𑒦𑓂𑒨𑓃𑒞𑒰 𑒂 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒠𑒞𑒱 𑒩𑒯𑒪
𑒁𑒢𑓂𑒨𑓃𑒼𑒢𑓂𑒨𑓃𑒰𑒬𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 ।
𑒋𑒏𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏𑒹𑓀,
𑒫𑓂𑒨𑓃𑒰𑒫𑒯𑒰𑒩𑒱𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑓃𑒰𑒏𑒪𑒰𑒣,
𑒮𑒼𑒔 𑒂 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒨𑓃 𑒜𑓀𑒑 ॥

𑓒

𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹,
𑒪𑒼𑒏 𑒂𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒂 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒏 𑒏𑒩𑒥 𑒥𑒰𑒞 ।
𑒫𑒹𑒠- 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝, 𑒮𑒢𑒰𑒞𑒢 𑒡𑒩𑓂𑒧, 𑒞𑒰𑓀𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒧𑒞
𑒂 𑒪𑒼𑒏𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 ॥

𑒪𑒼𑒏𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫 𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒁𑒡𑒱𑒏,
𑒪𑒼𑒏𑒫𑒹𑒠𑒏 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒪 𑒟𑒱𑒏 ।
𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒞𑒐𑒢 𑒫𑒹𑒠,
𑒋𑒯𑒱 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒨- 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢,
𑒂𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒂 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒢-𑒖𑒢 ॥

𑒫𑒻𑒠𑒱𑒏𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒑𑒝,
𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒥𑒜𑓃𑒼𑒞𑒩𑒲 𑒁𑒯𑒳𑒧𑒹 𑒂 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 ।
𑒢𑒫- 𑒢𑒫 𑒠𑒹𑒫𑒲- 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯,
𑒁𑒫𑒞𑒰𑒩𑒫𑒰𑒠𑒏 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒣𑒥𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒯 ॥

𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒹 𑒢𑒫- 𑒢𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑𑒏 𑒦𑒹𑒪 𑒔𑒪𑒢𑒮𑒰𑒩𑒱,
𑒮𑒰𑓀𑒐𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒞𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏 𑒐𑒰𑒮 𑒏𑒋 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 ।
𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒦𑒏 𑒦𑒹𑒪 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒰𑒧,

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒂𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒫𑒰𑒧 ||

𑒫𑒰𑒧𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑𑒲 𑒞𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒔𑒪𑒢𑒮𑒰𑒩𑒱,
𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒪 𑒮𑒲𑒧𑒱𑒞 |
𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒪𑒾𑒏𑒱𑒏 𑒡𑒩𑓂𑒧 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹,
𑒢𑒱𑒞 𑒢𑒫- 𑒢𑒫 𑒪𑒼𑒏𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒂 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒟𑒱 𑒣𑒴𑒖𑒞𑒱 ||

𑒋𑒐𑒢𑒯𑒳 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒛𑒲𑒯𑒫𑒰𑒩,
𑒨𑒰𑒢𑒲 𑒪𑒼𑒏𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒏𑒯𑒥𑒻 𑒕𑒟𑒱 |
𑒏𑒳𑒪𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒨𑒰 𑒏𑒳𑒪𑒠𑒹𑒫𑒲,
𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒞𑒰𑓀𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒟𑒱 ||

𑒮𑒧𑒨- 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑒩, 𑒐𑒰𑒮 𑒠𑒹𑒫𑒲-𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒏
𑒔𑒪𑒰-𑒔𑒪𑒞𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒻𑒞- 𑒩𑒯𑒪 |
𑒋𑒯𑒱 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒝𑒲𑒧𑒹, 𑒮𑓀𑒞𑒼𑒭𑒲𑒧𑒰𑒞𑒰, 𑒫𑒵𑒯𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒠𑒹𑒫 𑒂
𑒧𑒯𑒳𑒂𑒑𑒰𑒕 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒪 ||

𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒣𑓀𑒔𑒠𑒹𑒫𑒼𑒣𑒰𑒮𑒏 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰
𑒬𑒻𑒫, 𑒫𑒻𑒭𑓂𑒝𑒫 𑒂 𑒬𑒰𑒏𑓂𑒞𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒦𑒏𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪 |
𑒫𑒻𑒭𑓂𑒝𑒫𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒩𑒰𑒧𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒏,
𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝𑒏 𑒅𑒣𑒰𑒮𑒢𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳
𑒏𑒻𑒨𑒹𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒨 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 ||

३

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒖𑒻𑒢 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫,
𑒏𑒋𑒏 𑒧𑒳𑒢𑒱, 𑒮𑒰𑒡𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒞𑒲𑒩𑓂𑒟𑓀𑒏𑒩𑒏 𑒦𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒠𑒳𑒩𑓂𑒦𑒰𑒫 |

जखन बौद्धक भेल चला-चली,
मिथिला सेहो नहि रहल अछूता ||

आर मिथिलामे जैनक,
रहल नहि कोनो अस्तित्व |
बौद्धक प्रभावकें नगण्य केलनि,
मिथिलाक विद्वान आ दार्शनिक व्यक्तित्व ||

एहिठाम,
कबीर पंथकें माननिहार छथि पर्याप्त |
हुनका लोकनिक आस्थामे मुदा,
कबीरक संग आन देवी- देवता सेहो छथि व्याप्त ||

४

मध्य कालमे भारतमे जखन,
इस्लामक भेल छल आगमन |
भेल मिथिला सेहो बेस प्रभावित,
भारतवासी लोकक भेल धर्म परिवर्तन ||

हुनिका लोकनिक,
धर्म आ संस्कृतिमे भेल मौलिक परिवर्तन |
मुदा, पूर्वक संस्कृतिसँ साफ भ' क'
नहि कटि सकलाह,
अपना जीवनमे कएकटा पुरना वस्तु
राखनहि रहलाह ||

ળેના, સ્ત્રીગામક દ્વાના
ગૂશ્રા, સેગૂન શ્રા યૂડ઼ીક વેવહાન |
શ્રાઁગી ई ઊકની જિનાદિહક પહિનિથિ,
વુનકાક પ્નયોગા વનિઊએકે દેખાન ||

પુનુપ્ય ઊકની, ઊઁગી શ્રા પૈળામાક સંગા
કિછુ ઊક યોનિયો શ્રપનૌઊની |
પહિનિ- શ્રોઢ઼નમે શ્રુનાક શ્રવસ્સે
મુદા સંસ્કૃનિસઁ સાશ્રુ નહિ કિટ પૌઊની ||

મુસઊમાન શાસક નાળ- કાળમે,
શ્રાનસીક કએઊ પ્નયોગા |
નોળી- નોટીક જાષા જેઊ શ્રાનસી,
મૈથિઊકેં વગિડ઼ઊ સંળોગા ||

મુસઊમાન ઊકનકિ દાહ઼ા,
હિન્દૂક ઊઊ સેહો જેઊ પૂળ્ય઼ |
દાહ઼ા દઊને- દઊને ઘૂમય઼ ઊાગાઊ,
યઢ઼ૌશ્રા યઢ઼એ ઊાગાઊ, કવુઊપાની હોમય઼ ઊાગાઊ,
મુસઊમાનક મળાન હિન્દૂ ઊકનકિ નીન્થ વનઊ ||

મુસઊમાનક શ્રાગામનસસઁ,
પન્દા પ્નથાક જેઊ શ્રાનમ્જા |
ગોદના ગોદેવાક પનમ્પના સેહો શ્રાએઊ,
ળે શ્રંનમિ સાઁસ ગનિ નિહઊ,
શ્રોના, ગોદનાક શ્રાધુનકિ નૂપક
યઊન જેઊ પ્નાનમ્જા ||

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒣𑒩,
𑒕𑒪 𑒣𑒧𑒩𑒱𑒨𑓃𑒰 𑒢𑒰𑒔𑒏 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰 |
𑒄 𑒮𑒥 𑒧𑒳𑒮𑒪𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒕𑒪,
𑒄 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰 𑒂𑒃 𑒦' 𑒔𑒳𑒏𑒪 𑒁𑒡𑒧𑒩𑒰 ||

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒐𑒰𑒢𑒣𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼
𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒧𑒳𑒮𑒪𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑓃 |
𑒮𑒹𑒫𑒃𑒏𑒹 𑒐𑒲𑒩 𑒂 𑒣𑒩𑒰𑒚𑒰,
𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐, 𑒦𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒥𑒢𑒪 𑒮𑓂𑒫𑓃𑒦𑒰𑒫𑓃 ||

𑒧𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰 𑒐𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒪𑒢𑒮𑒰𑒩𑒱,
𑒂𑒮𑓂𑒞𑒹- 𑒂𑒮𑓂𑒞𑒹 𑒂𑒧 𑒦' 𑒑𑒹𑒪 |
𑒐𑒮𑓂𑒮𑒲𑒏 𑒯𑒪𑒰𑒪𑒲 𑒧𑒰𑒅𑒮 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑓀𑒬 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴𑒏,
𑒒𑒩- 𑒒𑒩 𑒮𑒩𑒹𑒂𑒧 𑒦' 𑒑𑒹𑒪 ||

𑒐𑒰𑒢𑒣𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒪𑓂𑒪𑒴 𑒂 𑒙𑒧𑒰𑒙𑒩𑒏𑒹,
𑒧𑒡𑓂𑒨𑓃𑒏𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒔𑒪𑒢 |
𑒞𑒧𑒰𑒏𑒴 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨𑓃𑒏,
𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒦𑒹𑒪 𑒯𑒳𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒣𑒲𑒥𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒪𑒢 ||

𑒧𑒳𑒮𑒪𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒂𑒑𑒧𑒢𑒏 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒻𑒒 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑓃,
𑒣𑒯𑒱𑒩𑒢𑒰 𑒣𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒛𑓃𑒪 |
𑒮𑒱𑒨𑓃𑒰𑒌𑒪 𑒫𑓃𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒅𑒣𑒨𑓃𑒼𑒑 𑒫𑓃𑒩𑓂𑒖𑒱𑒞 𑒕𑒪,
𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒧𑒳𑒮𑒪𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒿𑒅𑒮𑒹-
𑒮𑒱𑒨𑓃𑒰𑒏𑒋 𑒏𑒳𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰 𑒔𑒪𑒪 ||

મથિલિામે એપ્પનો કપડ઼ા સીવાક ઉદ્ય઼મમે,
મુસલમાને છથિ લાગલ |
ળોડ઼લ કાટક ઉપય઼ોગ સેહો વ઼ન્ળતિ છલ,
યના, તાહિ સિવ ગેવાળકેં લોકસવ ત્ય઼ાગલ ||

૫઼

ઔદ્ય઼ોગકિ ક્નાંતિ, ખોળી પ્નવ઼ૃત્તકિ કાનામ,
અંગ્નેળક પ્નભાવ઼ વ઼સ્તિ્વ઼ સહતિ મથિલિા પન પડ઼લ |
ભાનતમે અંગ્નેળી નાળક સ્થલસ્વ઼નૂપ,
ગેલવ઼ેક વ઼કિાસ આ પક્કી સડ઼ક સેહો વનલ

અંગ્નેળી લોક પઢ઼ય઼ લાગલ,અંગ્નેળી વઢ઼ય઼ લાગલ,
વ઼સ્તિ્વ઼ક નવ઼-નવ઼ ળ્ઞાન મથિલિામે આવય઼ લાગલ |
લોકક પહનિ- ઓઢ઼ન ભેલ અંગ્નેળી
અંગ્નેળી શવ્દ સેહો મૈથલિી મે આવય઼ લાગલ ||

અંગ્નેળી નવ઼વ઼ન્ષ વનલ એક પાવ઼નિ,
કેક કાટિ ળન્મદનિ મનાવ઼નિ |
પશ્ચમિી ગેવાળ આ઼ વનિ ગેલ વ઼ધિાન,
મથિલિામે અંગ્નેળયિ઼ોકેં વડ઼ડ સમ્માન ||

૬઼

મથિલિાક લોકવ઼સ્તિ્વ઼ાસમે છલ અંધવ઼સ્તિ્વ઼ાસ,
ળાહસિં અવ઼નુદ્ધ છલ સમાળક વ઼કિાસ |
સમય઼ક સંગ વ઼હુત નાસ માન્ય઼તા વ઼સ્તિ્મ઼ૃત ભ' ગેલ,

𑒖𑒹 𑒋𑒐𑒢𑒯𑒳 𑒯𑒼𑒃𑒕 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒑𑒼𑒔𑒩 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒢𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒹𑒪 ||

𑒕𑒱𑒏𑓂𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒥, 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒠𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒩𑒰𑒨𑒥,
𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏𑒰𑒪 𑒙𑒼𑒏𑒥𑒏𑒹 𑒧𑒰𑒢𑒥 𑒁𑒡𑒪𑒰𑒯 |
𑒦𑒴𑒞- 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒞, 𑒛𑒰𑒃𑒢- 𑒨𑒼𑒑𑒱𑒢𑒱 𑒂 𑒦𑒑𑒞𑒰𑒏,
𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩- 𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒂 𑒗𑒰𑒛𑓃- 𑒤𑒴𑒏𑒏 𑒢𑒻 𑒕𑒪 𑒣𑒑𑒞𑒰 ||

𑒯𑒻𑒖𑒰, 𑒏𑒼𑒠𑒥𑒰 𑒂 𑒔𑒹𑒔𑒏𑒏𑒹,
𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪 𑒠𑒹𑒫𑒲𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒼𑒣 |
𑒡𑒱𑒨𑒰𑒣𑒴𑒞𑒰𑒏𑒹 𑒣𑒰𑒨 𑒠𑒐𑒱𑒨𑒥𑒰𑒏,
𑒢𑒹𑒥𑒰𑒖 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒪 𑒥𑒛𑓃 𑒁𑒢𑒧𑒼𑒪 ||

𑒄 𑒮𑒥 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒯𑒠 𑒡𑒩𑒱,
𑒂𑒃 𑒑𑒹𑒪 𑒥𑒠𑒪𑒱 |
𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰,
𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒫𑒱𑒡𑒫𑒰𑒏 𑒕𑒪 𑒁𑒢𑒰𑒠𑒩𑒝𑒲𑒨,
𑒫𑒱𑒡𑒫𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪 𑒁𑒡𑒪𑒰𑒯
𑒂𑒃 𑒍𑒏𑒩𑒼 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒳𑒡𑒩𑒱 ||

𑒥𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒂 𑒁𑒢𑒧𑒹𑒪 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏,
𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒣𑒳𑒩𑒢𑒰 𑒏𑒳𑒩𑒲𑒞𑒱 |
𑒥𑒯𑒳𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒹𑒥𑒰𑒖 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒅𑒚𑒪,
𑒥𑒠𑒪𑒪 𑒏𑒰𑒙𑒪 - 𑒠𑒯𑒹𑒖 𑒂 𑒕𑒳𑒂𑒕𑒴𑒞𑒏 𑒢𑒲𑒞𑒱 ||

𑒥𑒠𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩,
𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒧𑒖𑒼𑒩 |
𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒪𑒹𑒯𑒰𑒖,

𑒖𑒹𑒚𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒋𑒩 𑒕𑒳𑒥𑒱 𑒢𑒫𑒞𑒳𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒰𑒑𑓄 𑒔𑒰𑒯𑒋 𑒑𑒼𑒛𑓃 ||

𑒁𑒞𑒱𑒟𑒱𑒏 𑒮𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒂 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒮𑓀𑒑,
𑒥𑒴𑒜𑓃- 𑒥𑒳𑒜𑓃𑒰𑒢𑒳𑒮𑒏 𑒧𑒼𑒖𑒩 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒞𑓁 𑒒𑒙𑒱 𑒑𑒹𑒪 |
𑒁𑒣𑒢𑒻𑒞𑒲 𑒒𑒙𑒪 𑒂 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒁𑒯𑓀𑒏𑒰𑒩
𑒪𑒼𑒏- 𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹 𑒂𑒥 𑒍 𑒮𑒯𑒳𑒏𑒞𑒰 𑒢𑒻 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪 ||

𑓗

𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏𑒞𑒰 𑒂 𑒮𑒳𑒐𑓂𑒐𑒏 𑒅𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹,
𑒦𑒹𑒪 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢 𑒑𑒰𑒧- 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 |
𑒖𑒰𑒞𑒱- 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒣𑒰𑒩𑒮𑓂𑒣𑒩𑒱𑒏 𑒮𑒩𑒼𑒏𑒰𑒩,
𑒮𑒹 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒹𑒮 𑒯𑓂𑒩𑒰𑒮 𑒦𑒹𑒪 𑒡𑒩𑒰𑒧𑒮𑒿 ||

𑒎𑒠𑓂𑒨𑒼𑒑𑒲𑒏𑒩𑒝 𑒍 𑒧𑒬𑒲𑒢𑒲𑒏𑒩𑒝𑒏 𑒨𑒳𑒑𑒧𑒹,
𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒍 𑒂𑒩𑒰𑒧 𑒦𑒹𑒙𑒪 |
𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒖𑒱𑒢𑒰𑒃 𑒮𑒯𑒖 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪,
𑒞𑒻 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒔𑒪𑒢𑒮𑒰𑒩𑒏 𑒫𑒱𑒒𑒙𑒢 𑒒𑒙𑒪 ||

𑒏𑒧 𑒪𑒼𑒏 𑒂 𑒏𑒧 𑒮𑒧𑒨𑒧𑒹,
𑒏𑒰𑒖 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒯𑒼𑒧𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 |
𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒫𑒱𑒏𑒏
𑒂𑒔𑒰𑒩- 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒥𑒠𑒪𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 ||

𑒥𑒛𑓃𑒠𑒏 𑒠𑒰𑒅𑒢𑒲, 𑒏𑒩𑒾𑒢 𑒣𑒙𑒾𑒢𑒲,
𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒥𑒙𑒑𑒰𑒧𑒢𑒲 𑒍 𑒪𑒑𑒢𑒲 𑒑𑒲𑒞 |
𑒔𑒴𑒛𑓃𑒰 𑒏𑒴𑒙𑒥, 𑒡𑒰𑒢 𑒏𑒴𑒙𑒥 𑒂 𑒏𑒼𑒪𑓂𑒯𑒳𑒂𑒛𑓃𑒏 𑒮𑓀𑒑,

પયનયિઁ શ્રા ગોદનાક ગીત ||

સવ ક્નયિાક સંગ,
ઞુડ઼લ શ્રછિ સંસ્ક્ૃતિક ઘનષ્િઙ઼ા |
મહસ્ત્રા- પ્યનપ્યનયિા શ્રો વૈલગાઙ઼ીમે શ્રોહાન,
હોશ્ત છલ દ્વિાગામન શ્રા વ઼દિાગાની,
૬ છલ મથિલિાક વ્યવહાનકિ સંસ્કાન ||

નવકનયિઁક વ઼દિાગાનીક દનિ મનાયવ,
શ્રાવ જાએ ગેલ પ્યસ્સિા |
દનિ સ્ત્રેનવ, લશ્રિાશ્રોન કનાયવ, વેટીકેં
છશ્રો માસ નૈહન નાપ્યવ,
શ્રાવ સન્િસ્ત્ર શ્રજાલિષા ||

માલ- ળાલ નગામ્રય જાએ ગેલ,
માલ સંદન્જાતિ માનાતિ ળ્ગ્રાન પ્યતમ જાએ ગેલ |
શ્રોકન ઉપયોગક વસ્તુ,
શ્રાવ સજા યનોહન નહિ ગેલ ||

८

લોક શ્રો પાનમ્પનકિ ગીતમે,
વહુત સમૃદ્ધ નહલ મથિલિા |
કોનો સાંસ્કૃતિક સમાળક ૭લ,
કઙનિ નહલ મોકાવલિા ||

યન્દા હા ળોક તનહક,

लोकराग आ भासक केने छथि चिन्ता |
आस्ते- आस्ते बहुत रास अलोपित भऽ गेल,
शेष बाँचल राग - भासक अछि अन्तिम अवस्था ||

कछु तऽ सास्ते खतम भए गेल,
लगानी, बटगमनी ओ पचनियाँक गीत |
निर्गुण आदि आब भेटब दुर्लभ,
अलोपित भए गेल गोदनाक गीत ||

तहिना पमार, ग्वालरि आ तिरहुत आदि,
खिस्सा त' एहिठामक कहल नहि जाए |
के धियापूताकेँ मलार गाबि सुतबैथ,
मिथिलानीक कंठसँ आब सुनल नहि जाए!!

६

भरि सालक विभिन्न पाबनि- तिहारक,
आयुर्दा सेहो अछि लगायिआएल |
लोकगाथाक गायन मंचनक परम्परा टूटल,
विभिन्न लोकनाट्य ग्रसित कालक गाल ||

पहिने टेप, टीवी, भीसीआर आ विडियो सिनेमा,
आब आरकेस्ट्रा आ इंटरनेट पर
परसारल सामग्रीक चलनसार |
गाम- गाम एके लेखा,
सम्पूर्ण मिथिलाक एहन बेवहार ||

૧૦

ભક્ક ખાનપીન આ પહિરિન- ઓઢ઼ન સેહો વદભભ,
ભાત, દાભિ,તિ૧કારી, ચટની આઓ૧ પાપડ઼ અચા૧ |
તરુઆ,દહી, દૂધ, ઘી, સાગ, વડ઼- વડ઼ી આદિ,
ઈ મથિભિક મુખ્ય ભોજનક સચા૧ ||

વિશિષ્ટ રૂપે- ઠુભકી, પૂડ઼ી, સોહારી, માભપૂઆ,
ખી૧, પોઠુઆ-પૂ, સકરૌરી,મખાનક ખી૧ આ ખોઆ |
મડુઆ, મકર, ચાઉ૧ આદિક રોટી,
અભહુઆ, કોદો, ભાતક સંગ પ્રાયિ માછમે પોઠી ||

વભપ્રિાદાન વિભા માઉસ ભક સવ ખાર છભ,
પરવા,પૌ૧કી,સભ્હિ, વગેરી,સાહી આદિક માઉસ
સેહો સારા સંભોગે ખાણભ ભારા છભ |
રાતકિ વાઁચભ ભોરમે હોર છભ વસિયા ભભખૈ,
ચૂડ઼ા- દહી, ઠુટહા, મુરહી આદિ સેહો પ્રાયિ છભૈ ||

આવ ગહૂમક રોટી,
મુખ્ય ભોજનમે સામભિ ભાએ ગેભ |
વાસિ- વેરહૂટક સામગ્રીમે
સેહો વદભાઉ આવિ ગેભ ||

મુરગા, આમ્ભડા આવ ખુભિ કઽ ખાર છથિ,
તાહિ સંગ, દેશક વિભિન્ન પ્રાંતક ભોજ્ય વસ્તુ
ખેવાક પ્રચભન શુરૂ અછિ |
રઙભી, ડોસા, સાંભા૧ આ ઉતપમ,

હલુઆ, પરાઠા, પાપડ઼, સેવઇ, નૂડલ્સ, ચાઉમિન
પોલાઉ આદિક વેસ હોઇછ સંગમ ||

મધુર ખેવાક ભેલાહ અછિ અભિમત,
નહિ મિઠાઇ ત' ચીનિયો ચાહવે કરી |
મીઠક લેલ તેહન નહિ હાએ,
અંતતઃ ગુડ઼ોસઁ કાજ ચલવે કરી ||

૧૧

મિથિલામે પહિરન- ઓઢ઼ન
સેહો ખૂબે બદલલ |
મુસલમાનક એલાક બાદ,
સિયાઓલ વ઼સ્ત્ર પહિરવાક ભેલાહ ચલન ||

પુરુખ કુર્તા, મિરજઇ, ગોલગંજી પહિરય લાગલાહ,
પછાતિ પૈજામા, લૂંગીસઁ સેહો પરહેજ નહિ રખલાહ |
અંગ્રેજક બુશ્સર્ટ,પેન્ટ, કોટ- સૂટ, ટાઇ ચલલ,
સૈંડો,ટીશર્ટ આર અનેક તરહક પરિધાન ચલલ ||

પાગ,પગડ઼ી આ ચાદરિ- દોપટા,
ઇ આબ અવ઼સર વ઼િશેષક માત્ર શોભાટા |
સ્ત્રીગણ આઁગી, કુર્તી આ સમીજ-સલવ઼ાર,
ઘઘરી, લહઁગા, પેન્ટ- શર્ટ સેહો પહિરથિ જાનમાન ||

ઓના સ્ત્રીગણક મુખ્ય પહિરના,
એખનહુ ચરિ અછિ નૂઆ |

𑒯𑒰𑒪𑒰𑒿𑒏𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒙𑒰 𑒂𑒿𑒔𑒩 𑒏𑒧,
𑒂 𑒅𑒢𑒙𑒰 𑒂𑒿𑒔𑒩𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒪𑒢 𑒥𑒢𑒪 𑒯𑒅𑒂 ||

𑒂𑒥 𑒣𑒳𑒩𑒢𑒏𑒰 𑒑𑒯𑒢𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒅𑒛𑒱 𑒑𑒹𑒪,
𑒧𑓀𑒑𑒪𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩, 𑒗𑒳𑒧𑒏𑒰, 𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒔𑒪𑒢𑒮𑒰𑒩𑒱 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 |
𑒥𑒳𑒪𑒏𑒲,𑒥𑒰𑒖𑒴𑒥𑒢, 𑒮𑒴𑒞𑒱,𑒣𑒰𑒬𑒱 𑒂 𑒏𑒰𑒛𑓃𑒰,
𑒅𑒛𑒪 𑒧𑒰𑒏𑒛𑓃𑒲, 𑒛𑒿𑒛𑓃𑒏𑒮, 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒲, 𑒧𑒼𑒯𑒩𑒧𑒰𑒪𑒰 ||

𑒥𑒰𑒪𑒲, 𑒢𑒟𑒳𑒢𑒲, 𑒣𑒰𑒨𑓃𑒪, 𑒯𑒰𑒩, 𑒕𑒏,
𑒥𑒕𑒱𑒨𑓃𑒰, 𑒎𑒚𑒲 𑒋𑒐𑒢𑒯𑒳 𑒔𑒪 |
𑒮𑒱𑒟𑒲𑒏 𑒫𑓃𑒱𑒢𑓂𑒨𑓃𑒰𑒮 𑒢𑒫𑓃- 𑒢𑒫𑓃 𑒦𑒹𑒪,
𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏 𑒏𑒢𑒾𑒮𑒲, 𑒏𑒳𑓀𑒛𑒪, 𑒧𑒙𑓂𑒛𑒰, 𑒯𑒪𑒳𑒧𑒰𑒢𑒲
𑒂 𑒏𑒰𑒿𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒪𑒼𑒣𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 ||

𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒥𑒰𑒥𑒩𑒲 𑒮𑒲𑒙𑒻 𑒕𑒟𑒱
𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒞𑓂𑒩𑒱𑒣𑒳𑒝𑓂𑒛 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒹𑒪 |
𑒙𑒲𑒏, 𑒙𑒲𑒏𑒰 𑒏𑒧𑓂𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏 𑒩𑒰𑒐𑒟𑒱,
𑒢𑒫𑓃- 𑒢𑒫𑓃 𑒤𑒻𑒮𑒢𑒏 𑒫𑓃𑒱𑒢𑓂𑒨𑓃𑒰𑒮 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 ||

𑓑𑓒

𑒢𑒫𑓃-𑒢𑒾𑒞𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒤𑒻𑒮𑒢𑒏 𑒧𑒼𑒯 𑒞𑒹𑒯𑒢 𑒥𑒹𑒮𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩
𑒕𑒳𑒞𑒱𑒏𑒲𑒧𑒹 𑒏𑒹𑒮 𑒏𑒙𑒹𑒥𑒰𑒮𑒿 𑒕𑒙𑒱𑒏𑒨𑓃 𑒔𑒰𑒯𑒟𑒱 |
𑒕𑒳𑒞𑒱𑒏𑒰𑒧𑒹 𑒞𑒹𑒪, 𑒮𑒰𑒥𑒳𑒢, 𑒂 𑒬𑓂𑒩𑒵𑓀𑒑𑒰𑒩 𑒥𑓂𑒩𑒜𑒱𑒞 𑒕𑒪,
𑒏𑒹𑒮𑒏 𑒧𑒼𑒯𑒧𑒹 𑒢𑒫𑓃𑒞𑒳𑒩𑒱𑒨𑓃𑒰 𑒏𑒛𑒱𑒨𑓃𑒰𑒩𑒱𑒨𑓃𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒟𑒱 ||

𑒬𑓂𑒩𑒰𑒠𑓂𑒡𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒮𑒼𑒛𑓃𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩𑒧𑒹,

શ્રંnમિ સંસ્કાર થકિ |
શાસ્ત્રીય વિધિસઁ વેસી,
પ્રદર્શનક વઢ઼ળ વેવહાર થકિ ||

બોળ- બાnમે પૂવ પત્ય કરળ ળાઇછ,
એકરા સામાળકિ સમ્માનસઁ ળોડ઼ળ ળાઇછ |
છઽહિર, વિવાહ શ્રા શ્નાદ્ધકર્મ શ્રાડમ્વર બાએ ગેળ,
મૃત્યુબોળક વિધેય સેહો કnહુ-કnહુ શુરૂ બાએ ગેળ ||

દેખાવા શ્રાનો સંસ્કાર સબમે વઢ઼િ રહળ,
પારમ્પરકિ વધિસઁ વેસી પ્રદર્શનક મહત્વ વઢ઼ળ |
વૈવાહકિ વર્ષગાઁઠ શ્રાવ ળોકપ્રયિ બાએ રહળ,
એહમિ એખન પૂવ પત્ય- વર્ય કરળ ળા રહળ ||

ળે ળોકની રહૈn છળાહ શ્રકછળ,
શ્રપન પ્રયળnિ વધિ- વેબારસઁ |
સએહ ળોકની કરૈ છથિ દેખાઁઉસ,
શ્રાન સંસ્કૃnકિ શ્રાડમ્વર શ્રપના કઽ ||

સૂટ, શેરવાની પહનિ,
હોમય ળાગળ વિવાહ |
ળયમાળક પરમ્પરા સેહો શ્રારમ્બ બેળ,
શ્રાળન- વાળનક ચળનસારમે
રહૈછ બેળ સવ nવાહ ||

કમી બેળ વિશ્વાસ શ્રો શ્રાસ્થાક,
દેવ-પિnર, પાવની- nહિારમે |

𑒒𑒙𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒣𑒰𑒫𑒢𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰,
𑒮𑒰𑒞𑓂𑒫𑒱𑒏 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩𑒧𑒹 ||

𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒏𑒧𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝𑒹,
𑒑𑒼𑒮𑒰𑒅𑒢𑒱- 𑒏𑒳𑒪𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 |
𑒛𑒲𑒯𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒱𑒫𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱
𑒂𑒥 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒮𑒢 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯 𑒩𑒯𑒪 ||

𑓑𑓓

𑒦𑒰𑒩- 𑒔𑒿𑒑𑒹𑒩𑒰 𑒮𑒰𑒿𑒚- 𑒅𑒮𑒰𑒩𑒏,
𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒰𑒝 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒥𑒹𑒏𑒰𑒩 |
𑒙𑒼𑒪- 𑒣𑒛𑓃𑒼𑒮 𑒂 𑒯𑒱𑒞- 𑒁𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞𑒏𑒹
𑒥𑒋𑒢 𑒣𑒚𑒹𑒢𑒰𑒃 𑒥𑒢𑓂𑒢𑒹 𑒦𑒋 𑒑𑒹𑒪 𑒮𑒏𑒪 𑒮𑒧𑒰𑒖 ||

𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒠𑒮𑒑𑒰𑒢𑓂𑒠𑒰 𑒨𑒰 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒧𑒹,
𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒪 𑒋𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰 |
𑒣𑒩𑒱𑒬𑓂𑒩𑒧𑒮𑒿 𑒪' 𑒡𑒢 𑒞𑒏 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒪 𑒁𑒩𑓂𑒣𑒱𑒞,
𑒠𑒰𑒢 𑒠𑒋 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒩𑒐𑒻 𑒕𑒪 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰 ||

𑒦𑒴𑒧𑒱𑒯𑒲𑒢𑒏𑒹 𑒠𑓄 𑒏𑓄 𑒒𑒩𑒰𑒛𑓃𑒲,
𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒯𑒱𑒞 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪 𑒥𑒮𑒰𑒍𑒪 |
𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒮𑒥 𑒁𑒣𑒢𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒧𑒮𑓂𑒞,
𑒏𑒾𑒂- 𑒏𑒳𑒏𑒴𑒩𑒏𑒹 𑒋𑒏 𑒧𑒳𑒙𑓂𑒚𑒲 𑒁𑒢𑓂𑒢𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒚𑒾𑒩 ||

𑒏𑒼𑒚𑒲, 𑒜𑒏, 𑒥𑒐𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒰,
𑒡𑒰𑒞𑒳𑒏 𑒛𑓂𑒩𑒰𑒧𑒏 𑒦𑒋 𑒩𑒯𑒪 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑 |

माटि,बाँस, काठ, सिक्की आदिक
कोहा, खापड़ि, घैल, अथवा, पथियाक
नहि रहल दैनिक प्रयोग ||

चँगेरी, मौनी, कठौत, ढाकन,
दाबि, सरवा आदि गेल बिलाय |
सेहो, गोनरि, पटिया, सितलपाटी निपत्ता
धातु आ प्लास्टिकक वस्तुक भेल उपाय ||

१४

पड़ैत अछि घर- आंगनमे एखनहु अरिपन
मुदा, कोबर कागत पर बना साटल जाइत अछि|
लिखिया लिखिवाक परम्परा छल देवाल पर,
सेहो बिलैके कतहु देखबामे अबैत अछि||

मिथिला चित्रकलाक रूपमे,
कपड़ा पर उतारि भूतर भए रहल व्यवसाय |
मिथिला पेंटिंग पारम्परिक विषयक संग्रहि
नित्य नव बनि रहल चित्रकलाक विषय ||

मिथिला आ बाहर सेहो,
बहुत नास शैलिय रंगमे चित्रकारी भए रहल |
मिथिलाक गौरवमयी मंजूषा चित्रकला,
प्रोत्साहनक बेगारतामे अयमना अछि पड़ल ||

आब नहि देखल जाइत अछि,

मिथिलाक पारम्परिक घर- बास |
कतऽ गेल सुजनी, कुरुसक सजावटी वस्तु,
स्वेटर- गुलबन्द, होरा- हपना,
डाली, चंगेरी, चुथनी जकर मूल छल-
नारी, खढ़ आ खजूरक पात ||

मिथिलाक वास्तुकलाक छल अपन विशिष्टता,
फूस, टीन, पक्का घर किंवा मकान |
एतय लोकसँ अकानल जा सकैछ,
कोठाघर आ मंदिरक निर्माण ||

आकार- प्रकारकें लोकसँ बेकछायब,
आब तँ नहि रहल फूस आ टीनक घर |
नहि रहल ओ निर्माण शैली,
मिथिलामे वास्तुकलाक विशिष्टता जे छल ||

१५

बहुत रास खेलकूद, जे
जोड़ैत छल संस्कृति आ व्यक्तित्वक विकाससँ |
अटकन-मटकन, चोरानुक्की, नुकाचोरी,
कबड्डी, टालगुल्ली आ पचीसीक आससँ ||

छल मानति प्रयलति,
झुमरा आ शिशु गीत |
मुदा पहिने क्रिकेट, पछाति
मोबाइल सबके केलक चीत ||

𑒮𑒳𑒐𑒩𑒰𑒞𑒲 𑒠𑒱𑒢 𑒯𑒴𑒩𑒰𑒯𑒴𑒩𑒲,
𑒂 𑒖𑒴𑒛𑓃𑒬𑒲𑒞𑒪𑒧𑒹 𑒁𑒏𑒱𑒩 |
𑒄 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒅𑒨𑒞𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪,
𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒏𑒧𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒤𑒑𑒳𑒂𑒏 𑒂 𑒩𑒹𑒫𑒰𑒖 ||

𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒧𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑒙- 𑒖𑒙𑒲𑒢 𑒂 𑒮𑒰𑒧𑒰- 𑒔𑒏𑒹𑒫𑒰,
𑒂𑒩 𑒯𑒱𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒐𑒹𑒪𑒢𑒯𑒰𑒩 |
𑒥𑒼𑒪𑒲𑒏 𑒧𑒡𑒳𑒩𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑓂𑒩𑒰𑒮 𑒦𑒹𑒪,
𑒂𑒥 𑒢𑒯𑒱 𑒤𑒏𑒩𑒰- 𑒐𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒏𑒯𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 ||

𑓑𑓖

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒏𑒻𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱,
𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒫𑒢𑓂𑒨 𑒂 𑒁𑒫𑒮𑒩𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 |
𑒢𑒢𑒠𑒱- 𑒦𑒰𑒅𑒖𑒱,𑒮𑒩𑒯𑒼𑒖𑒱-𑒢𑒢𑒠𑒼𑒮𑒱,
𑒮𑒰𑒩 𑒂 𑒮𑒰𑒩𑒱- 𑒥𑒯𑒢𑒼𑒄𑒧𑒹 𑒯𑒿𑒮𑓂𑒮𑒲-𑒚𑒙𑓂𑒚𑒰,
𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩𑒧𑒹 𑒮𑒯𑒖𑒯𑒱𑓀 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒞𑒰 ||

𑒕𑒚𑒱𑒨𑒰𑒩, 𑒧𑒴𑒛𑓃𑒢, 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯, 𑒔𑒞𑒳𑒩𑓂𑒟𑒲,
𑒠𑓂𑒫𑒱𑒩𑒰𑒑𑒧𑒢, 𑒦𑒩𑒤𑒼𑒛𑓃𑒲 𑒂 𑒥𑒩𑒱𑒨𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞 |
𑒥𑒩𑒱𑒨𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒂 𑒮𑒧𑒡𑒱𑒏 𑒮𑒾𑒖𑒢𑒏𑒹
𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒣𑒩 𑒁𑒪𑒼𑒣𑒱𑒞 𑒯𑒰𑒮-𑒣𑒩𑒱𑒯𑒰𑒮𑒏 𑒂𑒠𑒞 ||

𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒥 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒣𑒩 𑒯𑒿𑒮𑒲- 𑒧𑒖𑒰𑒏𑒏 𑒕𑒪,
𑒛𑒯𑒏𑒢 𑒂 𑒁𑒢𑓂𑒨 𑒑𑒲𑒞𑒏 𑒕𑒪 𑒩𑒹𑒫𑒰𑒖 |
𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒔𑒼𑒙 𑒋𑒯𑒳 𑒣𑒛𑓃𑒪,

પહિનિ ળકાઁ યૌઉક નહિ નિહુઉ વેવહાન ||

૧૭

મથિળિમે કનવાક છઉ સંસ્કૃતિ,
વેટીક દ્વિનિાગમનક દિનિ મનાઓઉ ળેવાસઁ |
દ્વિનિાગમન કાઉ માએ-વેટી ઓ પનળિનક કાનવ સુનિ,
થૈનય કયિો નહિ નાપ્પિ સિકથિ વેટીક ઘાનાસઁ ||

કિન્તુ, કનવાક ઇ પનમ્પના,
ક્ષીણ ભાએ ગેઉ આધુનિકિનાક પ્નભાવે |
મેળા- ઠેળામે માએ- પતિયિાઝ્ન ભેંટ ગેને,
વન્ન ભેઉ ઘેટા- ળોડ઼ી કએ કનવાક સ્વભાવે ||

વહુત નાસ મેળા ળૌઇ એપ્પનો મથિળિમે,
એક દિનિક મેળાસઁ માસ દિનિક મેળા યનિ |
કમળા મેળા, મેળા દેવઘનક, સમિનાયિા ઘાટક,
વડ઼દ- મહીસક મેળા સાઁપક મેળા સઘિયિાઘાટક ||

૧૮

ઇ વિષિય માત્ન ળેપ્પ યા પદ્યક નહિ,
સંસ્કૃતિ પિનાચિય હોઇછ મનુક્ખક |
એકન વિશિાળકાય સનૂપ હોઇછ,
સમૃદ્ધ સંસ્કૃતિ પ્નાચીન મથિળિ ભૂભાગક ||

વર્તમાન મથિળિક સંસ્કૃતિ,

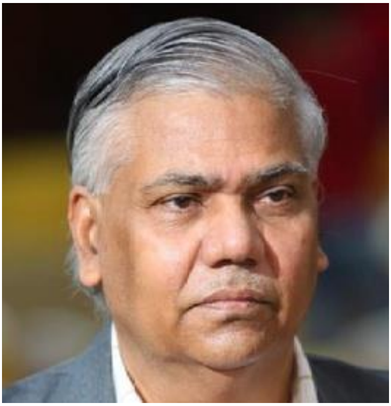
વહુત ગેલ અછિ વિદેલ।
એહિ વિદેલલ સ્વરૂપમે,
અંધવિશ્વાસ, દેખાઁઉસ, વડ઼પ્પનક ભેખ
આ અજ્ઞાન અછિ કારણ વનલ ||

કમી ભેલ ગૌરવ વોધક,
પ્રદર્શનક પ્રવૃત્તિ વઢ઼લ।
પરિવર્તન સ્વભાવિક છલ
મુદા, સંસ્કૃતિક મૂલ તત્વ અપમાનિત
આર જડ઼િ ઉખડ઼િ ભેલ ||

- હાટગાછિયા, થાના, કોલકાતા- ૭૦૦૧૦૫, ૯૮૩૩૭૪૬૨૯૫; સહાયક શિક્ષક, શ્રી ઉમાપતિ વિદ્યામંદિર, પશ્ચિમ બંગાલ સરકાર, કોલકાતા।

અપન મંતવ્ય editorial.staff@videha.com **પર પઠાઉ।**

ડ઼રનાળ કિશોર મિશ્ર-માતૃભૂમિ



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जेनरल मैनेजर (ई), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अरेर डीह, पो. अरेर हाट, मधुबनी

मातृभूमि

जे भू-भाग हृदय मे बसल,
अछि मोन मे जे सदिखन सजल,
जन्मभूमि भारत हमर,
सभ सँ नमहर इएह भाग्य भेटल।

वसुधा पर जँ अछि स्वर्ग कतहु,
ओ देश भारतवर्ष अछि,
कोन वैभव अछि जगत् मे,
एतए नहि जकर उत्कर्ष अछि?

एहि देशक धरती पर जरल छल,
सभ्यता क पहिल बाती ,
एहि ठामक पूज्या संस्कृति,
आदरणीया , जगत् मे, भारती।

ળે સુકૂન શ્રછિ ઍહિ મા ટિ મે,
પા શ્રોઉ ને ળા ३ન શ્રછિ ,શ્રાણ ડા મ,

ગેँ નડ ક્રए નહિઉહુँ, વેન-વેન,
શ્રછિ , મા ન ૃજૂમા કિ હમ પ્નાભ્મા મા।

ઊँય -ઊँય ,હિ મિણગા સજ ડા ઢ़,
ઉય્છઉ સના ના ક ઉદ્ગામ પહા ડ़ા

હ્રી ઉ, નડ़ા ગા, સુણ્દન કા ણણ,
ગામકિ નહિઉ વ़ણ મે યા ણણ।

મનુજૂમા સિહો શ્રછિ નિનુશ્રાગાન,
ની ણ દિ સિ સँ શ્રોગાનણે ,શ્રછિ સા ગાન।

શ્રાં નિ -સુકૂન કે પ્નાની ક જા નન,
જાવ़િ ષ્ય़ -ળો નિ , ३ए૬ મા ટિ , વા નન।

ળ્સા ણ શ્રો વ़િ ળ્સા ણ, સજ મે શ્રાગૂ,ગૂ
એહિ મિહા ણ ના ષ્ટ્ન કેँ, ગો ન ઊ ગૂ।

ળગા ળનૈછ ,હિ ણિક પૌ નુષના -ળ્વ़ા ઉ,
શ્રાન્નુ કે ઊઉ, જા નન શ્રછિ કા ઊ।

શ્રાં નિ કિ સજ સँ પૈઘ પક્ષયન,
વ़િ સ્વ़ ક્રૈન શ્રછિ ગેँ નડ શ્રાદન।

𑒦𑒴 𑒣𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒠𑒹𑒬,
𑒖𑒹, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒏 𑒯𑒙𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒠𑓂𑒫𑒢𑓂𑒠𑓂𑒫-𑒏𑒳𑒯𑒹𑒮।

𑒖𑒹 𑒯𑒫𑒰 𑒁𑒥𑒻𑒕, 𑒂𑒢 𑒠𑒹𑒬 𑒮𑒿,
𑒑𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍𑒏𑒩 𑒫𑒱𑒭𑒰𑒠,
𑒥𑒢𑒱 𑒅𑒠𑒰𑒩, 𑒥𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒣𑒳𑒢𑒱,
𑒕𑒪𑒻𑒏 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒹 𑒦𑒩𑒪 𑒮𑒳𑒮𑒰𑒠।

𑒡𑒢-𑒡𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒮𑒿 𑒦𑒩𑒪-𑒣𑒴𑒩𑒪,
𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒮𑒿, 𑒧𑓀𑒑𑒪-𑒨𑒰𑒢 𑒅𑒛𑓃𑒪।

𑒮𑒰𑒧𑓀𑒖𑒮, 𑒮𑒧𑒞𑒰, 𑒮𑒯𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞𑒰,
𑒧𑒴𑒪𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑒯𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒞𑒰।

𑒞𑒰 𑒏𑒱 𑒂𑒅 𑒮𑒑𑒩 𑒡𑒩𑒞𑒲 𑒣𑒩,
𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒧𑒹 𑒢𑒹 𑒏𑒞𑒯𑒳, 𑒄 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒞𑒰,
𑒮𑒞𑓂𑒫𑒞𑒼 𑒦𑒠𑓂𑒩 𑒦𑒰𑒫 𑒮𑒿 𑒦𑒩𑒪,
𑒦𑒰𑒩𑒞𑒏 𑒯𑒏𑒰𑒩, 𑒏𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒳𑒩𑒞𑒰?

𑒢𑒫-𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢, 𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢-𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢,
𑒣𑓂𑒩𑒑𑒞𑒱, 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱𑒪𑒪, 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰, 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱,
𑒖𑒨 𑒯𑒼 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒫𑒩𑓂𑒭 𑒯𑒧𑒩!
𑒫𑒮𑒳𑒡𑒰 𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒄 𑒧𑒯𑒰 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱।

𑒪𑒱𑒣𑓂𑒮𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑓂𑒫𑒩𑓂𑒑 𑒏𑒹,
𑒂', 𑒢𑒹 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒁𑒣𑒫𑒩𑓂𑒑,

હ્ન ળણમ ঝા ન્ન મા ન઼ૄજૂમિ,
ળઁ, ઘુનિ -ઘુનિ શ્રાવી સન્ગ઼।

શ્રપન મંનવ્રૂયે દિીોનાિ઼ષસનાડડ઼વ્રદિહા઼ગામાિ઼ષયોમ **પન પડાઉ।**

ડ઼ડ઼શ્રાસીષ શ્રનયનિ્હાન- ૨ ૮। ગાળ૭



𑒂𑒬𑒲𑒭 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩- 𑓒 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪

𑓑

𑒮𑒖𑒪 𑒢𑒨𑒢 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒹𑒬 𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏
𑒏𑒧𑒪 𑒢𑒨𑒢 𑒁𑒫𑒡𑒹𑒬 𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏

𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒯𑒥 𑒕𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒄 𑒮𑒦 𑒯𑒧𑒩𑒹
𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒔𑒪 𑒏𑒳𑒢 𑒠𑒹𑒬 𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏

𑒠𑒬𑒰 𑒠𑒱𑒬𑒰 𑒏𑒹 𑒞𑒨 𑒏𑒩𑒞 𑒁𑒯𑒱 𑒚𑒰𑒿
𑒮𑒛𑓃𑒪 𑒑𑒪𑒪 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒹𑒬 𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏

𑒏𑒢𑒲 𑒧𑒢𑒲 𑒕𑒢𑒱 𑒂𑒔𑒩𑒝𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰
𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒅𑒣𑒠𑒹𑒬 𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏

𑒢𑒫𑒹 𑒢𑒫𑒹 𑒁𑒐𑒮𑒩 𑒢𑒫𑒹 𑒦𑒰𑒭𑒰𑒧𑒹
𑒮𑒳𑒢𑒪 𑒮𑒳𑒢𑒪 𑒮𑓀𑒠𑒹𑒬 𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏

𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒿𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑓑𑓒-𑓑𑓒𑓒𑓒-𑓑𑓒𑓒𑓒 𑒁𑒕𑒱।

𑓒

𑒯𑒳𑒪𑒯𑒳𑒪 𑒯𑒳𑒪𑒏𑒻 𑒁𑒑𑒥𑒹 𑒅𑒔𑒰𑒩
𑒞𑒩𑒧𑒹 𑒥𑒪𑒱𑒏𑒻 𑒂𑒿𑒑𑒢 𑒯𑒧𑒰𑒩

𑒡𑒼𑒞𑒲 𑒏𑒳𑒩𑒞𑒰 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒙𑒱𑒏𑓂𑒏𑒰

𑒔𑒧𑒔𑒧 𑒔𑒧𑒏𑒻 𑒩𑒰𑓀𑒑𑒪 𑒮𑒔𑒱𑒰𑒩

𑒙𑒳𑒙𑓂𑒋 𑒏𑒹 𑒕𑒻 𑒮𑒦𑒯𑓀𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢
𑒙𑒳𑒙𑓂𑒋 𑒏𑒹 𑒕𑒻 𑒣𑓂𑒨𑒰𑓀𑒯𑒮𑒱 𑒯𑒖𑒰𑒩

𑒯𑒹𑒫𑒹 𑒏𑒩𑒞𑒻 𑒃 𑒧𑒯𑒰𑒧𑒰𑒩𑒱𑒢
𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒩𑒱𑒔𑓂𑒕𑒰 𑒯𑒙𑒼 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩

𑒏𑒯𑒱 𑒂𑒠𑒩 𑒞𑒯𑒢𑒹 𑒢𑒯𑒻 𑒖𑒹
𑒯𑒧𑒯𑒴𑓀 𑒪𑒨𑒰𑒩 𑒂𑒯𑒼 𑒪𑒨𑒰𑒩

𑒮𑒦 𑒣𑒰𑓀𑒞𑒱𑒧𑒹 𑓒𑓒-𑓒𑓒-𑓒𑓒-𑓒𑓒 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒠𑒴 𑒙𑒰 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒹𑓀 𑒠𑒲𑒩𑓂𑒒 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒃 𑒥𑒯𑒩𑒹 𑒧𑒲𑒩 𑒁𑒕𑒱।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 [illegible] **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓓𑓔.𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪- 𑒯𑒧 𑒅𑒠𑒰𑒮𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒑𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒛𑒼𑒧𑒢𑒱



𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑓀𑒠 𑒧𑓀𑒛𑒪- 𑒯𑒧 𑒅𑒠𑒰𑒮𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒑𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒛𑒼𑒧𑒢𑒱

𑓑.𑒯𑒧 𑒅𑒠𑒰𑒮𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒑𑒹

𑒯𑒧 𑒕𑒲 𑒅𑒠𑒰𑒮𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒑𑒹।

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒑𑒹।

𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒥𑒾 𑒧𑒰𑒢 𑒑𑒹।

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒯 𑒨𑒾 𑒑𑒹।

𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒥𑒾 𑒑𑒾 𑒑𑒹।

𑒯𑒧 𑒢𑒣𑒻𑒕𑒲 𑒧𑒴𑒿𑒕 𑒑𑒹।

𑒞𑒴𑒯𑒹 𑒧𑒴𑒿𑒕 𑒢𑒰𑒣𑒨 𑒑𑒹।

𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒴𑒿𑒕 𑒅𑒚𑒪 𑒑𑒹 ।

𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒧𑒴𑒿𑒕 𑒐𑒮𑒪 𑒑𑒹 ।

𑒯𑒧 𑒡𑒼𑒞𑒲 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒱 𑒑𑒹।

𑒞𑒴𑒯𑒹 𑒡𑒼𑒞𑒲 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒱 𑒑𑒹।

𑒯𑒧 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒥 𑒪𑒰𑒪 𑒑𑒹।

𑒞𑒴 𑒣𑒱𑒨𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒱 𑒑𑒹।

𑒯𑒧 𑒔𑒢𑒢 𑒏𑒻𑒪 𑒑𑒹।

𑒞𑒴𑒯𑒹 𑒔𑒢𑒢 𑒏𑒩 𑒑𑒹।

𑒯𑒧𑒩 𑒔𑒢𑒢 𑒪𑒰𑒪 𑒑𑒹।

𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒔𑒢𑒢 𑒅𑒖𑓂𑒖𑒩 𑒑𑒹।

𑒯𑒧 𑒬𑒱𑒐𑒰 𑒢𑒣𑒪𑒲 𑒑𑒹।

𑒞𑒴𑒯𑒹 𑒬𑒱𑒐𑒰 𑒢𑒰𑒣𑒱 𑒑𑒹।

𑒯𑒧𑒩 𑒬𑒱𑒐𑒰 𑒧𑒼𑒙 𑒑𑒹।

𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒬𑒱𑒐𑒰 𑒣𑒰𑒞𑒩 𑒑𑒹।

𑒯𑒧 𑒢𑒣𑒪𑒲 𑒮𑒱𑒢𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒑𑒹।

𑒞𑒳𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒣𑓂𑒨 𑒮𑒱𑒣𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰𑒢 𑒩𑒹।

𑒯𑒧 𑒣𑒹𑒢𑓂𑒯𑒫 𑒣𑒰𑒑 𑒩𑒹।

𑒞𑒴 𑒥𑓀𑒡𑒋 𑒧𑒳𑒩𑒹𑒚𑒰 𑒩𑒹।

𑒯𑒧 𑒞𑒼𑒯𑒩 𑒣𑒳𑒩𑒯𑒱𑒞 𑒩𑒹।

𑒞𑒴 𑒯𑒧𑒩 𑒨𑒖𑒧𑒰𑒢 𑒩𑒹।

𑒯𑒧 𑒞𑒼𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒥𑒾 𑒩𑒹।

𑒫𑒼𑒯𑒹 𑒞𑒴𑒯𑒲 𑒏𑒩𑒯𑒱 𑒩𑒹।

𑒩𑒰𑒧𑒰 𑒯𑒧 𑒅𑒠𑒰𑒩𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒩𑒹।

𑓒.𑒢𑒠𑒲

𑒢𑒠𑒲 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒢 𑒥𑒯𑒻𑒞,

𑒕𑒪 𑒕𑒪 𑒥𑒯𑒻𑒞।

𑒣𑒰𑒢𑒲 𑒖𑒹𑒏𑒰 𑒠𑒴𑒡 𑒥𑒯𑒻𑒞।

𑒡𑒩𑒞𑒲 𑒏𑒹 𑒣𑒩𑓂𑒫𑒞 𑒖𑒹𑒏𑒰,

𑒯𑒖𑒰𑒩𑒢 𑒮𑓂𑒞𑒢 𑒮𑒹।

𑒣𑒰𑒢𑒲 𑒖𑒹𑒏𑒰 𑒠𑒴𑒡 𑒣𑒫𑒱𑒞𑓂𑒩।

𑒯𑒖𑒰𑒩𑒢 𑒣𑒰𑒠𑒣-𑒁𑒣𑒰𑒠𑒣।

હળાનલ ળીવ઼ -ળંતુ,

પુત્ર પુત્રી ળેકા,

માય઼ યનતી કે।

પનપૂિત્રમ કગૈત।

યન્ય઼ યાન્ય઼ સં।

શસ્ય઼ સ્ય઼ામળા વનવૈત।

નદી નીન સં,

માય઼ યનતી કે।

પાની ળેકા દૂય વહૈત।

દૂયમતી વહૈત।

વાગમતી,શ્રયવાના, ળપ્પનદેઈ,

કોશી, કમળા, ળમુના,

માય઼ યનતી કે।

હળાનલ નદી વહૈત।

𑒑𑓀𑒑𑒰, 𑒨𑒧𑒳𑒢𑒰 𑒮𑒢।

𑒢𑒲𑒪 𑒮𑒢 𑒠𑒴𑒡 𑒥𑒯𑒻𑒞।

𑒯𑒱𑒧𑒰𑒪𑒨 𑒮𑓂𑒩𑒼𑒞 𑒮𑓀,

𑒑𑒰𑒧𑒰 𑒔𑒩𑒞𑒲 𑒏𑒹।

𑒛𑓃𑒛𑒼𑒧𑒢𑒱

𑒑𑒯𑒢 𑒏𑒹 𑒮𑒐𑒱।

𑒑𑒹𑒙 𑒣𑒩 𑒮𑒹 𑒂𑒫𑓃𑒰𑒖 𑒂𑒨𑓃𑒪।

𑒏𑒹 𑒕𑒲।

𑒯𑒧 𑒛𑒼𑒧𑒢𑒱।

𑒐𑒴𑒥 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒨𑒳𑒫𑓃𑒞𑒲।

𑒅𑒧𑒩 𑒩𑒯𑒹 𑒣𑒔𑓂𑒔𑒲𑒮।

𑒏𑒰𑒢 𑒢𑒰𑒏 𑒮𑒼𑒢 𑒮𑒹 𑒁𑒪𑓀𑒏𑒵𑒞।

𑒣𑒻𑒩 𑒧𑒹 𑒔𑒰𑒢𑒲 𑒏𑒹 𑒣𑒰𑒨𑓃𑒪।

𑒏 𑒠𑒹𑒪𑒏 𑒠𑒱𑒪 𑒏𑒹 𑒒𑒰𑒨𑓃𑒪।

𑒥𑓃𑒼𑒏𑒩 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒞𑒰 𑒢।

𑒖𑒾 𑒯𑒧 𑒏𑒯𑒪𑒲।

કાહે મંગૈત છી મીપ્પા।

ઙ કહઇક હ્મ છી ડોમ।

ગાહ્ન કે સધિા હ્મર શ્રયકિાર।

હ્મ કહઇ।

કૈઇ વનૈય છી નીય।

ઙ કહઇક।

મગાવાને વનૈઉ હ્ય નીય।

હ્મ સોયે ઉગાઇ।

શાસ્ત્ર વનૈઉ હ્ય નીય।

હ્મ કહઇ।

વહિર મેં વનઉય હ્ય।

એગો દનોગા ડોમ।

શ્રાવનિ માંગૂ સધિા મીપ્પા।

ન ઉઁટાયવ પ્યાઇ હ્ાથ।

હ્મ દે દેઇ સધિા મીપ્પા।

હ્મના દ્વારા સે ળાકે।

નામા માંગે ઉગાઉ।

𑒛𑒼𑒧𑒢𑒱 𑒮𑒔𑒱𑒰 𑒧𑒲𑒣𑓂𑒣𑒰।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨𑒹 𑒠𑒱𑒞𑒲𑒢𑒰𑒱𑒮𑒢𑒰𑒛𑒛𑒫𑒠𑒱𑒯𑒰𑓐𑒑𑒧𑒰𑒱𑒨𑒼𑒧 **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

